इस विशेष आवरण को संत शिरोमणि दिगम्बराचार्य श्री विद्यासागर जी मुनि महाराज के 50वां संयम स्वर्ण महोत्सव के उपलक्ष्य में श्री दिगम्बर जैन संरक्षिणी सभा जबलपुर के माध्यम से दिनांक 17 जुलाई 2018 को मध्यप्रदेश डाक परिमण्डल भारतीय डाक विभाग के परिमण्डल शाखा द्वारा 5/- रूपये में जारी किया गया।

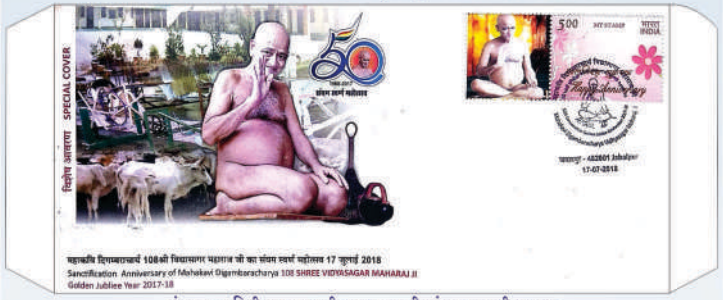

संकलन - मुनिश्री अभयसागरजी, प्रभातसागरजी एवं पूज्यसागरजी महाराज

इस तरह की और भी जानकारी इस लिंक पर देख व पढ़ सकते हैं - knowledge.sanskarsagar.org

दि.	वार	तिथि	नक्षत्र
		मार्च 2021	
16	मंगलवार	तृतीया	अश्विनी दि/रा
17	बुधवार	चतुर्थी	अश्विनी
18	गुरुवार	पंचमी	भरणी
19	शुक्रवार	षष्ठी	कृत्तिका
20	शनिवार	सप्तमी	रोहिणी
21	रविवार	अष्टमी	मृगशिरा
22	सोमवार	अष्टमी	आर्द्रा
23	मंगलवार	नवमी	पुनर्वसु
24	बुधवार	दशमी	पुष्य
25	गुरुवार	एकादशी/द्वादशी	आश्लेषा
26	शुक्रवार	त्रयोदशी	मघा
27	शनिवार	चतुर्दशी	पूर्वाफाल्गुनी
28	रविवार	पूर्णिमा	उत्तराफाल्गुनी
29	सोमवार	प्रतिपदा	हस्त
30	मंगलवार	द्वितीया	चित्रा
31	बुधवार	तृतीया	स्वाती
		अप्रैल 2021	
1	गुरुवार	चतुर्थी/पंचमी	विशाखा
2	शुक्रवार	षष्ठी	ज्येष्ठा
3	शनिवार	सप्तमी	मूल
4	रविवार	अष्टमी	पूर्वाषाढ
5	सोमवार	नवमी	उत्तराषाढ
6	मंगलवार	दशमी	श्रवण
7	बुधवार	एकादशी	धनिष्ठा
8	गुरुवार	द्वादशी	शतभिषा
9	शुक्रवार	त्रयोदशी	पूर्वाभाद्रपद
10	शनिवार	चतुर्दशी	पूर्वाभाद्रपद
11	रविवार	अमावस	उत्तराभाद्रपद
12	सोमवार	अमावस	रेवती
13	मंगलवार	प्रतिपदा	अश्विनी
14	बुधवार	द्वितीया	भरणी
15	गुरुवार	तृतीया	कृतिका

तीर्थंकर कल्याणक

16 मार्च : भगवान अरनाथ गर्भ कल्याणक
18 मार्च : भगवान मल्लिनाथ मोक्ष कल्याणक
21 मार्च : भगवान संभवनाथ गर्भ कल्याणक
01 अप्रैल : भगवान पार्श्वनाथ ज्ञान कल्याणक
01 अप्रैल : भगवान चन्द्रप्रभ गर्भ कल्याणक
01 अप्रैल : भगवान पार्श्वनाथ ज्ञान कल्याणक
04 अप्रैल : भगवान शीतलनाथ गर्भ कल्याणक
05 अप्रैल : भगवान आदिनाथ जन्म तप कल्याणक
11 अप्रैल : भगवान अनन्तनाथ ज्ञान मोक्ष कल्याणक
11 अप्रैल : भगवान अरनाथ मोक्ष कल्याणक
13 अप्रैल : भगवान मल्लिनाथ गर्भ कल्याणक
15 अप्रैल : भगवान कुन्थुनाथ ज्ञान कल्याणक

माह के प्रमुख व्रत

20 मार्च : रोहिणी व्रत
21 मार्च : अष्टान्हिका व्रत प्रारंभ
28 मार्च : अष्टान्हिका व्रत पूर्ण
29 मार्च : षोडशकारण व्रत प्रारंभ
05 अप्रैल : तीर्थंकर दिवस
13 अप्रैल : लब्धि विधान व्रत प्रारंभ

सर्वार्थ सिद्धि

16 मार्च : 06/38 बजे से 30/37 बजे तक।
20 मार्च : 06/34 बजे से 16/46 बजे तक।
28 मार्च : 06/27 बजे से 30/36 बजे तक।
16 मार्च : 06/38 बजे से 30/37 बजे तक।
01 अप्रैल : 07/22 बजे से 29/19 बजे तक।
04 अप्रैल : 26/06 बजे से 30/19 बजे तक।
05 अप्रैल : 26/05 बजे से 30/18 बजे तक।
11 अप्रैल : 06/14 बजे से 08/58 बजे तक।
13 अप्रैल : 06/12 बजे से 14/20 बजे तक।
14 अप्रैल : 17/23 बजे से 30/10 बजे तक।

शुभ मुहूर्त

दुकान प्रारंभ: मार्च-24,29
मशीनरी प्रारंभ : मार्च-24,29 अप्रैल-2,7
वाहन खरीदने: मार्च-24,29,31 अप्रैल-7,8

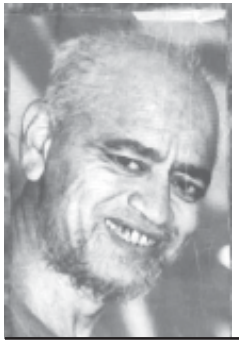

संस्कार सागर

• वर्ष : 25 • अंक : 257 • फरवरी 2021
• वीर नि.संवत 2547 • विक्रम सं. 2077 • शक सं. 1942

लेख

- मुमुक्षु कौन 09
- बीसवीं प्राकृत साहित्य में वर्णित श्रमण का स्वरूप एवं श्रमण-सूचक पारिभाषिक शब्द 12
- जैन साहित्य का शिरोमणि पुराणः महापुराण 16
- कोरोना वर्ष 2020 में दिगम्बर समाज ने क्या खोया, क्या पाया, क्या सीखा 19
- वैभारगिरि की ऐतिहासिक मुनि सुव्रतनाथ जिन-प्रतिमा 23
- प्रो. सागरमल जैन का जैन साहित्य के विकास में योगदान 39
- वरिष्ठ नागरिक : गर्व का अनुभव करें 42
- प्रवचनः करना है कम समय में बड़ा काम 44
- महात्मा के महात्मा राष्ट्रपिता महात्मा गांधी पर श्री मद् राजचन्द्र का प्रभाव 50
- ड्रग्स एण्ड कॉस्मेटिक रूल्स 1945 में संशोधन प्रक्रिया केन्द्र सरकार की उदासीनता से धीमी 52
- प्रागैतिहासिक पुरातात्त्विक विरासत का क्षेत्र नवागढ़ 54
- जैन विद्या संस्कृति प्रश्न मंच 56
- खरटि कहीं जीवन को खतरे में न डाल देवें 57

बाल कहानी

- मैं दुर्गा हूँ 59

कविता

- बेहद क्रूरता 24
- श्वाँसों की नगर 25
- सब स्वार्थ के है साथी 29
- एक छल 36
- शीत का कहर 38
- आत्मगीत 43
- हम गीत गाते है 49
- भावलिंगी इस युग में 53

कहानी

- प्रायश्चित 45

नियमित स्तंभ

पाती पाठकों की : 5 • भक्ति तरंग : 6 • संस्कार प्रवाह : 7 • संयम स्वास्थ्य योग : 11
चलो देखें यात्रा : 22 • आगम दर्शन :25 • पुराण प्रेरणा : 27 • माथा पच्ची : 27 • कैरियर गाइड : 28
दुनिया भर की बातें : 30 •दिशा बोध : 34 • इसे भी जानिये: 35 • आओ सीखें : जैन न्याय : 37
वरिष्ठ नागरिक : 42 • हमारे गौरव : 49 • हास्य तरंग-शरीर विकास के कुछ खेल : 58
• बाल संस्कार डेस्क : 59 • संस्कार गीत व बाल कविता : 60 • समाचार : 61

प्रतियोगिताएं : अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा :65 : वर्ग पहेली : 66

प्रेरणा – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य
ऐलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

प्रधान संपादक
ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर–89895 05108

प्रबंध संपादक
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़–94251 41697

कार्यकारी संपादक
ब्र. सुदेश जैन कोठिया इन्दौर–9826548159

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर–95425053111
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस–9575634441
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली–9818855130

महिला संपादक
डॉ. ज्योति जैन, खतौली–94128 89449
ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर–8989845294

अतिथि सम्पादक
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर–97938 21108
अभिनंदन सांधेलीय, पाटन–9425863244
डॉ. पंकज जैन, भोपाल–9584201103
विनीत जैन प्राचार्य, साढूमल–9721419696
अक्षय अलया, ललितपुर – 9453031432

संयोजना
इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर–9827282170

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ, इन्दौर (म.प्र.)

✲ आंतरिक सज्जा ✲
आशीष कुशवाह, इन्दौर 9179169060

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का
बाकी सदस्यता शुल्क
जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते की स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर सहयोग करें । बकाया राशि में त्रुटि हो तो सुधार हेतु हमें सूचित करें।

सदस्यता शुल्क

-आजीवन	: 2100/-	(15 वर्ष)
-संरक्षक	: 5001/-	(सदैव)
-परम सम्मानीय	: 11000/-	(सदैव)
-परम संरक्षक	: 15001/-	(सदैव)

अपने शहर के
• स्टेट बैंक ऑफ इंडिया –संस्कार सागर
खाता क्र. 63000704338 (IFSC : SBIN0030463)
• भारतीय स्टेट बैंक –ब्र. जिनेश मलैया
खाता क्र. 30682289751 (IFSC : SBIN0011763)
•आईसीआईसीआय बैंक
श्री दिगम्बर जैन युवक संघ
खाता क्र. 004105013575 (IFSC : ICIC0000041)

में भी अपने पूर्ण पते सहित राशि जमा कर हमारे कार्यालय को सूचित कर सकतेहैं।

कार्यालय –संस्कार सागर
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर,
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर –10
फोन नं. : 0731–2571851, 4003506
मो. : 89895–05108, 6232967108
website :www.sanskarsagar.org
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

◆ लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
◆ संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए।
◆ कथा–साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होतेहैं। किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है।
◆ पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा।

•श्री दिगम्बर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर–10 से प्रकाशित एवं मोदी प्रिंटर्स (76, बी–1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित।

पाती पाठकों की....

• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर का फरवरी अंक पूरा का पूरा मन को भा गया इस अंक में सब कुछ नजर आ रहा है। ज्ञानबर्द्धक लेख गुनगुनाती कविताओं ने मेरे दिल दिमाग पर ऐसी छाप छोड़ी है कि मैं कई वर्षों तक भुला नहीं सकता हूँ भारिल्ल की भद्रता या छल सम्पादकीय लेख के बारे में इतना ही कहूँगा कि ढके हुये सच से पर्दा उठाने का बहुत जरूरी कार्य किया है यह कार्य कोई और नहीं कर सकता था जो संस्कार सागर ने किया है यह समय की मांग थी जिसकी पूति करना आवश्यक था समय के अनुसार रूख बदलने वाले विद्वान बहुत भद्र जान पड़ते हैं लेकिन उनकी सभ्यता और मधुर वाणी के पीछे एक गुप्त कार्यक्रम होता है जिसको आम जनता नहीं समझ पाती है उस तथ्य को समझाने वाले संस्कार सागर के सम्पादक ही हो सकते हैं । अतः आप साधुवाद के पात्र हैं ।

श्रीमती आरती जैन, भोपाल

• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर के फरवरी अंक में एक अद्भुत लेख पढ़ा जिसका शीर्षक था मुमुक्षु कौन विद्वान लेखक ने शोध पूर्ण तर्क शैली से इस बात का अच्छी तरह से खुलासा कर दिया कि मुमुक्षु शब्द को मोक्ष की इच्छा रखने तक सीमित करना एक भूल भरा सोच है मोक्ष इच्छा करने मात्र से मोक्ष नहीं मिलता है किन्तु मोक्ष की साधना करने से ही मोक्ष की प्राप्ति होती है प्यास बुझाने की बात कहने मात्र से प्यास नहीं बुझती किन्तु जलपान करने से प्यास बुझती है। विडम्बना यही हो गई है कि लोगों ने इच्छा करने से मात्र को ही समस्या का समाधान माना है और वे सम्यग्दृष्टि बनकर के चारित्र के अभाव में ही मोक्ष पाने की इच्छा करते हैं

चारित्रम् खलु धम्मो को स्वीकार करने वाला ही मुमुक्षु हो सकता है यहीं एक अकाट्य सत्य है।

श्रीमती रजनी जैन, इन्दौर

• सम्पादक महोदय, विगत दिनों मुरैना जिले के एक गांव में जहरीली शराब पी लेने से 30 से अधिक व्यक्तियों की मौत हुई। इससे पहले उज्जैन जिले में 20 से अधिक लोगों की मौत हुई थी। आये दिन जहरीली शराब पी लेने से मौतें होती रहती हैं इसका कारण शराब पीना तो है ही पर सरकार का आबकारी विभाग एवं पुलिस अमला हाथ पर हाथ धरे क्यों बैठा रहता है? कानूनन शराब पीने से न तो पुलिस रोक सकती है न आबकारी विभाग जिस गांव में 30 से अधिक लोग जहरीली शराब पीने से मरे उस गांव में गांव की पंचायत ने शराब बंदी घोषित कर रखी थी फिर भी दुर्घटना शराब से हुई।

सामाजिक जागृति के बिना और संतो के आह्वान के बिना शराब बन्दी होना संभव नहीं है। शराब पीना लोग बन्द तब ही करेगें जब उनके दिल और दिमाग को बदला जायें नशा नाश का द्वार है यह जीवन्त सत्य है।

श्री राजकुमार जैन, इन्दौर

• सम्पादक महोदय, भारत में कोरोना वायरस टीका आ चुका है और टीका का लगना उच्च स्तर पर चल चुका है प्रारंभ में सफलता ही आशंका बनी रही परन्तु यह एक बहुत बड़ा सच है कि मास्क और सोशल डिस्टेसिंग के बिना कोरोना का संक्रमण रोक पाना किसी प्रकार से संभव नहीं हो पायेगा। संयम ही सबसे बड़ी वैक्सीन है। खानपान का संयम ही किसी भी बीमारी को जीतने में सफल होता है एक साल के कोरोना तांडव के बाद सुरक्षित वे रहे जिन्हों ने संयम और सावधानी को अपनाया। सावधानी हटी की दुर्घटना घटी। अतः हम यह कर कह सकते हैं कि जैन जीवन पद्धति सावधानी से भरपूर है इसलिये जैन जीवन पद्धति रोग मुक्ति का अमोघ उपाय है।

श्री विपुल जैन, मुम्बई

भक्ति तरंग
केवलज्ञानी राग-दीपचन्दी

मेरी अरज कहानी,
सुनि केवलज्ञानी।
चेतन के संग जड़ पुद्गल मिलि,
सारी बुधि बौरानी ।। मेरी.।।
भव वनमाहीं फेरत मोकौं,
लब चौरासी थानी।
कोलौं तरनौं तुम सब जानो,
जनम मरन दुबबानी ।। मेरी.।।1।।
भाग भले तैं पाये बुधजन,
तुम जिनवर सुखदानी।
मोह फांसिको काटि प्रभूजी,
कीजे केवलज्ञानी ।। मेरी.।।

हे केवलज्ञानी, हे सर्वज्ञ ! मेरी अर्ज सुनिये, मेरी अपनी कथा कि मेरे साथ क्या-क्या हुआ, मुझ पर क्या-क्या बीती, जरा वह सुनिये। यह मेरा चेतन जड़ पुद्गल के साथ मिलकर निभावों में भटक गया और अपने शुद्ध स्वरूप को भूल गया। मेरी मति भ्रम में पड़ गई-भटक गई।

जड़ कर्म ने मुझे इस संसार महावन में 84 लाख योनियों में खूब घुमाया है , फिराया है। मैं कब तक भटकूंगा आप तो सब जानते हैं कि ये जड़ कर्म ही जनम-मरण के दुख देने वाले हैं , इन ही के कारण जन्म-मरण का चक्र चल रहा है, जो दुःख का जनक है।

बुधजन कहते हैं कि बड़े भाग्य से आप मिले हैं, आपसे भेंट हुई है, मेरी आपसे पहचान हुई है । हे प्रभु ! मेरी मोह की फांसी की काट दीजिये । मोह के कारण ही मैं केवलज्ञान से वंचित हो रहा हूँ । मोह से मुक्त कर मुझे केवलज्ञानी बना दीजिए।

संस्कार प्रवाह

ललकार किसको

वर्तमान समय में जैन धर्म अनुयायियों की संख्या बहुत कम हो रही है हर दस वर्ष में होने वाली जनगणना में जैन एक करोड़ का दावा करते हैं परन्तु जैन धर्म मानने वालों की संख्या अभी तक एक करोड़ नहीं हो पाई है जाति पंथ की बीमारी ने उपनाम लिखने के आकर्षण ने इस संख्या को कभी एक करोड़ तक नहीं पहुंचने दिया है विडम्बना यह है कि 2022 में होने वाले जनगणना में यदि जैनों की संख्या एक करोड़ नहीं पहुँची तो जैसे पारसी धर्म का कालम हट गया है इसी तरह से जैनधर्म का कालम भी हट सकता है। तब फिर जैनों की गणना अन्य धर्म में की जायेगी या फिर हिन्दू धर्म में समावेषित कर दिया जायेगा।

जहां जैन अपने आप में एक करोड़ पूरा नहीं गिन पा रहे हैं वहीं पर पंथ और जाति का भस्मासुर जैनों को बांटने में लगा हुआ है अपने-अपने पंथो की संख्या बढ़ाने के लिये बहुत बड़ी प्रतिस्पर्धा चल रही है एक पंथ दूसरे पंथ वालों को नीचा दिखाने में अपनी जीत समझ रहें हैं। उपासना पद्धतियों के इन झगड़ों में जैन इस तरीके से उलझ गये हैं कि वे अपने पंथ के सिवाय दूसरे पंथ के लोगों को जैन मानने के लिये ही तैयार नहीं होते हैं तीर्थों पर अधिकार करने की होड़ में एक दूसरे को ललकारते रहते हैं एक पंथ दूसरे पंथ के अस्तित्व को समाप्त करने के लिये अपनी शक्ति लगा देते हैं वे भूल जाते हैं कि धर्म मंदिरों की दीवारों में नहीं होता है, तीर्थो के पहाड़ों पर नहीं होता है, धर्म तो धर्मात्मा में ही होता है अतः आचार्य समन्तभद्र स्वामी ने कहा है **न धर्मो धार्मिके बिना** जब तक हम एक धर्मात्मा बनकर के अपने को असली धर्मात्मा और दूसरे को नकली धर्मात्मा सिद्ध करने के लिये ताकत लगाते रहेंगे तब तक जैन धर्म मानने वालों की संख्या घटती ही रहेगी या कभी भी एक करोड़ नहीं हो पायेगी।

आये दिन धर्म स्थलों पर संघवाद को लेकर एक दूसरे को ललकारते रहते हैं कभी जयकारे को विषय बना लिया जाता है तो कभी अपने कथाकथित सिद्धान्त की अभिरक्षा में एक दूसरे को ललकारते रहते हैं साधर्मी से प्रेम करना जैन दर्शन की सबसे बड़ी विशेषता है क्योंकि जैन दर्शन ने जो मोक्षमार्ग बताया है उसमें सम्यग्दर्शन को मोक्ष महल की प्रथम सीढ़ी कहा है और सम्यग्दर्शन की पूर्ति बिना वात्सल्य अंग के नहीं होती है। साधर्मी से निच्छल प्रेम करना ही वात्सल्य अंग की सही स्थिति है जिस तरह से एक अक्षर से कम मंत्र विष की वेदना को दूर नहीं कर पाता है इसी तरह से वात्सल्य के बिना सम्यग्दर्शन कार्यकारी नहीं होता है फिर भी लोग छल पूर्वक संकीर्ण वात्सल्य की दिशा में ही बढ़तें चले जाते हैं छल पूर्वक किया हुआ वात्सल्य या प्रेम पंथ और जाति के संकीर्ण सोच से बाहर नहीं निकल पाता हैं। छोटे सोच वाला और पैर में मोच वाला कभी आगे नहीं बढ़ पाता है। इसी तरीके से छोटे सोच वाले धर्म

और समाज को भी आगे नहीं बढ़ने देते हैं वे अपना समय और शक्ति सिर्फ दूसरों को ललकारने में ही लगाये रखते हैं पर साधर्मी को ललकारना और लड़ने के लिये उकसाना कोई बड़ी बात नहीं है। बड़ी बात तो यह है कि विवादों का अंत करने के लिये स्वयं झुकना। दूसरे को झुकाना में मजा नहीं लेना, परन्तु समाज को लड़ने व लड़वाने की प्रवृति बन्द कब होगी समाज के ठेकेदार छोटी-छोटी बातों को छोड़कर बड़े लक्ष्य कब बनायेगें एक दूसरे पर एफ. आई. आर. करना अदालत बाजी करना और फिर बाद में घड़ियाली आंसू बहाना यह सब कब तक चलता रहेगा। ललकारना है तो सामाजिक बुराईयों को ललकारना चाहिये समाज में बिखराव फैलाने वालों को ललकारना चाहिये पंथवाद के खिलाड़ियों को ललकाना चाहिये तथा जातिवाद के आधार पर नफरत फैलाने वाले छुटभैया नेताओं को ललकारना चाहिये और ऐस नेता को खड़ा करना चाहिये जो किसी भी तरह से नफरत फैलाने वालों को ललकारते हुये हर जैन को समाज की मुख्य धारा को जोड़े।

कविता

ईशुरवारा आऊँगा

✲ ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर ✲

शान्तिनाथ की मूरत सुन्दर ईशुरवार की, वन्ध मिटाने वन्दन करने मैं तो आऊँगा
सुख शान्ति प्रदाता शांतिदाता तेरे चरणों में आऊँगा
ईशुरवार तीर्थ हमारा सुख शान्ति की शान तेरे चरणों में आऊँगा
प्रकृति की मनहर छाया में शांति की माला में
गूंजे जय जय कार देख में आऊँगा ईशुरवार आऊँगा तेरे चरणों में आऊँगा
धन सम्पत्ति कुछ ना चाहू- चाहू शिवकारा चाहू शिवकारा
शांतिनाथ के चरण शरण होगा उदार ईशुरवार आऊँगा तेरे चरणों में आऊँगा
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरण का मिले रत्न अनमोल
विद्या गुरु वाणी सुनकर जीवन बने अनमोल ईशुरवार आऊँगा तेरे चरणों में आऊँगा
मुनि सुधासागर की भूमि सागर में अनमोल सागर के अनमोल
इस तीर्थ के वन्दन कर लो - शान्तिनाथ अनमोल ईशुरवार आऊँगा तेरे चरणों में आऊँगा

श्रमण पथ का उजास एक अनूठे संत : मुनि क्षमासागर

✲ शोधार्थीः सुजश जैन मारौरा, दिल्ली ✲

भारतीय संत परंपरा में श्रमण परंपरा का विशिष्ट रूप भारत-भूमि पर देखा जाता है। इनमें तीर्थंकर महावीर की गौरवशाली आचार्य परंपरा, साहित्य समाज और राष्ट्र को प्रभावित करती रही है। शांति के दूत श्रमणों की श्रृंखला में जैनाचार्य श्री विद्यासागर अध्यात्म सरोवर के राजहंस स्वीकृत किये गये हैं । उनके ही शिष्य मुनि श्री क्षमासागर जी एक उच्च शिक्षा से युक्त आध्यात्मिक चेतना के प्रकाश पुंज एवं अपनी विशिष्ट साहित्यिक शैली के विद्वान ऋषि हुये हैं । उन्होंने गुरु-प्रसाद, स्वाध्याय-अभ्यास एवं साहित्य की अनुरक्ति के कारण कई साहित्य विधाओं में साहित्य सृजन करते हुये सम्पूर्ण समाज के नव युवकों को एक चेतना प्रदान की हैं।

पूज्य मुनि श्री का व्यक्तित्वः सहज-सरल-परोकारी व्यक्तित्व - मुनि श्री सरलता की प्रतिमूर्ति थे, छोटे-छोटे बच्चे भी उन तक बड़ी सहजता से अपनी बात कह लेते थे। सभी लोग उनसे अपनी डायरी में शुभाशीष लिखवाने के लिये लालायित रहते थे, जिसको उनका लिखा मिल जाता था उसे तो वह सब कुछ मिल जाता था। जो उसने चाहा था, जिसे नहीं भी मिल पाया हो वह भी कभी दुःखी नहीं होता अपितु मुनि श्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुये अपने आपको धन्य मानता था। मुनि श्री दर्शनार्थ आये व्यक्ति से उनका यह पूछना कि कब आये उनके अपनत्व भाव को और भी बड़ा कर देता था, उनके समीप रहने वाला हर छोटे से छाटा व्यक्ति अपने आप को बड़ा और बड़ा व्यक्ति छोटा मानता था। आपका वात्सल्य भाव अनूठा था जो सबको जोड़ता था, उनकी जैसी सरलता सहजता कहीं और नहीं मिलती ।

अनुशासनः किसी भी संत की चर्या/ आचरण उसको बड़ा बनाती है, मुनि एक श्रेष्ठ चर्या/आचरण के धारी थे, उनका अनुशासन बेमिसाल था, वे स्वयं आत्मानुशासित थे, तथा अनुशासित लोग ही उन्हें पसंद थे, वो सदैव कहा करते थे कि अगर आप स्वयं अनुशासित होकर जीयेंगे तो सदैव अपने आपको दूसरे की नजरों में बड़ा/सम्मानित पायेंगे। अनुशासन का सबसे बड़ा उदाहरण उनकी आहार चर्या के दौरान देखने को मिलता था जब पूज्य मुनि श्री को आहार देने वाले शताधिक लोग हुआ करते थे, पर सभी लोग बिलकुल अनुशासित/संयमित तरीके से आहार दान दिया करते थे, इसमें जिसको आहार देने को मिला वो भी खुश हुआ और जिसको नहीं मिला तो भी केवल देखने भर से तृप्त हो जाया करता था।

युवाओं के प्रेरणास्रोतः पूज्य मुनि श्री का व्यक्तित्व सागर की तरह इतना विशाल है कि जहां तक हमारी नजर जाती है हमें उनका ज्ञान रूपी जल ही दिखाई देता है। उनके संस्मरण, काव्य, अनुवादित ग्रन्थ एवं प्रवचन-संग्रह मानवता के लिये दिग्दर्शिता का काम करते हैं । शांति, सद्भावना एवं मैत्री की उत्कृष्ट भावना से सृजित साहित्य अटके-भटके जनों के लिये मार्ग प्रशस्त करने में सक्षम हैं। नवयुवकों को धर्म मार्ग से जोड़ना ओर धर्म-मार्ग से जुड़े हुये

लोगों को धर्म से विमुख ना होने देना उन्हें बखूबी आता था, उनके पास बैठने मात्र से, उनके प्रेरक उपदेश व काव्य रचनाओं से युवाओं में एक नई चेतना का संचार हुआ है, तथा जो युवावर्ग धर्म-मार्ग से विमुख हो रहा है उसका धर्म के प्रति जुड़ाव बढ़ा है।

उनका यह बताना की कि हमें अपने जीवन में धर्म को आटे में नमक बराबर पालन करना चाहिये, उन्हें अन्य संतों से अलग करता हैं। जो युवा धर्म की जटिलताओं के कारण जुड़ने का साहस भी नहीं कर पाता था, वह भी बड़े आराम से धर्म से जुड़ता चला जाता है तथा आगे अपने जीवन को धर्ममय बनाने का प्रयास करता है। उन्होंने कभी भी धर्म को थोपना नहीं बताया बल्कि स्वमेय ही अपनाना बताया। इसीलिये उनसे जुड़ा हुआ युवा उन्हें सदैव अपना मानता है और उनके जाने के बाद भी हमेशा अपने साथ रहने की अनुभूति महसूस करता रहा है।

युवाओं को धर्म से जोड़ने के लिये मुनिश्री ने **प्रतिभा सम्मान समारोह YJA** शुरु किया, इस कार्यक्रम का उद्देश्य धर्म से विमुख होता हुआ, केवल और केवल अपनी लौकिक पढ़ाई में व्यस्त युवा को ना केवल धर्म से जोड़ना बल्कि देश/समाज के लिये भी कुछ करने के लिये प्रेरित करना था।

उनके दिये गये मार्गदर्शन में चलकर कई साथी मिलकर इस कार्यक्रम को प्रतिवर्ष निरंतर करते आ रहे हैं तथा पूज्य मुनि श्री के सिद्धांतों और आदर्शों को जन जन तक पहुँचा रहे हैं। आज **YJA** संपूर्ण जैन समाज में सर्वाधिक प्रतिष्ठित और अनुशासित कार्यक्रम बन चुका है।

गुरुसमर्पण: गुरुब्रह्म, गुरुविष्णुः, गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।

इस युक्ति को सार्थक करते हुये मुनि श्री का अपने गुरु के प्रति अनूठा समर्पण उनके व्यक्तित्व में सदैव ध्रुव तारे की तरह चमकता रहता है, हमेशा अपने गुरु के प्रति पूरे मनोयोग से समर्पित रहना, उनके द्वारा दी गई शिक्षाओं, उनके आदेशों को अक्षरशः पालन करने की भावना हम सांसारिक लोगों को आपसे ही सीखने को मिली है। सदैव अपने गुरु का ऋणी रहना तथा यह मानना की आज जो कुछ भी हम हैं यह सब गुरु के द्वारा ही दिया गया है, मेरा अपना कुछ भी नहीं है आपके गुरुसमर्पण के साथ साथ जैन धर्म के मूल सिद्धांतों को भी परिभाषित करता है। उनका अपने गुरु के प्रति समर्पण अद्भुत था, श्रद्धा और भक्ति का गुण उनके समीप रहने वालों ने सदा ही अनुभव किया।

गुरुभत्ति विणा तव-गुण-चारित्तं णिप्फलं जाणं।

अर्थात् गुरुभक्ति के बिना तप-गुण-चारित्र आदि सभी निष्फल जानो।

उनमें उस आदर्श शिक्षक के भी समस्त गुण थे, जो अपने शिष्यों को केवल पुस्तकीय ज्ञान ही नहीं देता वरन उसे संसार में एक आदर्श जीवन की कला के साथ-बेहतर जीवन बनाने में अपने योगदान की कला भी सिखाता है।

प्रबंधन शैली: किसी भी कार्य को सफलता पूर्वक संपादित करने के लिये सदैव एक अच्छे प्रबंधक या प्रबंधकीय कौशल की आवश्यकता होती है, पूज्य मुनि श्री का गजब का प्रबंधकीय कौशल था, उनकी प्रबंध शैली कई लोगों के लिये प्रेरणा का कार्य करती थी, हमने देखा है कि कई बड़े से बड़े आयोजनों को अनेक प्रबंधकीय मार्गदर्शन से सफलता पूर्वक संपन्न किया गया है।

अतिथि सत्कार: इस बात का सदैव ध्यान रखना कि अपने यहाँ पधारने वाले किसी भी अतिथि (चाहे वो एक छोटा बच्चा ही क्यों न हो) को बिना किसी कष्ट से आतिथ्य प्रदान करना। सकारात्मक रूप से संपूर्ण ऊर्जा के साथ अपने अतिथि की सेवा में जुट जाना भी धर्मध्यान है आपका ऐसा कहना ही नवयुवकों में अतिथि सत्कार की भावना भरता रहा और प्रेरित करता रहा है।

समय प्रबंधन: किसी भी कार्य को निर्धारित समय से आरंभ कर समय पर सफलता पूर्वक संपन्न करने की कला आपसे ही सिखने को मिली है, आज भी आपसे जुड़े हुये लोग सदैव इस बात का ध्यान रखते हैं और प्रयत्नशील रहते हैं कि कोई भी कार्य या कार्यक्रम समय प्रबंधन के साथ ही संपन्न हो। मुनि श्री हमेशा कहां करते थे कि-हमारे जीवन को अच्छा बनाने के लिये हमें हमेशा समय की कद्र करना चाहिये। समय के साथ अपने कार्य को संपन्न करने पर एक आत्म संतुष्टि की अनुभूति होती है और सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है।

अनुभव और कार्यक्षमता की परख: किसी व्यक्ति के अनुभव और कार्यक्षमता को परखना उन्हें बखूबी आता था, किसी व्यक्ति के अनुभवों / कार्यक्षमता का लाभ लेकर कई बड़े से बड़े आयोजनों को सफलता पूर्वक संपन्न करना उनके मार्गदर्शन से होता रहा है, और वह व्यक्ति अपने आपको सदैव धन्य मानता रहता है।

श्रेष्ठ स्वाध्यायी: पूज्य मुनिश्री एक श्रेष्ठ स्वाध्यायी संत थे, जहां एक ओर उन्होंने जैन दर्शन के सभी बड़े से बड़े धर्म ग्रंथों का ना केवल अध्ययन किया बल्कि उन्हें अपने चिंतन और जीवन में भी उतारा, वहीं दूसरी और उन्होंने लौकिक और सामाजिक साहित्य को भी भरपूर पढ़ा।

मुनिश्री के प्रति लोगों का जुड़ाव इसलिये भी था कि उनके कठिन से कठिन प्रश्नों का हल बड़ी ही सरलता से दे देते थे, उनका वो शंका-समाधान का कार्यक्रम अपने आपमें अद्वितीय था, प्रश्न कोई एक श्रोता का होता था, परन्तु जवाब सभी के लिये होता था, इतने सारगर्भित होते थे कि सभी 100 प्रतिशत संतुष्टी के साथ प्रसन्न होते थे।

इतना ज्ञान एक स्वाध्यायी को ही प्राप्त हो सकता है, वह हमेशा लोगों को स्वाध्याय करने के लिये ना केवल सदा प्रेरित करते रहे वरन उनकी सहायता भी करते रहे।

अनूठे प्रवचनकार: मुनिश्री के प्रवचन साहित्य में विषय वस्तु वैशिष्ट्य, मनोवैज्ञानिकता, नवीन-पुरातन का संगम, आस्था और तर्क का समन्वय, धर्म और विज्ञान, संस्कृति आदि की गहरी मीमांसा की है। मुनिश्री एक अनूठे प्रवचनकार थे, उनकी वाणी में

अद्भुत मिठास और चुम्बकत्व था जो अनायास ही सबको अपनी ओर खींच लेती थी। मुनिश्री के प्रवचन आगमोक्त और पूर्णतः व्यवहारिक होते थे, वह छोटी से छोटी बात को सहजता से तथा बड़े से बड़े क्लिष्ट प्रश्नों को बड़ी ही सरलता से बता दिया करते थे, आम जनमानस भी उनहें सुनता और सुनता ही चला जाता था।

उनका वो प्रवचन से पूर्व णमोकार करना मानो ऐसा लगता था कि जैसे दशों दिशायें बड़े ही शांतचित्त से केवल और केवल आपको ही सुन रहीं हैं। मुनि श्री क्षमासागर जी अपने प्रवचनों में सदैव बाबा वर्णी (पूरज्य क्षु.श्री गणेश प्रसाद जी वर्णी) आचार्य विनोबा भावे, माँ कस्तूरबा गांधी, महात्मा गांधी, श्रीमद् राजचंद्र, कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, जैनेन्द्र कुमार, श्री यशपालजी आदि व्यक्तित्वों का उल्लेख किया करते थे, तथा छोटे छोटे दृष्टांतों के माध्यम से जो आज के भटके हुये लोगों को ना केवल उनके नैतिक मूल्यों से जोड़ा रखता था बल्कि धर्म के साथ देश और समाज के लिये कुछ करने की प्रेरणा प्रदान किया करते थे।

आगम के गूढ़ रहस्यों का सरल समाधान करके आम जन तक पहुँचाना, कर्म सिद्धांत जैसे जटिल विषय पूर्णतः व्यवहारिक माध्यम से इतनी सरलता से मुनि श्री अपने प्रवचनों में समझाते थे कि जो लोग धर्म को बुढ़ापे में करने योग्य मानते थे वह भी धर्म से जुड़ जाते थे। मुनि श्री के प्रवचन सभी वर्गों के लिये समान रूप से प्रेरणादायक होते थे, संघस्थ त्यागी वृंद, विद्वान बच्चे, युवा वर्ग, वृद्ध सभी अपने अपने हिसाब से कुछ ना कुछ ग्रहण कर ही लिया करते थे , और अपने आप को धन्य मानकर आपके बताये धर्म मार्ग पर चलने का प्रयास करते रहते हैं ।

मुनि श्री जितने प्रभावशाली वक्ता थे, उतने ही प्रभावशाली लेखक भी थे। उनके लेखन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने लिखने के लिये कभी कुछ नहीं लिखा। उनका जीवन लोककल्याण के लिये समर्पित था, इसलिये उनका लेखन भी एक ऊंचे ध्येय से प्रेरित रहा है।

मुनिश्री ने हिंदी साहित्य की अनेक विधाओं जैसे काव्य, संस्मरण, उपन्यास, प्रवचन आदि को अपनी लेखनी द्वारा समृद्ध किया है। उनके विपुल साहित्य से निश्चय ही माँ सरस्वती के भंडार की श्रीवृद्धि हुई है।

एक वैज्ञानिक संत: आध्यात्मिकता और वैज्ञानिकता हमेशा मुनि श्री के चिंतन के बिंदु रहे हैं । वह एक आध्यात्मिक जैन संत होते हुये भी वैज्ञानिक सोच रखते थे। वह अपने लौकिक जीवन में भी विज्ञान के छात्र रहे और साधु जीवन में भी विज्ञान को धर्म से जोड़कर रखा। वह धर्म को वैज्ञानिक आधार के साथ मानने के पक्षधर रहे, अनेक विज्ञान-विचार संगोष्ठी उनकी प्रेरणा से आयोजित हुई, इन संगोष्ठी का उद्देश्य सदैव नई पीढ़ी को वैज्ञानिक आधार से धर्म से जोड़ना रहा। जब आज का युवा उनसे पूछता है कि दही/दूध अभक्ष्य है क्या ? हमें उसे खाना चाहिये या नहीं ? तो मुनि श्री बड़े ही तार्किंत ढंग से वैज्ञानिकता पूर्ण आगमानुसार इसका विवेचन करते हैं।

मुनि श्री कहते हैं कि वीतराग विज्ञान तथा आधुनिक विज्ञान की मित्रता से मानव जाति ना केवल जीवन को समृद्ध कर सकेगी, वरन आत्म विकास की उन्नत सीढियाँ पर आरोहण भी करेगी। जैन धर्म एक वैज्ञानिक धर्म है और मुनि श्री इस धर्म के संवाहक रहे हैं , उनका यही चिंतन आज के युवा को आधुनिकता के साथ-साथ धर्म से जोड़े रखने में सहायक रहा है।

शोध प्रवृत्ति: मुनिश्री प्रारंभ से ही शोधी प्रवृत्ति के श्रमण रहे। उनके प्रवचन साहित्य में वर्णित विषय वस्तु की विवेचना उनके गहन अध्ययन और मनन को प्रकट करते हैं । इसलिये अनेक शोधार्थी अपने शोधकार्य में उनसे मार्गदर्शन लियो करते थे।

रूग्ण अवस्था में विशुद्ध चर्या: सुख संज्ञक आरोग्यं निकारा दुःखमेव च।

सुखी जीवन के लिये आरोग्य मूलभूत तत्व है, परंतु आरोग्य प्राप्ति के लिये मार्ग में रोग बाधा होते हैं।

पूज्य मुनि श्री का स्वास्थ्य कभी भी उनकी साधना के अनूकूल नहीं रहा, उनके स्वास्थ्य पर कई बीमारीयों ने अपना अतिक्रमण करना चाहा, परन्तु उनकी साधना/साधुता को कम ना कर सकीं, जैसे-जैसे बीमारी बढ़ती रही उनकी साधना और उत्कृष्ट होती चली गई।

एक दिगम्बर साधु की चर्या निःसंदेह बहुत की कठिन होती है उन्हें अपने शरीर से मोह त्याग कर अपना साधु जीवन जीना होता है, पूज्य मुनिश्री ने इसी साधु जीवन की उत्कृष्टता को प्राप्त करते हुये नया आयाम स्थापित किया, उन्होंने अपने दैनिक आवश्यकों में कोई कमी या कोताही ना बरतते हुये अंत समय तक अपनी निर्दोष दिगम्बर मुनि की चर्या को बनाये रखा। पूज्य मुनि श्री का जीवन हम सभी को यह प्रेरणा देता है कि मुनि श्री अस्वस्थ होते हुय भी अत्यंत शांत भाव से अपना जीवन जिया तथा समाज/धर्म/देश के लिये बहुत दिया, अतः हम भी परेशानियों में शांत भाव रखते हुये धर्म को नहीं छोड़ना चाहिये।

मुनि श्री क्षमासागर का सृजन संसार:

विज्जारहमारूढो मणोरहपहेसु भमदि जो चेदा।
सो जिणणाण पहावी सम्मादिट्ठी मुणेदव्वो ॥

जो जीव विद्या रूपी रथ पर चढ़, मन रूपी रथ के चलने के मार्ग में भ्रमण करता है, वह ज्ञानी पुरुष जिनेश्वर के ज्ञान-सम्यग्ज्ञान की प्रभावना करने वाला होता है। मुनि श्री क्षमासागर जी एक जैन साधक के साथ-साथ कवि हृदय संत भी थे, जहाँ एक और उन्होंने जैन दर्शन की गहराइयों का अत्यंत सूक्ष्म अध्ययन करके अपनी साधना को उत्कृष्ट बनाया वहीं दूसरी ओर अपने साहित्य सृजन के माध्यम से जन साधारण में नई चेतना, ऊर्जा का संचार किया।

मुनि श्री की कवितायें गृहस्थ-नवयुवकों को उत्तम संदेश देती हैं, जहाँ आज संबंध केवल दिखावे भर के रह गये हैं, उनकी कवितायें एक सजीव लेखनी हैं, जो चेतना की आलोचना कर उसे निरंतर सुधार की यात्रा पर को प्रेरित करती हैं विश्वास के पथ पर चलते हुये

सत्य से परिय कराती हैं, अनलिखी, अनकहीं बातें जो कल्पना को सुदूर ले जाती हैं।

वह लिखते हैं- **अभी मुझे और धीमे कदम रखना है, अभी तो चलने की आवाज आती हैं।**

इस कविता में कवि की उत्कृष्ट साधना के साथ परोपकार और आत्मकल्याण की भावना स्पस्टतः परिलक्षित होती है।

मुनि श्री क्षमासागर एक संवेदनशील कवि, महान साधक, साहित्यकार, विचारक थे। मुनि श्री क्षमासागर के द्वारा सृजित साहित्य का स्वतंत्र एवं निष्पक्ष मूल्यांकन करना मुझ जैसे अल्पज्ञ के वश का नहीं है, उनका साहित्य जितना सरल एवं सुबोध है, व्यक्तित्व उतना की अगम्य, अकथ्य, अलौकिक एवं निर्वचनीय है । दार्शनिक, सामाजिक, वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक और तार्किक पक्षों का उत्कृष्ट उदाहरण हैं ।

मुनि श्री जब संस्मरण (आत्मान्वेषी) लिखते हैं तो ऐसा लगता है की आचार्य श्री विद्यासागर जी के बारे में एक चलचित्र हमारे सामने चल रहा हो, उनकी लिखी पुस्तक कौशल्या के राम, यशोदा के कन्हैया, पढ़ते हैं तो पढ़ते ही चले जाते हैं, क्या कोई सोच सकता है कौशल्या के राम या यशोदा के कन्हैया, भी हो सकते हैं । हमने तो सदैव सीता के राम, या राधा के श्याम ही सुना है, मुनि श्री के द्वारा इन पुस्तकों में जो मातृत्व भाव को परिलक्षित किया गया है वह अपने आप में उन्हें अनूठा बनाता है।

मुनि श्री जब आगम के स्वयंभू स्तोत्र, एकीभाव स्तोत्र जैसे कठिन से कठिन स्तोत्रों का सरलतम अनुवाद करते हैं तो आमजन को भी समझना आसान हो जाता है।

मुनि श्री के द्वारा रचित कविताओं में सदैव प्रकृति से अपनापन और परोपकार की भावना दिखायी देती है, और हमेशा सभी को प्रेरणा देती रहती हैं।

उनका सम्पूर्ण जीवन ही प्रेरणा था, वे जब अस्वस्थ हो गये तथा उनकी वाणी अवरूद्ध हो गयी तब भी उनके द्वारा लोगों के जीवन बदलते रहे, ऐसी आदर्श चर्या और जीवन था उनका। उनकी पावन सान्निध्य पाकर हर व्यक्ति एक सकारात्मक ऊर्जा से भर जाता था, धर्म के मार्ग पर चलने का प्रयास करता था। निश्चित रूप से उनका जाना हमारे लिये एक व्यक्तिगत क्षति है, पर मानो ऐसा लगता है कि वे आज भी वो कहीं ना कहीं हमारे बीच ही हैं और हमें मार्गदर्शन देते हुये धर्म से जोड़े हुये हैं । उनके दिखाये हुये रास्ते पर हमें सतत् पर हमें सतत चलते रहना है, वो हमेशा कहते थो कि जीवन में जीतना बने उतना सरल व विनम्र बनना।

हे गुरुवर ! आपने तो समाधिपूर्वक मरण को प्राप्त करते हुये देवत्व को प्राप्त कर लिया हम भी यही भावना भाते हैं कि आपके दी हुई शिक्षाओं / मार्ग पर चलते हुये अपने जीवन को सरल और विनम्र बना सकें।

प्राकृत भाषा प्रेमी आचार्य सुनीलसागर

❊ आशीष कुमार जैन, वाराणसी ❊

प्राकृत साहित्य में जीवन की समस्त भावनायें व्यज्जित हुई हैं। कथा रूप में प्राकृत भाषा का अस्तित्व चाहे जितना प्राचीन हो, पर इस भाषा में साहित्य रचना ई.पू. 600 से उपलब्ध होती है। भगवान् महावीर और बुद्ध ने इस का आश्रय लेकर जनकल्याण का उपदेश दिया था। सम्राट अशोक ने शिलालेखों और स्तम्भलेखों को इसी भाषा में उत्कीर्ण कराया है । हाथीगुंफा शिलालेख प्राकृत भाषा में ही हैं। प्राकृत भाषा का जनता में प्रचार था, जनता इस का उपयोग करती थी। इसका सबसे बड़ा प्रमाण शिलालेख ही है। प्राकृत भाषा का साहित्य के रूप में भी ई.पू. 600 से ई. सन् 1800 तक लेखन होता रहा है। इस लम्बे समय में विभिन्न प्रकार के साहित्य का सृजन हुआ है।

वर्तमान युग (विशेषकार बीसवीं एवं इक्कीसवीं सदी) में भी प्राकृत लेखन की परम्परा जारी है। मध्यकाल में संस्कृत एवं लोक-भाषाओं का इतना अधिक प्रभाव बढ़ लाने पर भी प्राकृत साहित्य के निर्माण की परम्परा निरन्तर चलती रही है, किसी भी शताब्दी का कोई चरण शायद ही ऐसा मिले जिसमें थोड़ी-बहुत प्राकृत रचनायें न हुई हो, वर्तमान में भी वह परम्परा चालू है। बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में दिगम्बर परम्परा में आचार्य श्री आदिसागर जी अकंलीकर महाराज ने प्राकृत भाषा में प्रायश्चित विधान नाम कृति का है। वर्तमान में आचार्य सुनीलसार जी महाराज ने प्राकृत भाषा में ग्रंथों का लेखन किया है। उनकी शोरसेनी प्राकृत भाषा में अनेक मौलिक कृतियाँ प्रकाशित हुई हैं । उनमें भावणासारो, भावालोयणा, थुदि-संगहो, णीदी-संगहो, अज्झप्पसारो, प्राकृत-बोध, णियप्पज्झाण-सारो, वयणसारो, सम्मदी-सदी, बारह-भावणा, भद्दबाहुचरियं, भत्ति-संगहो आदि रचनायें प्राकृत वाङ्मय के लिये मील का पत्थर हैं ।

आचार्य सुनीलसागर जी महाराज का जीवन परिचय: आचार्य श्री सुनीलसागर जी महाराज का जन्म मध्यप्रदेश के सागर जिलान्तर्गत तिगोड़ा (हीरापुर) नामक ग्राम में श्री भागचन्द्र जी जैन एवं श्रीमति मुन्नीदेवी जैन के यहाँ आश्विन कृष्णा दशमी, वि.सं. 2034 तदनुसार 7 अक्टूबर 1977 को हुआ। इनका शुभ नाम संदीप जैन रखा। संदीप जब पांच वर्ष के थे तब उनके पिताजी सन् 1982 के लगभग, अपनी ससुराल किशनुगंज में आकर रहने लगे थे। इस होनहार बालक का प्रारम्भिक शिक्षण किशुनगंज (दमोह) के शासकीय स्कूल में संपन्न हुआ। 1989 में आप धार्मिक शिक्षा एवं लौकिक शिक्षा ग्रहण करने मोराजी सागर में जाकर पढ़ने लगे, श्री गणेशप्रसाद वर्णी जी द्वारा स्थापित महाविद्यालय सागर में आपने कक्षा 7 से वी.कॉम शास्त्री तक शिक्षा ग्रहण की और आपका अध्ययन काल 1989 से 1995 तक रहा। सत् संगति एवं अध्यात्म ज्ञान वशात् शास्त्री एवं बी.कॉम. परीक्षाओं के मध्य संदीप जी विशिष्ट रूप से वैराग्योन्मुख हुये।

मुनि दीक्षा- 20 वर्ष की अल्पायु में ही 20 अप्रैल 1997 को महावीर जयंती के पावन पर्व बरुआसागर, झांसी में तपस्वी सम्राट आचार्य श्री सन्मतिसागर जी द्वारा जैनेश्वरी दिगम्बर दीक्षा

अपार जन समूह के बीच प्रदान की गयी। आचार्य श्री ने मुनि सुनीलसागर नाम प्रदान कर घोषित किया। तपस्वी सम्राट आचार्य सन्मति सागर जी ने जन्मदिवस माघ शुक्ला सप्तमी दिनांक 25 जनवरी 2007 को औरंगाबाद में मुनि सुनीलसागर जी को आचार्य पद प्रदान कर। वरदहस्त के रूप में आगामी भविष्य के लिये आशीर्वाद प्रदान किया।

आडूल एवं सोलापुर चातुर्मास के बाद गोम्मटेश्वर बाहुबली स्वामी के दर्शन की तीव्र भावनावश 21 दिसम्बर 2008 को सोलापुर से श्रवणबेलगोला की ओर विहार किया। बीजापुर बाबानगर, जमखंडी, लोकापुर, चत्रराय-पट्टण आदि नगरों से होते हुये 5 फरवरी 2009 को श्रवणबेलगोला में आचार्य श्री मंगल प्रवेश हुआ। वहाँ अपने **णमो जिणिदं गोम्मटं** तथा **भद्दबाहुचरियं** की रचना की। आपके द्वारा रचित भावणासारो ग्रंथ का कन्नड में अनुवाद हुआ। 11 अप्रैल 2009 को प्राकृत भाषा के विविध आयाम- संगोष्ठी का आयोजन हुआ। जिसमें आपके द्वारा रचित **णमो जिणिंद गोम्मट** स्तुति को जब डॉ. मयूरा शाह सोलापुर ने प्रस्तुत किया तो स्वामी जी सहित सभी लोग भाव विभोर हो गये। और स्वामी जी ने अपने भाषण में आचार्य श्री को **अभिनव नेमिचन्द्र चक्रवर्ती** कहकर पुकारा और कहा कि प्राकृत भाषा में आचार्य नेमिचन्द्र जी के बाद 1000 वर्ष के अन्तराल में पहली बार किसी प्राकृत भाषा में स्तुति लिखी गई है। इस स्तुति को एक हजार वर्ष बाद लिखने का सौभाग्य आचार्य श्री सुनीलसागर जी महाराज को प्राप्त हुआ। और श्री चारूकीर्ति स्वामी जी तथा विद्वानों ने आचार्य श्री की बहुत प्रशंसा की और **प्राकृताचार्य** की उपाधि से अलंकृत किया। संगोष्ठी में आचार्य श्री का प्रवचन प्राकृत भाषा में हुआ।

दक्षिण यात्रा व नातेपूते चातुर्मास के बाद पुनः आपको गुरुदेव के दर्शन करने एवं चरण सान्निध्य में रहने का लाभ मिला। 23 मई 2010 को कुजंवन उदगांव की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में अनंतवीर्य भगवान की 42 फुंट ऊँची प्रतिमा को गुरु की आज्ञा से आपके द्वारा सूरीमंत्री दिया गया।

तपस्वी सम्राट का स्वास्थ दिन-दिन गिरता गया और 18 दिसम्बर 2010 को विष्णुकुमार चौधरी को लिखे गये पत्र में अपना पट्टाचार्य पद आचार्य सुनीलसागर जी को स्वयं सौंप दिया। उन्होंने इसके पूर्व भी कितनी बार आचार्य सुनीलसागर जी से कहा था। मेरा पद सम्भालो, हर बार मना करने के कारण पूर्व सूचना सहित पत्र में लिखकर रखा, मेरा पद आचार्य श्री सुनीलसागर जी को देना और गुरुदेव ने अपना उत्तराधिकार पद दे दिया। तपस्वी सम्राट ने 24 दिसम्बर 2010 को इंगिनी मरण सिद्ध किया। 22 दिसंबर 2010 को आचार्य सुनीलसागर जी ने गुरुदव को पत्र लिखा। गुरुदेव ने वह पत्र दो बार अच्छे से पढ़कर कहा कि सुनीलसागर जी से कहो कि खूब धर्म प्रभावना करो। और उसी पत्र के नीचे लिख दिया कि **मेरा पद आचार्य सुनीलसागर जी को देना** और नीचे आचार्य सन्मतिसागर न लिखकर सिर्फ सन्मतिसागर लिखा। 24 दिसम्बर को प्रातः उनके समाधिमरण कर देवलोक की सूचना मिली। समाचार सुनकर मानों एक क्षण के लिये आप गुरु वियोग से खिन्नमना हो गये। 26 दिसम्बर 2010 को आचार्य सन्मतिसागर जी महाराज की आज्ञा एवं लिखित आदेशानुसार, योग्यतानुसार, योग्यतम शिष्य होने से सारे देश व मुम्बई

की विवेकी समाज द्वारा आचार्य आदिसागर जी (अंकलीकर) परम्परा के चतुर्थ पट्टाधीश के रूप में विशालतम संघ की जिम्मेदारी आचार्य श्री सुनीलसागर जी को सौंपी गयी।

आचार्य सुनीलसागर जी महाराज आचार्य आदिसागर अकंलीकर परंपरा के श्रेष्ठ संत हैं। आज वर्तमान में जिन्होंने प्राकृत भाषा में ग्रन्थों को लिखने की विलुपत परम्परा को प्रारम्भ किया है। आपके द्वारा रचित प्राकृत भाषा की पुस्तकें विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों, विद्यालयों में पढ़ाई जाती हैं।

आपके द्वारा आज तक 50 से भी अधिक पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं। जो एक-एक पुस्तक एक-एक रत्न के समान हैं। आपके द्वारा लिखित पुस्तकों में 14 से भी अधिक पुस्तकें प्राकृत भाषा में लिखी गई हैं। आज तक आपके द्वारा लगभग 62 दीक्षायें प्रदान की जा चुकी हैं।

आचार्य श्री सुनीलसागर जी महाराज द्वारा लिखित प्राकृत कृतियाँ :-

1. भावणासारो (प्राकृत), 2. णीदीसंगहो (प्राकृत), 3. प्राकृत बोध (प्राकृत व्याकरण), 4. भद्दबाहुचरियं (प्राकृत), 5. सम्मदी-सदी (प्राकृत), 6. भावालोयणा (प्राकृत), 7. वयण सारो (प्राकृत), 8. णियप्प-झाणसारो (प्राकृत), 9. थुदि संगहो (प्राकृत), 10.अज्झप्पसारो (प्राकृत), 11. बाहुबली (प्राकृत), 12. अनंतवीर्य (प्राकृत), 13. बारह-भावणा (प्राकृत), 14. भक्ति संग्रह (भत्ति-संगहो)

आचार्य श्री सुनीलसागर जी ने संयमी जीवन व्यतीत करते हुये स्थान और समय प्रभाव से संवेदनाओं के जिस रूप की अनुभूतियों की है, उसको शब्दबद्ध कर रचनाओं का रूप दिया है, वह उनकी स्फुट रचनायें हैं। वे यत्र-तत्र-पत्र-पत्रिकाओं में बिखरी पड़ी हैं इसी प्रकार उनकी कुछ अप्रकाशित कृतियाँ भी है, जो कतिपय कारणों से प्रकाशित नहीं हो सकी हैं।

कविता

तारो मुझे जिनेश

तारो मुझे जिनेश शरण में तेरी आया

1.

नरक स्वर्ग में बहुदुख पाया
चहुँ गति भटक शरण में पाया
दे दे शिवपथ नेक शरण में तेरी आया

2.

मिथ्यामत धर दुखा उपाये
सद् गुरु वचन नहीं मन भाये
गुरु का सुन उपदेश शरण में तेरी आये

3.

निज आत्म सद्बोध मिला है
ज्ञानामृत का स्रोत मिला है
मिटे मोह अज्ञान शरण में तेरी आया

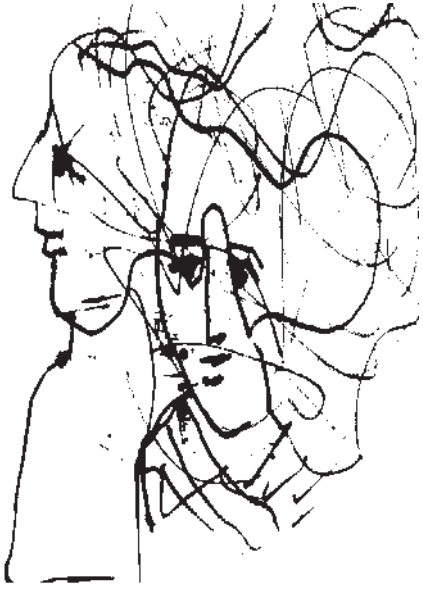

संयम स्वास्थ्य योग

अंग संचालन से पाएं स्वास्थ्य

गठिया निरोधक अभ्यास। वायु निरोधक अभ्यास हाथों की अंगुलियों का संचालन

1. अंगुलियों को एक-एक से मोड़ते हुये मुट्ठी बांधना तथा क्रमानुसार एक-एक जोड़ सीधा करते हुये पुनः अंगुलियों को पूरा फैलाना।
2. मुट्ठियाँ बांधकर कलाई के जोड़ से हाथों को आगे-पीछे तथा वृत्ताकार घुमाना।
3. कोहनियों के जोड़ से हाथों को मोड़ना व सीधा करना।
4. कंघो के जोड़ से बाजू, सीधे रखते हुये अन्दर बाहर मोड़ना।
5. हाथ कंधो पर टिकाकर कंधो के जोड़ से हाथों को वृत्ताकार घुमाना।
6. हाथों को पीठ पर ऊपर नीचे विपरीत अनुक्रम में ले जाकर छूना। बाँधना।
7. हाथों को कूल्हों के पास सटाकर, जमीन पर स्थापित करके, रीढ़ सीधी रखते हुये बैठकर गर्दन के जोड़ से सिर को बारी-बारी से आगे पीछे झुकाना दायें-बायें घुमाना, दायें-बायें मोड़ना, तथा वृत्ताकार घुमाना।
8. दृष्टि को क्रमशः नासाग्र दाहिने बायें टिकाना एवं वृत्ताकार घुमाना दृष्टि को दूर पास केन्द्रित करना तथा अन्त में आँखे बन्द कर मूर्त दृश्य की अमूर्त छवि मन में स्थापित करना, उसे साक्षी भाव से देखना।

**** अधोयाग का संचालन ****

1. पैरों की अंगुलियों को आगे-पीछे मोड़ना।
2. पंजों को टखने के जोड़ से आगे पीछे मोड़ना।
3. पंजो को टखने के जोड़ से वृत्ताकार घुमाना।
4. घुटने को जोड़ से पैरों को मोड़ना व सीधा करना।
5. घुटने के जोड़ से पैरों की वृत्ताकार घुमाना।
6. कुल्हे के जोड़ से पैरो की ऊपर नीचे चलाना।
7. टखने के जोड़ से पंजों को वृत्ताकार दोनों दिशा में दिखाना।
8. पंजों को बारी-बारी से दूसरे और की जंघा पर रखकर कूल्हे के जोड़ से पैर ऊपर-नीचे वृत्ताकार घुमाना।
9. दोनों पैरों को तलुओं को जोड़कर कूल्हों के जोड़ से पैरों की तितली के पंखों की तरह चलाना।

वैश्विक भाषा हिन्दी

- 14 सितम्बर 1949 को संविधान सभा ने एक मत से निर्णय लिया कि हिन्दी भारत की राजभाषा होगी।
- राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा के अनुरोध पर 1953 से 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस घोषित हुआ।
- 1918 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन में महात्मा गांधी ने हिन्दी को राष्ट्र भाषा घोषित करने का अनुरोध किया।
- 1975 में पहला विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन हुआ।
- 1997 के एक सर्वेक्षण में पाया गया कि भारत में 66% लोग हिन्दी बोलते हैं और 77 % लोग हिन्दी समझते हैं।
- डिजिटल माध्यम से हिन्दी पढ़ने वाले 2016 में 5.5 करोड़ थे तथा 2021 में यह संख्या 14.4 करोड़ तक बढ़ सकती है।
- फिजी देश में हिन्दी अधिकारिक भाषा है।
- अमेरिका के 150 से अधिक शैक्षणिक संस्थानों में हिन्दी का पठन पाठन होता है।
- पहली हिन्दी की बोलती फिल्म आलम आरा का प्रदर्शन 14 मार्च 1931 को हुआ था।
- हिन्दी में उच्चतर शोध के लिये भारत सरकार ने 1963 में केन्द्रीय हिन्दी संस्थान की स्थापना की देशभर में इसके 8 केन्द्र हैं । भारत के अलावा मॉरीशस, फिजी, सूरीमाम, गुयान, भूटान, नेपाल, टोबैगो में हिन्दी बोली जाती है।
- इंदुमति हिन्दी की पहली कहानी किशोरीलाल गोस्वामी ने लिखी। जिसका प्रकाशन सन् 1900 में सरस्वती पत्रिका में हुआ। राष्ट्रीय मस्तिष्क अनुसंधान केन्द्र ने अपने अध्ययन में पाया कि हिन्दी पढ़ने से बच्चों का गणित सुधरता है, निर्णय, तर्क क्षमता बेहतर होती है।
- केरल के पल्लीपुरम गांव की पंचायत ने सभी को हिन्दी सीखना अनिवार्य किया।
- पहले ब्रिटिश के व्यापारी ने जहाँगीर से हिन्दी में बात की थी।
- सबसे प्यारी हिन्दी हमारी भाषा हिन्दी अत्यंत सरल सुबोध परिष्कृत भाषा हिन्दी है।
- दुनिया में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली चौथी भाषा हिन्दी है।
- दक्षिण एशियाई समुदाय में उर्दू के अलावा हिन्दी का प्रयोग भी होता है।
- भारत में 53 करोड़ लोग हिन्दी भाषा भाषी हैं। 150 देशों में हिन्दी भाषी लोग है।
- अंग्रेजी और अन्य भाषायें वेशक सीखें, सिखायें लेकिन बच्चों- किशोरों की हिन्दी में रूचि बढ़ाने के लिये लागतार प्रेरित करने की जरूरत है।
- हिन्दी की प्रेरणा माता-पिता और स्कूल के शिक्षक ही दे सकते हैं ।
- अंग्रेजी के माध्यम से पढ़ाने वाले लोगों का ध्यान संस्कार और संस्कृति पर नहीं होता हैं।
- हिन्दी हमेशा व्यवहारिक भाषा रही है।
- हिन्दी फिल्म इंडस्ट्रीज में करोड़ो रूपये मिलते हैं जिन्हें हिन्दी नहीं आती है। वे करोड़ो रूपये कमाने के लिये हिन्दी सीखते हैं।

कैंसर रोग का जन्मदाता तंबाकू का नशा

❊ विजय कुमार जैन, राघौगढ़ (म.प्र.) ❊

युवकों में नशे की प्रवृत्ति निरंतर बढ़ रही है। बीडी-सिगरेट पीकर नशा करने की आदत किशोरावस्था में महाविद्यालयीन शिक्षा के दौरान बढ़ जाती है। मुंह से सिगरेट बीड़ी लगते ही युवक किशोरावस्था में ही अनेक गंभीर बीमारियों को शरीर में जन्म दे देते हैं। वर्तमान में नशे के अनेक साधन उपलब्ध हैं। नशा करने वाले सिगरेट बीड़ी, गुटखा, शराब, ब्राउन, शुगर आदि का उपयोग जोर-शोर से कर रहे हैं। बीड़ी-सिगरेट में निकोटीन होता है। इसके नशे का सबसे पहले असर श्वसन प्रणाली पर पड़ता है। इनके नशे का एक दुष्प्रभाव यह होता हैं कि यह आदत किशोरावस्था में लगती है और जीवन भर रहती है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि भारत में तंबाकू के पौधे का सबसे पहले पुर्तगाली यात्री वास्कोडिगामा लेकर आया था।

तंबाकू के भारत में प्रवेश से पहले यहाँ प्राचीनतम से भांग का नशा का नशा किया जाता था। अन्य प्रकार के नशों की अपेक्षा भांग से कैंसर नहीं होता है। धूम्रपान करने वालों के फेफड़ों में कमजोरी आ जाती है, अथवा फेफड़ों में बीमारी प्रवेश कर लेती है। जबकि जे नशा नहीं करते हैं उन्हें यह स्थिति नहीं होती है। एक सर्वेक्षण के अनुसार यह आंकड़े सामने आये है कि पुरुषों में 50 प्रतिशत एवं महिलाओं में 20 प्रतिशत कैंसर तंबाकू के कारण ही होता है। 25 से 60 आयु समूह में मरने वालों में 25 प्रतिशत धूम्रपान के कारण मौत के मुँह में चले जाते हैं। यह भी उल्लेखनीय है कि धूम्रपान करने वालों में क्षय रोग टीबी की बीमारी के कीटाणु लगने की आशंका अन्य लोगों से चार गुना ज्यादा होती हैं। कैंसर इस्टीट्यूट नई दिल्ली के कैंसर चिकित्सा सेवा विभाग के निदेशक डॉ. पुनीत गुप्ता ने कुछ समय पूर्व एक चर्चा के दौरान बताया तंबाकू की पत्तियों में करीब चार हजार रसायन होते हैं, जिनमें से 60 रसायन मनुष्य के शरीर में जाकर डी.एन.ए. और प्रोटीन की संरचना में बदलाव करके गंभीर रोग कैंसर को पैदा करते हैं।

डॉ. पुनीत गुप्ता के अनुसार जब तंबाकू से बने सिगरेट या सिगार को सुलगाया जाता है तो चार हजार रसायनों में से कुछ कैंसर जन्य रसायनों में बदल जाते हैं।

जब तंबाकू का सेवन शराब के साथ किया जाता है तो कैंसर पैदा करने की उसकी क्षमता बहुत अधिक बढ़ जाती हैं। इसलिये तंबाकू का सेवन किसी भी रूप में घातक है। सिगरेट सिगार या बीड़ी का एक कश भी मानव शरीर के लिये हानिकारक है। एक सर्वेक्षण में यह तथ्य भी सामने आये है कि देश में तंबाकू का सेवन एवं धूम्रपान जानलेवा महामारी का रूप धारण कर चुका है। आम लोगों में इस बुरी आदत को छुड़ाने में मनौवैज्ञानिक उपचार कारगर साबित हुये हैं। अनेक अध्ययनों से ऐसे प्रमाण मिले हैं कि मनौवैज्ञानिक उपाय एवं उपचार से धूम्रपान छोड़ने वालों की संख्या बढ़ रही है। रिर्पोट में यह भी कहा है कि तंबाकू खाना पूरी तरह से बंद करने से कैंसर तथा पूर्व कैंसर के 60 प्रतिशत मामलों को रोका जा सकता है। सर्वेक्षण में यह भी उललेख किया हैं भारत में 12 करोड़ धूम्रपान करते हैं और दुनियाभर में धूम्रपान करने वालों की संख्या के हिसाब

से चीने के बाद हमारा भारत दूसरे स्थान पर है। एक अध्ययन के अनुसारर धूम्रपान करने वालों की तुलना में कैंसर से मरने वालों की संभावना सात गुना अधिक होती है। यह भी कहा है और अन्य नशीले पदार्थों के साथ तंबाकू का सेवन तंबाकू के दुष्प्रभाव को और बढ़ा देता है। 50 की उम्र के बाद धूम्रपान को रोकने पर कैंसर का खतरा आधा हो जाता है।

जबकि 30 की उम्र में धूम्रपान रोकने पर इसके स भी दुष्प्रभावों से बचा जा सकता है। विगत वर्षों भारत सरकार ने संसद में प्रस्तुत रिर्पोट में जाकारी दी थी तंबाकू का बाजार विश्व स्तर पर हर वर्ष 8.5 प्रतिशत से बढ़ रहा है। भारत में भारत सरकार द्वारा हर वर्ष सिगरेट पर जी एस टी में वृ8 करने के बावजूद सिगरेट की खपत में दिन रात वृद्धि हो रही है। यहाँ विशेष रूप से उल्लेख करना चाहेंगे कि धूम्रपान करना सिगरेट का कश लम्बे समय तक खींचकर नशा करने से अनेक बीमारियाँ मानव शरीर में प्रवेश कर जाती हैं। सिर, गले, फेफड़े आहार नली, किड़नी, पैक्रियाज स्तन एवं सवाईकल में कैंसर हो सकता है। इसके अलावा हृदय रोग और स्ट्रोक के अलावा पैरों में वैस्कुलर रोग के खतरे बढ़ जाते हैं। इसका इलाज नहीं है।

मेरे मित्र समाज सेवी एवं पिछले लगभग 30 वर्ष से गुटखा हानिकारक है नशा मुक्ति अभियान चला रहे माली कृष्ण गोपाल कश्यप जिन्हें उत्कृष्ट कार्य के विगत वर्ष मध्यप्रदेश शासन द्वारा महात्मा ज्योतिबा फुले राज्य स्तरीय सम्मान से सम्मानित किया है। कश्यप का कहना है वर्तमान में नशीले गुटखा पाउच का प्रचलन ज्यादा हो रहा है। गुटखा पाउच को सभी उम्र के लोग खा रहे हैं। गुटखा खाने से मुंह का कैंसर होता है। गुटखा में तंबाकू के साथ और भी नशीली वस्तुओं का मिश्रण किया जाता है। आपका कहना है गुटखा पाउस जिसे हम चाव से खाते हैं वह कैंसर को शीघ्र जन्म दे रहा है।

कविता

मुक्तक कोरोना

जाम के दीवाने भूल गय कोरोना खोफ को
मौंत से बचाने के लिये पुलिस के त्याग को
वे तो इनते डूबे व्यसन वासना में कि
भूल गये कोरोना कर्मवीरों के बलिदान को
सरकार शराब पर मेहरबां हो गई
राजस्व बटोरने में मसगल हो गई
की भूल गई कोरेना के खोफ को
चालीस दिन की मेहनत एक दिन में धो गई
करें शराबी जय जयकार वे कहते अच्छी सरक़ार
बड़े दिनों बाद मिली हैं मयखाने को छूट अपार

चलो देखें यात्रा

उमतापुरा
वैभव का तीर्थ उमता

भगवान महावीर की 2600 वीं जन्म जयन्ती पर केन्द्र सरकार द्वारा डेवलपमेन्ट क्षेत्र घोषित। सन् 2001 ई. में गुजरात के महामहिम राज्यपाल श्री सुन्दर सिंह जी भंडारी द्वारा चतुर्थकालीन पुरानी मूर्तियाँ क्षेत्र को वन्दनार्थ सौंपी गई । क्षेत्र का पूर्व नाम वर्धमानपुरम हैं । मूलनायक, भगवान आदिनाथ सहित क्षेत्र पर 74 प्रतिमायें, खुदाई, से प्राप्त हुई है। वर्तमान में निमार्ण एवं विकास कार्य चल रहा है।

वार्षिक मेला : 28 अप्रैल आचार्य श्री निर्भयसागर दीक्षा दिवस महावीर जयन्ती, उद्गम दिवस

प्रबन्ध व्यवस्था : संस्थाः मुनि निर्भयसागर जन कल्याण

समिति: अध्यक्ष श्री सौभाग्यमल कटारिया (079-2138301), मंत्री श्री एस.एस.जैन (09313770931)

आवागमन के साधन: रेल्वे स्टेशनः वीस नगर -8 कि.मी

बस स्टैण्ड : उमता

पहुँचने का सरलतम मार्ग: अहमदाबाद 105 किमी.

मेहसाणा- 28 किमी. अधना तारंगा जी 35 कि.मी बस द्वारा

क्षेत्र पर उपलब्ध सुविधायें: आवासः कमरे (अटैच बाथरूम)- 9 कमरे बिना बाथरूम, 2 हॉल, 2 गेस्ट हाऊस -01

यात्री ठहरने की कुल क्षमता: 500

भोजनशाला है , विद्यालय है, औषधालय है, पुस्तकालय है।

टेलीफोनः 09624830265

स्व दोष दर्शन-कल्याण पथ

दूसरों की बुराईयाँ देखने बजाय अपनी देखें तो कल्याण हो जाए : आचार्य विरागसागरजी

❊ डॉ. महेन्द्र कुमार जैन, इन्दौर ❊

मनुष्य का स्वभाव हो गया है कि उसे दूसरों की बुराईयाँ दिखाई देती हैं, ये उसके संस्कार बन गये हैं । जितनी बारीकी से हम दूसरों की बुराईयाँ देखते हैं उतनी बारीकी से यदि हम अपनी बुराईयाँ देखें तो अपना कल्याण हो जाये।

बुरा जो देखने मैं चला बुरा न मिलया कोय।
जो मन खोजा आपना मुझसे बुरा न कोय ।।

ये विचार रखे भिण्ड में विराजमान गणाचार्य श्री विरागसागरजी मुनिराज ने अपने प्रवचनों से एकत्र किये। उन्होंने कहा कि एक अंगुली जब हम सामने वाले पर उठाते हैं तो तीन अपनी ओर स्वतः उठती हैं। सामने वाला एक गुना बुरा है तो हम तीन गुने। हम एक अंगुली को देखते हैं यदि हमारी दृष्टि में तीन अंगुली दिख जायें तो हमारी एक अँगुली भी नहीं उठेगी। अपितु सम्यग्दर्शन के अंग स्वरूप प्रेम, वात्सल्य, उपगूहन, करता है। तथा एकांत में समझा देता है। जबकि मिथ्यादृष्टि बात को बढ़ा-चढ़ा कर कहता है। दूसरे की बुराई देखी है तो तुम्हारी दृष्टि तो बुरी होगी ही।

कवि कह रहा है- **दृष्टि न दोषों पर जावे**। गाँधी जी का बंदर दोनों आँखों पर हाथ रखे हैं कि दृष्टि दोषों पर न जावे। परंतु संस्कार वशात् दृष्टि उसी पर जाती है। श्री कृष्ण व अर्जुन रथ पर सवार हो वन विहार कर रहे थे।

चलते-चलते ऐस स्थान पर रथ पहुँचा जहाँ अर्जुन को कहना पड़ा कि हे श्री कृष्ण ! रथ मोड़ लीजिए। श्री कृष्ण ने कहा क्या हुआ ? अर्जुन कहते हैं पहले रथ मोड़िये फिर बताता हूँ। श्री कृष्ण कहते हैं बताओ पहले क्या हुआ ? अर्जुन कहते हैं देखो वह मृतक बीभत्स कुत्ता, क्या वह आपको नहीं दिख रहा। श्री कृष्ण बोले तुमसे देखा नहीं जा रहा तो क्यों देखते हो। देखो तो उस कुत्ते के दांत कितने सुंदर हैं । वे देखो न प्रायः ये आँखें वही देखती हैं जो नहीं देखना चाहिये। जिसे देखना चाहिये उसे हम नहीं देख पाते। अनादि के संस्कार ऐसे हाते हैं । न देखने योग्य को हम देखते हैं, न सुनने योग्य को सुनते हैं। प्रवचन-व्याख्यान में कोई झगड़ रहा हो तो दृष्टि उस ओर शीघ्रता से चली जाती है। किसी के अपराधों को हम हर पल याद रखते हैं गुरु के प्रवचन का एक शब्द भी याद नहीं रहता रा किसी से झगड़ा हो जाये तो बुराई पर बुराई शुरु होती रहती है परंतु जिसकी बुराई की जाती है वह बुरा हो भी और न भी हो। परंतु बुराई करने वाला स्वयं तो बुरा है ही। बुराई करने वाला अपना परिचय दे देता है। कि स्वयं बुरा है।

मन खराब है, माथा खराब होगा।
करो बुराई पर की, बुरा स्वयं का होगा ।।

आप दूसरो की बुराई करो तो हो सकता हे कि सामने वाला संत प्रवृत्ति का हो और वह व्यक्ति सहन कर ले संत शूल को भी फूल मान अंगीकार कर लेते हैं। क्योंकि वे फूल की तरह

होते हैं। जो स्वयं फूल जैसा है उसके सामने शूल भी फूल बन जाते हैं । एक मंदिर जी में एक चित्र बना हुआ था, उसमें सीता को जलाने धधकती अग्नि ज्वालायें जलायी गयी थीं। बुराई करने वाला सामने वाले को वैसा ही सीता की तरह अग्नि ज्वाला में पटक देता है। परंतु समता शील साधकों की अग्नि ज्वाला सीता की तरह शीतल जल में बदल जाती है। किसी के मर्मभेदी वचनों को सुन खेद नहीं करना आक्रोश परीषहजय है। मुनि रास्ते परजा रहे हैं कोई कह दे नंगा जा रहा है, लुच्चा जा रहा है। संत सकारात्मक चिंतन करते हैं इसने नंगा ही तो कहा तो नग्न ही हूँ। लुच्चा कहा तो ठीक ही हैं क्योंकि हम केशलौंच करते हैं इसलिये लुच्चा ही है। कोई संत को पागल कह दे तो वे सोचते हैं जिसने पापों को गलाया वह पागल, संत को कुत्ता कह दे तो वे सोचते हैं कि जो कुत्सित मार्ग को त्यागे वह कुत्ता है। वे सोचते हैं कि सामने वाले ने क्या गलत कहा, जब उसने सत्य कहा है तो मुझे क्यों बुरा लगेगा। उनके सकारात्मक चिंतन के माध्यम से वे सारे अपशब्दों के बाण फूल बन जाते हैं । ये है सकारात्मक सोच। इस तरह दूसरों की बुराई नहीं देखता हुआ व्यक्ति ने आपने आत्म कल्याण के मार्ग पर शीघ्रता से बढ़ता है।

कविता

आन्दोलन करो किसान

जोश आता है
देखकर के अपनी शान को
जोश आता है
देखकर के अपनी बिगड़ती शान को
जहां दिखते हैं चार फायदे
वहीं जोश भर जाता इंसान में
जहां दिखता है जाति का अपमान
वहीं उछलने लगता है इंसान
जोश में होश भूले किसान
लाल किले पर फहरा दिया निशान
भूल गये राष्ट्र की शान
मिटा दी भारत की पहचान
भारत में होता रहा है विरोध
पर नहीं खड़ा करते राष्ट्र की
प्रगति में अवरोध
विश्व में घटा दी राष्ट्र की शान
बिगाड़ दी पहचान
जीत हो सरकार की
या जीत जाये किसान
तो भी हारेगा देश
जनता होगी परेशान
जोश होता है हानिकारक
दिल का उठा तूफान
जोश में न समझ पायें
अपना भला बुरा इंसान
हम तुम्हारे साथ हैं
देश पूरा होगा साथ
खोना नहीं विवेक को
आन्दोलन करो किसान

आगम दर्शन

योग विद्या का शास्त्र योगसार

योगसार का मुख्य विषय भी वही है जो परमात्म प्रकाशक हे। इसमें संसार की प्रत्येक वस्तु से आत्मा को सर्वथा पृथक अनुभवन करने का उपदेश दिया गया है। ग्रन्थकार कहते हैं कि संसार से भयभीत और मोक्ष के लिये उत्सुक प्राणियों की आत्मा को जगाने के लिये जोगीचन्द साधु ने इन दोहों को रचा है। ग्रंथकार लिखते हैं कि उनने ग्रंथ को दोहों में रचा है। किन्तु उपलब्ध प्रति में एक चौपाई और दो सोरठा भी है। इससे अनुमान होता है कि संभवतः प्रतियाँ पूर्ण सुरक्षित नहीं रही हैं। अन्तिम पद्य में ग्रन्थकर्ता का नाम जोगिचन्द (जोइन्दु=योगीन्दु) का उल्लेख आरम्भिक मंगलाचरण सदृशता, मुख्य विषय की एक वर्णन की शैली, और वाक्य तथा व्यक्तियों की समानता बतलाती है कि दोनोंर ग्रंथ एक ही कर्ता जोईन्दु की रचनायें हैं। योगसार माणिकचन्द्र ग्रंथ माला बारम्बर प्रकाशित हुआ है। किन्तु उसमें अनेक अशुद्धियाँ यदि उनके अशुद्ध पाठों को दृष्टियों में लाया जाये। भाषा की दृष्टि से भी दोनों ग्रंथों में समानता है। केवल कुछ अन्तर जो पाठक के हृदय को स्पर्श करते हैं। इस प्रकार है। योगसार में एक वचन में द्रव्य हुये और (ह) आत है। किन्तु परमात्म प्रकाश में (हँ) और योगसार में वर्तमान काल के द्वितीय पुरुष के एकवचन (हु) और (हि) पाया जाता है। किन्तु परमात्म प्रकाश में केवल द्वि आता है। पंचास्तिकाय टीका में जयसेन योगसार से एक पद्य भी उद्धृत किया है।

पथरीधन चूर्ण

पथरी की अचूक दवा

सेवन विधि–

1) यह चूर्ण सुबह भोजन के बीच में लिया जायें।
2) पानी दिनभर अधिक मात्रा में लें, पेट खाली न हो।
3) प्रथम खुराक लेनेके बाद, दूसरी खुराक एक दिन छोड़कर ही ली जाये।

नोट– यह औषधि निःशुल्क दी जाती है। ठीक होने पर औषधि निर्माण हेतु सहयोग कर सकते हैं।

प्राप्ति स्थान –**ब्र. जिनेश मलैया, संस्कार सागर**
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मन्दिर, बॉम्बेहास्पिटल के पास, इन्दौर (म.प्र.)
फोनः 0731-4003506 मो.:8989505108, 6232967108

दवा देने के विभिन्न स्थानों पर केन्द्र है आप भी अपने यहां केन्द्र चाहते हैं तो सम्पर्क करें

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता
फरवरी 2021

दाने दाने में

प्रथम-

अन्न प्राण है अन्नदान है
हरा भरा यह जीवन मान है
भरा पेट तो मजा है गाने में
स्वाद भरा है दाने दाने में

श्रीमती सुमन जैन, इन्दौर

द्वितीय-

गेहूँ की ये बलें प्यारी
हर किसान की संतान ये न्यारी
खड़ी फसल मन लगता गाने में
नजर कृषक की दाने दाने में

श्रीमती रजनी जैन, राहतगढ़

तृतीय-

हर प्राणी का मन ललचायें
तन में ताकत अनुपम लाये
खुशियाँ छाई किसानों में
श्रम फल दाने दाने में

श्रीमती आरती जैन, भोपाल

अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा
जनवरी 2021 के विजेता

प्रथम : राजेश जैन, मुम्बई
द्वितीय : अखिलेश जैन, ललितपुर
तृतीय : स्मिता जैन, दिल्ली

वर्ग पहेली क्र. 257
जनवरी 2021 के विजेता

प्रथम : श्रीमती पुष्पा जैन, अहमदाबाद
द्वितीय : श्रीमती प्रीति जैन, राहतगढ़
तृतीय : मीना जैन, ओवेदुल्लागंज

अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा : फरवरी 2021 का हल

01. आत्मा
02. घर
03. वैभव
04. स्व-पर
05. हलुआ
06. दीपक
07. औपचारिक
08. आनंद
09. हवा
10. आत्मतत्त्व
11. भव्य
12. मनोभावना
13. शब्दोच्चारण
14. स्वरूप
15. अंतस्
16. डॉक्टर
17. प्रमाद
18. संवेदन
19. मुनिराज
20. अध्यात्म
21. जीने
22. श्रद्धान
23. विकास
24. आत्मानुभूति
25. मोक्षमार्ग
26. रत्नत्रय
27. आत्मरमण
29. पराश्रित
30. कला
31. विश्वास
32. साधु
33. आत्मानुशासन
34. आगम
35. डॉट
36. कठिनतम
37. गणधर
38. वैराग्य
39. मकड़ी
40. संतोष
41. श्रीमती नमीता उत्तमचंद जैन
42. श्रीमती राजुल अनिल रावत
43. श्रीमती विभा प्रशांत जैन
44. श्री नरेन्द्र चंद्रकांत
45. श्री कपिल सुधाकर
46. रिया कमलकुमार मोदी
47. कुण्डलपुर, मुनि श्री आदिसागर
48. घाटोल, आर्यिका श्री अर्हंमती
49. 14 फरवरी 21, परतापुर
50. 26 दिसम्बर 2020, द्रोणगिरि

पुराण प्रेरणा

मनुष्य की मर्यादा

सुमुबमुख्यवधूजनमुख्यतां समधिगम्य निजैः सुमुबैगुणिः
वरवधूरतिगौरवमाप सा न सुलभं सुमुखे किमु भर्त्तरि

सुन्दरी वनमाला अपने उत्तम गुणों से सजा सुमुख की समस्त मुख्य स्त्रियों में मुख्यता को पाकर परम गौरव को प्राप्त हुई सो ठीक ही हैं क्योंकि भर्त्ता के अनुकूल रहने पर कौन सी वस्तु सुलभ नहीं ।

दिवि कदाचिदसौ वरकामिनीनिवहमध्यगतोऽवधिगोचरम् ।
समनयहनितां वनमालिकां परिचितः प्रणयः खलुः दुस्त्यजः ।।

कदाचित् वह देव स्वर्ग में उत्मोत्तम स्त्रियों के बीच बैठा था कि उसने अचानक ही अपनी पूर्व भव की स्त्री वनमाला को अवधिज्ञान का विषय बनाया अर्थात् अवधिज्ञान के द्वारा उसका विचार किया ठीक ही है क्योंकि परिचित अनुभूत स्नेह बड़ी कठिनाई से भूलता है।

ततः स दुहितुस्तस्या स्वयमेवाग्रहीतकरम् ।
कामग्रहगृहीतस्य का मर्यादा क्रमोऽपि कः ।।

तदनन्तर उसने पुत्री मनोहरीका कर ग्रहण स्वयं ही कर लिया ठीक ही है क्योंकि कामरूपी पिशाच से गृहीत मनुष्य की मर्यादा क्या है ? और क्रम क्या है ?

कामी मनुष्य सब मर्यादाओं और क्रमों को छोड़ देता है ।

माथा पच्ची

निम्न अक्रमबद्ध वर्णों कोक्रमबद्ध बनाकर रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए।

1. र व् ष अ् र् अ य् उ ष् ण्
2. व् अ आ क् ई ष् ट् र् आ न् प् र
3. अ प् अ श् अ ल् क् ष् अ ण् अ व् र्
4. अ प् अ र आ अ ल् ह अ क् अ ण् र व्
5. अ अ् त्र् य् अ व् न् प् व् द् अ

परिणाम :
फरवरी 2021: (1) मुनि श्री निशंकसागर जी (2) मुनि श्री निर्भान्तसागर जी (3) मुनि श्री निरालससागर जी (4) मुनि श्री निराकरसागर जी (5) मुनि श्री निर्मानसागर जी

केरियर

आंतरिक सज्जा में अवसर

❊ प्रस्तोताः ऋतिक जैन, सागर ❊

इंटीरियर डिजाइनर स्थानिक हेरफेर के साथ-साथ सतह के उपचार के माध्यम से आंतरिक स्थान के अनुभव को आकार देता है।

योग्यता: इंटीरियर डिजाइनर को रचनात्मक, कलात्मक व कल्पनाशील होना चाहिये। वह सौंदर्य क्षमताओं के साथ व्यावहारिक सुविध को संयोजित करने में सक्षम होना चाहिये।

शैक्षिक योग्यता: ग्रेज्युशन के बाद इंटीरियर डिजाइन में डिप्लोमा। **CEPT (Center for environmental Planning & Technology)** अहमदाबाद में शहरी डिजाइन लैंडस्केप आर्किटेक्चर, शहरी और क्षेत्रीय योजना, पर्यावरण योजना, आवास, निर्माण और परियोजना प्रबंधन में स्नातकोत्तर कार्यक्रम प्रदान करता है।

एक इंटीरियर डिजाइनर को बाजार के नवीनतम रूझानों जैसे वस्तु या फेंगशुई के विषय में भी जानकारी होनी चाहिये।

जॉब की संभावायें : अपने पाठ्यक्रम के पूरा होने के तुरंत बाद इंटीरियर डिजाइनर एक स्थापित आर्किटेक्ट फर्म या निर्माण फर्म में शामिल हो सकते हैं।

फ्रेश इंटीरियर डिजाइनर, डिजाइनिंग के क्षेत्र में काम करने वाले मीडिया हाउस के साथ काम कर सकता है।

खुद की फम भी शुरु कर सकते हैं।

वेतन संभावनायें: एक अच्छा इंटीरियर डिजाइनर 10,000-15,000/- प्रतिमाह से शुरू कर सकता है।

प्रतिष्ठित इंटीरियर डिजाइनिंग संस्थानः

National institute of design, ahmedabad
School of Planning and architecture, New Delhi
Sir J.J. School of arts, Mumbai

न्यूरोथैरेपी एवं प्राण चिकित्सा रैकी प्रशिक्षण शिविर

इंदौर- श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर इन्दौर में दिनांक 30 जनवरी से 28 फरवरी 2021 तक न्यूरोथैरेपी एवं प्राण चिकित्सा प्रशिक्षण शिविर ब्र. सतीश भैया जबलपुर, ब्र. अंकित भैया भिलाई, ब्र. अजय भैया बार्सी, ब्र. विकास भैया औरंगाबाद, ब्र. संदीप भैया औरंगाबाद, डॉ. सुरेश जैन औरंगाबाद, विशाल जैन इन्दौर, मधुर जैन इन्दौर, अखिलेश मोदी इन्दौर, स्वाती सोना दीदी गेरतगंज, ब्र. सुनीता दीदी सागर, बहन श्रद्धा बार्शी, ब्र. चन्द्रप्रभा दीदी जयपुर को दिया गया। न्यूरोथैरेपी का प्रशिक्षण डॉ. जितेन्द्र पाटीदार तथा प्राण चिकित्सा रैकी का प्रशिक्षण ब्र. जिनेश मलैया प्रधान संपादक संस्कार सागर ने किया। सभी प्रशिक्षकों की आवास एवं भोजन व्यवस्था पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक ट्रस्ट ने की।

'संस्कार सागर' के स्वामित्व एवं अन्य विवरण के संबंध में

घोषणा

फॉर्म 4 (नियम 8 देखिए)

1.	प्रकाशन स्थल	:	इन्दौर
2.	प्रकाशन अवधि	:	मासिक
3.	मुद्रक का नाम	:	**मोदी प्रिन्टर्स**
	क्या भारतीय नागरिक हैं	:	हाँ
	पता	:	76–बी1, पोलोग्राउंड इन्दौर
4.	प्रकाशक का नाम	:	**ब्र.सुरेश मलैया** श्री दि. जैन युवक संघ के लिए
	क्या भारतीय नागरिक हैं	:	हाँ
	पता		श्री पंचबालयति दि. जैन मंदिर सत्यम् गैस के सामने ए.बी. रोड़, इन्दौर-10
5.	संपादक का नाम	:	**ब्र. जिनेश मलैया**
	क्या भारतीय नागरिक हैं	:	हाँ
	पता	:	श्री पंचबालयति दि. जैन मंदिर सत्यम् गैस के सामने ए.बी. रोड़, इन्दौर-10
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो पत्रिका के स्वामी हों तथा जो समस्त पूँजी के एक प्रतिशत से अधिकके साझेदार या हिस्सेदार हों	:	**श्री दि. जैन युवक संघ, इन्दौर** **कार्यालय :** श्री पंचबालयति दि. जैन मंदिर सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर –10

मैं सुरेश मलैया एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरे अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

दिनांक 15 मार्च 2021

ब्र. सुरेश मलैया
(प्रकाशक के हस्ताक्षर)

■1 जनवरी

- कोरोना संक्रमित गृह सचिव मसूद अख्तर का निधन हो गया।

- नागरिकों के सम्मान में आस्ट्रेलिया ने राष्ट्रगान में बदलाव किया।

- मेघालय में सांप जैसे सिर वाली मछली की एक नई प्रजाति चन्ना स्नेकहेड मिली।

■ 2 जनवरी

- कोविशील्ड के बाद कोवैक्सीन की सिफारस हुई स्वदेशी टीके को भी मंजूरी मिली।

- हिमाचल में एक हजार प्रवासी पंक्षीयें की मौत हुई तथा इंदौर में 13 और कौअे मरे मिले जापान के दस जिलों में बर्ड फ्लू फैला।

- कांग्रेस के नेता एवं दलितों के मसीहा बूटज़सिंह का निधन हुआ वे 86 वर्ष के थे।

■ 3 जनवरी

- उत्तर प्रदेश के गाजियाबद के मुरादनगर में अंतिम संस्कार में शामिल लोगों पर श्मशान घाट परिसर की छत ढहने से 23 लोगों की मौत हो गई।

- श्रीनगरः कश्मीर के कुलग्राम में सुरक्षा बलों ने लश्कर के आंतकियों के एक मददगार से ए.के. 47 को दो मैगजीन 28 कारतूस एक पिस्टल और एक ग्रेनेड सहित अन्य सामग्री बरामद की।

- 26वें चीफ जस्टिफ बने मोहम्मद रफीक राज्यपाल दिलाई शपथ।

■ 4 जनवरी

- सफाई व्यवस्था पर ग्वालियर कमिश्नर और खनन पर कटनी एसपी को हटाया।

- हाइकोर्ट के 26वें चीफ जस्टिस मोहम्मद रफीक ने वर्चुअल पदभार ग्रहण किया।

- सीरियाः बसों और ट्रकों पर आंतकवादी हमला नो लोगों की मौत चार घायल।

■ 5 जनवरी

- आगरा में ताजमहल के अन्दर भगवा झंडा लहराने और शिव चालीसा का पाठ करने का मामला सामने आय है।

- म.प्र. राजस्थान समेत 6 राज्यों में 85 हजार पक्षियों की मौत।

- बॉम्बे हाईकोर्ट की औरंगबाद बेचने टीवी चैनल और मीडिया में देवी-देवताओं के नाम पर बेचे जा रहे यंत्र तंत्र की बिक्री के अंधविश्वास फैलाने वाले विज्ञापनों पर रोक लगा दी।

■ 6 जनवरी

- उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड में लव जिहद कानून पर सुप्रीम कोर्ट ने फिलहाल रोक लगाने से इनकार कर दिया।

- कश्मीरः बर्फबारी से जिन्दगी थमी चार दिन से सड़क और हवाई मार्ग बंद सैकड़ों पर्यटक फंसे।

- बुदायूं जिले के उद्यैती में मंदिर गई 50 वर्षीय तीन बच्चों की मां के साथ सामूहिक दुष्कर्म और बर्बरता की गई।

■ 7 जनवरी

- अमरीकी संसद के 206 साल के इतिहास में पहली बार ऐसा हमला हुआ 4 लोगों की गोलीबारी में मौत 52 गिरफ्तार हुये।

- पूर्व मुख्य सचिव गोपाल रेड्डी के ठिकानों पर ईडी का छापा पड़ा।

- लवजिहाद के खिलाफ अध्यादेश को मिली मंजूरी।

■ 8 जनवरी

- कृषि कानून के खिलाफ 44 दिन से दिल्ली की सीमाओं पर जमें किसानों और सरकार के बीच शुक्रवार को 9वीं बैठक भी बेनतीजा रही।

- नेताजी सुभाषचंद्र बोस की भतीजी और प्रोफेसर चित्रा घोष का दिल का दौरा पड़ने से 90 वर्ष की आयु में निधन हो गया।

- उत्तरी चीन में भी फैला कोरोना 1.1 करोड़ की आबादी वाले शहर में भी लॉकडाउन लगा।

■ 9 जनवरी

- भोपाल प्रदेश में अब प्रलोभन देकर बहलाकर बलपूर्वक या धर्मांतरण करवाकर विवाह करने या करवाने वाले को 10 साल तक की सजा होगी।

- जकार्ता से पोंटियनाक के लिये उड़ान भरने के बाद शनिवार को श्री विजय एयर का बोइंग 737-500 यात्री का विमान लापता हो गया।

- भारतवंशी अमरीकी भावेश वी पटेल ने बड़ी उपलब्धि हासिल की है उन्हें फेडरल रिजर्व बैंक ऑफ डलास की ह्यूस्टन शाखा के निदेशक मंडल में शामिल किया गया है।

■ 10 जनवरी

- करनाल किसान कानूनों के हिंसक विरोध का चेहरा सामने आया है। हरियाणा कें मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर को अपने गृह जिले करनाल में प्रस्तावित महापंचायत नहीं कर पाये।

- इस्लामाबादः तकनीकी खामी के कारण पूरे पाकिस्तान में बिजली गुल हो गई। पाक ने जिसको दोष भारत पर मढ़ा।

- टोक्योः जापान के मध्यक्षेत्र में भारी हिमपात ने फुकुई प्रांत में हजारों वाहनों को एक्सप्रेस वे पर फंसे रहने पर मजबूर कर दिया।

■ 11 जनवरी

- टीम इंडिया के कप्तान विराट कोहली पिता बने।

- पूर्वी लद्दाख में (एल.ए.सी) से चीन ने अपने 10 हजार सैनिकों को वापिस बुलाया है।

- राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की मुश्किले बढ़ गई हैं अमेरिकी प्रतिनिधी सभा (निचले सदन) में उनके खिलाफ महाभियोग प्रस्ताव पेश किया गया।

■ 12 जनवरी

- सुप्रीम कोर्ट ने तीनों कृषि कानूनों के अमल पर अगले आदेश तक रोक लगा दी है।

- मुरैना जिले के तीन गांवा में 24 घंटे में जहरीली शराब पीने से 14 लोगों की मौत हो गई। 17 की हालत नाजुक है।

- सेना प्रमुख एम.एम नरवणे ने कहा। पाकिस्तान व चीन बड़ा जोखिम पैदा करते हैं।

■ 13 जनवरी

- अमरीका के इंडियाना प्रांत की एक जेल में लीसा मॉन्टगमरी को जहर का इंजेक्शन देकर मौत की नींद सुला दिया गया।

- जम्मू कश्मीर में अंतराष्ट्रीय बॉर्डर के पास सीमा सुरक्षा बल के जवानों ने सुरंग का पता लगाया।

- नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो (एनसीबी) ने महाराष्ट्र के केबिनेट मंत्री नबाब मालिक के दामा समीर खान को ड्रग्स मामले में गिरफ्तार कर लिया।

■ 14 जनवरी

- गुजरात कैडर के आईएएस अधिकारी रहे अरविन्द कुमार शर्मा भाजपा में शामिल हो गये।

- राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के खिलाफ ससंद के निचले सदन हाऊस ऑफ रिप्रजेंटेटिप्से स महाभियोग प्रस्ताव 197 के मुकाबले 232 वोटों से पारित हुआ।

- सियोलः दक्षिण कोरिया की सुप्रीम कोर्ट ने पूर्व राष्ट्रपति पार्क ग्यून है पर रिश्वत और अन्य अपराधों के लिये 20 साल की जेल की सजा को बरकरार रखा।

- काबुलः अफगानिस्तान के हेलमंद प्रांत से सेना ने 13 नागरिकों और एक पुलिसकर्मी को तालिबान के चंगुल से छुड़वाया।

■ 15 जनवरी

- जकार्ताः इंडोनेशिया के सुलावेसी द्वीप में तड़के आये शक्तिशाली भूकंप और भूस्खलन से 42 लोग मारे गये।

- कर्ज न चुकाने पर मलेशिया ने जफ्त किया पाक का विमान।

- बहुचर्चित निठारी कांड के 12वें केस में सीबीआइ की विशेष अदालत ने सुरेन्द्र कोली की दोषी करार दिया।

■ 16 जनवरी

- राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने लोक मलाई इंसाफ वेलफेयर सोसायटी के अध्यक्ष बलदेव सिंह सिरसा को पूछताछ के लिये समन भेजा।

-नई दिल्लीः देश के विभिन्न टीका केन्द्रों पर शनिवार से कोरोना टीका महाभियान शुरु हुआ।

- पाकिस्तान के लाहौर जेल में 13 साल तक यातनायें झेलने के बाद गोहपारू के बरेली निवासी रावेन्द्र शहडोल पहुँचा।

■ 17 जनवरी

- दुनिया की सबसे ऊँची सरदार वल्लंभ भाई पटेल की प्रतिमा स्टेच्यू ऑफ यूनिटी के छह राज्यों के ट्रेन मार्ग से जुड़ गयी।

- किन्नौरः 103 वर्षीय श्याम सरननेगी ने हिमाचल प्रदेश में हुये पंचायत चुनाव में वोट डाला।

- शास्त्रीय संगीतकार उस्ताम गुलाम मुस्तफा खान (89) का निधन हो गया।

■18 जनवरी

- करांचीः भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के पोस्टरों के साथ पाकिस्तान में अलग सिंधुदेश की मांग को लेकर प्रदर्शन हुआ।

- लव जिहादा के खिलाफ प्रदेश में लाये गये धर्म स्वातंत्र्य अध्यादेश 2020 के तहत बड़वानी में पहला केश दर्ज किया गया।

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सोमवार को सोमनाथ मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष बनायें गये।

■ 19 जनवरी

- ऑस्ट्रेलिया की टेस्ट सीरीज में भारत ने जो कमबैक किया, वह 144 साल के टेस्ट

क्रिकेट के इतिहास का स्वर्णिम अध्याय बना।

- सूरतः डंपर का स्टीयरिंग व्हीलजाम, फुटपाथ पर सो रहे 19 प्रवासी मजदूरों पर चढ़ा 15 की मौत।

- चेन्नई : कैंसर विशेषज्ञ और अडयार इंस्टिट्यूट की प्रसिडेंट डॉ. वी शांता का निधन हो गया।

■ 20 जनवरी

- अमेरिका में राष्ट्रपति जो बाइडेन और उपराष्ट्रपति कमलादेवी हैरिस की शपथ के बाद कमला की भूमिका अहम होगी।

- सागर जिले के बंडा थाना क्षेत्र के बेरखेडी गांव की 11 साल की बच्ची से गेंगरेप के बाद उसका गला काटकर हत्या के आरोपी बड़े भाई रामप्रसाद व चाचा बंशीलाल अहिरवार को बंडा न्यायालय ने फांसी की सजा सुनाई।

■ 21 जनवरी

- आस्ट्रेलिया के आल्प्स पर्वत क्षेत्र में 7135 फीट की ऊँचाई पर बना मोटरबाइक म्यूजियम जलकर राख हो गया।

- देश के कोरोनारोधी पहला टीका कोविशील्ड मुहैया कराने वाले सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया के पुणे प्लांट में आग लग गई।

- अमरीका के 46वें राष्ट्रपति जो बाइडन ने पद संभाला उन्होंने पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के कई फैसलों पर रोक लगा दी।

■ 22 जनवरी

- नई दिल्लीः भजन सम्राट नरेन्द्र चंचल (80) का दिल्ली के अपोलो अस्पताल में निधन हो गया है।

- पश्चिम बंगाल के वन राज्यमंत्री राजीव बनर्जी ने पद से इस्तीफा दिया।

- मेघालय के जंगल में 150 फीट गहरी खाई में गिरने से असम के 6 मजदूरों की मौत हो गई।

■ 23 जनवरी

- उत्तर प्रदेश के पीलीभीत जिले के सिंधौरा गांव में एक नागा साधु की पीट-पीट कर हत्या कर दी।

- सीमा सुरक्षा बल ने जम्मू-कश्मीर के कठुआ जिले के हीरानगर सेक्टर में एक सुरंग क पता लगाया।

- अमेरीकी राज्य अलास्का के उत्कियाविक में 66 दिन बाल सूरज निकला।

■ 24 जनवरी

- नेपाल के प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली को उन्हीं की पार्टी ने निकला दिया।

- संयुक्त राष्ट्र (यू एन) ने अपने कर्मचारियों को पाकिस्तान एयर लाइंस से यात्रा न करने की सलाह दी।

- चीने ने लगातार दूसरे दिन रविवार को ताड़वानी वायुक्षेत्र में अपने 15 लड़ाकू विमानों की घुसपैठ कराई।

■ 25 जनवरी

- पद्य पुरुस्कारों की घोषणा की गई इनमें सबसे नाम जापान के पूर्व प्रधानमंत्री शिंजो आबे का है उन्हें पद्य-विभूषण से नवाजा गया।

- गलवान में शहीद हुये कर्नल संतोष बाबू महावीर चक्र से सम्मानित।

- संयुक्त राष्ट्र (यूएन) के बीस सदस्यीय उच्च स्तरीय परामर्श मंडल (एडवाइजरी

बोर्ड) में भारत की अर्थशास्त्री जयति घोष का भी नाम शामिल हुआ।

■ 26 जनवरी

- कृषि कानूनों के विरोध में गणतंत्र दिवस पर किसानों ने ट्रेक्टर परेड निकाली तो खूब बबाल हुआ । लाल किले पर उपद्रिवियों ने धार्मिक झंडे फहरा दिये।

- फ्रांस से भारत के लिये रवाना हुये तीन और रफाल फाइटर जेट पहुँचे।

- इटली के प्रधानमंत्री ग्यूसेप कोंते ने पद से इस्तीफा दे दिया।

■ 27 जनवरी

- जयपुर- कोटा राजमार्ग पर सदर थाने के पास मंगलवार रात 2 बजे तेज रफ्तार ट्रेलर की टक्कर से जीप सवार 8 लोगोंकी मौत हो गई है।

-टी.आर.पी फर्जी वाड़ा मामले में रिपब्लिक टीवी के सम्पादक अर्णव गोस्वामी के खिलाफ कांग्रेस ने मुंबई के समतानगर (कांदिवली) थाने में शिकायत दर्ज कराई है।

- जम्मूकश्मीर के कुलगाम में आतंकी हमले में सेना का एक जवान शहीद हो गया।

■ 28 जनवरी

- पाकिस्तानी सुप्रीम कोर्ट ने अमरीकी पत्रकार डेनियल पर्ल के हत्यारे पाकिस्तानी आतंकी अहमद उमर शेख को रिहा करने का आदेश दिया।

- पुलिस और प्रदर्शनकारियों में आमने सामने की स्थिति बनी भारी संख्या में पुलिस बल तैनात किया गया,गाजीपुर में धारा 144 लागू की गई है।

- गणतंत्र दिवस की परेड में यूपी की झांकी ने प्रथम स्थान हासिल किया।

■ 29 जनवरी

- मुंबईः समाजसेवी अन्ना हजारे ने शनिवार से प्रस्तावित अपना अनशन टाल दिया।

- तृणमूल कांग्रेस के वरिष्ठ नेता राजीव बनर्जी ने विधायक पद से इस्तीफा दिया।

- दिल्ली में इजरायल दूतावास के धमाके से अफरा तफरी मच गई।

■ 30 जनवरी

- अमरीका के कैलिफोर्निया में एक पार्क में लगी महात्मा गांधी की प्रतिमा को अज्ञात उपद्रवियों ने क्षतिग्रस्त कर गिरा दिया।

- विधायक रामबाई 10वीं कक्षा में फेल हुई।

- कांग्रेस एम एम सी प्रकाश राठौड़ कर्नाटक विधान परीषद में मोबाइल पर पोर्न वीडियो देखते पाये गये।

■ 31 जनवरी

- नगर निगम कर्मचारियों द्वारा बुजुर्गों को कचरा वाहन से शहर से बाहर छोड़ने पर इंदौर प्रशासन की किरकिरी के बाद कलेक्टर मनीषसिंह भगवान की शरण में पहुँचे।

- मॉस्कोः राजधानी सहित साइवेरिया व सुदूर पूर्व क्षेत्रों में नवालनी के समर्थक पुलिस से भिड़ गये 3000 से अधिक को हिरासत में लिया गया।

- श्रीनगरः तंगमार्ग में बर्फीले झरने के पास जमा सैलानी । उत्तरप्रदेश, हरियाणा, पंजाब, मध्यप्रदेश और राजस्थान के कुछ हिस्सों में पाला पड़ा।

दिशा बोध

परस्त्री-त्याग

1. जिन लोगों की दृष्टि धर्म पर रहती है, वे कभी चूककर (भूलकर) भी परस्त्री की कामना नहीं करते।
2. जो लोग धर्म से गिर गये हैं, उनमें उस पुरुष से बढ़कर मूर्ख और कोई नही हैं; जो कि पड़ौसी की ड्योढ़ी पर खड़ा होता है। अर्थात् पर स्त्री में आसक्त होता है।
3. निस्सन्देह वे लोग काल के मुख में है, जो सन्देह न करने वाले मित्र के घर पर हमला करते हैं ।
4. मनुष्य चाहे कितना भी श्रेष्ठ क्यों न हो, पर उसकी श्रेष्ठता किस काम की; जबकि वह व्यभिचारजन्य लज्जा का कुछ भी विचार न कर परस्त्री गमन करता है।
5. जो पुरुष अपने पड़ौसी की स्त्री को इसलिये गले लगाता है कि वह उसे सहज में मिल जाती है; उसका नाम सदा के लिए कलंकित हुआ समझो।
6. व्यभिचारी को इन चार बातों से कभी छुटकारा नहीं मिला-घृणा, पाप, भ्रम और कलंक।
7. सद् गृहस्थ वही है, जिसका हृदय अपने पड़ौसी की स्त्री के सौन्दर्य तथा लावण्य से आकृष्ट नहीं होता।
8. धन्य है उसके पुरषत्व को, जो पराई स्त्री पर दृष्टि भी नहीं डालता । वह केवल श्रेष्ठ और धर्मात्मा ही नहीं है, अपितु वह सन्त है।
9. पृथ्वी की सब उत्तम बातों का पात्र कौन है ? वही जो कि पराई स्त्री को कभी बहुपाश में नहीं लेता।
10. तुम कोई भी अपराध और दूसरा कैसा भी पाप क्यों न करो, पर तुम्हारे पक्ष में यही श्रेयस्कर है कि तुम पड़ौसी की स्त्री से सदा दूर रहो। अर्थात् पर स्त्री गमन में कभी भूलकर भी मत करो।

इसे भी जानिये

मध्यप्रदेश के राज्यपाल

मध्यप्रदेश का राज्यपाल भारत के मध्यप्रदेश का राज्यपाल होता है जिसकी नियुक्ति भारत के राष्ट्रपति द्वारा की जाती है। राज्यपाल का आधिकारिक आवास राजभवन है जो राजधानी भोपाल में स्थित है।

क्र.	नाम	पदग्रहण	पदत्याग
01.	डॉ. पट्टाभी सीतारमय्या	1 नवम्बर 1956	13 जून 1957
02.	हरिविनायक पटस्कर	14 जून 1957	10 फरवरी 1965
03.	के.सी. रेड्डी	11 फरवरी 1965	2 फरवरी 1966
-	पी.वी दीक्षित (कार्यवाहक)	2 फरवरी 1966	9 फरवरी 1966
04.	के.सी. रेड्डी	10 फरवरी 1966	7 मार्च 1971
05.	एस.एन.सिन्हा	7 मार्च 1971	13 अक्टूबर 1977
06.	एन.एन. वांचू	14 अक्टूबर 1977	16 अगस्त 1978
07.	सी.एम. पुनाचा	17 अगसत 1978	29 अप्रेल 1980
08.	बी. डी.शर्मा	30 अप्रैल 1980	25 मई 1981
-	जी.पी.सिंह (कार्यवाहक)	26 मई 1981	9 जुलाई 1981
09.	भगवत दयाल शर्मा	10 जुलाई 1981	20 सितम्बर 1973
-	जी.पी.सिंह (कार्यवाहक)	21 सितम्बर 1973	7 अक्टूबर 1973
10	भगवत दयाल शर्मा	8 अक्टूबर 1973	14 मई 1984
11	के.एम. चांडी	15 मई 1984	30 नवम्बर 1987
-	एन.डी.ओझा (कार्यवाहक)	1 दिसम्बर 1987	29 दिसम्बर 1987
12.	के.एम. चांडी	30 दिसम्बर 1987	30 मार्च 1989
13.	सरला ग्रेवाल	31 मार्च 1989	5 फरवरी1990
14	एम.ए.खान	6 फरवरी 1990	23 जून 1993
15.	मोहम्मद कुरैशी	24 जून 1993	21 अप्रैल 1998
16.	डॉ. भाई महावीर	22 अप्रैल 1998	6 मई 2003
17.	रामप्रकाश गुप्ता	7 मई 2003	1 मई 2004
-	कृष्णमोहन सेठ (कार्यवाहक)	2 मई 2004	29 जून 2004
18	बलराम जाखड़	30 जून 2004	29 जून 2009
19.	रामेश्वर ठाकुर	30 जून	7 सितम्बर 2011
20.	रामनरेश यादव	8 सितम्बर 2011	7 सितम्बर 2016
-	ओ पी कोहली (अतिरिक्त प्रभार)	8 सितम्बर 2016	जनवरी 2018
21.	आनंदीबेन पटेल	23 जनवरी 2018	29 जुलाई 2019
22.	लालजी टंडन	29 जुलाई 2019	30 जून 2020

आओ सीखे : जैन न्याय

शब्द अनुमान गर्भितवाद (वैशेषिक)

मूल अवधारणा -

1) शब्द प्रमाण नहीं हैं

2) शब्द प्रमाण अनुमान प्रमाण से भिन्न नहीं हैं।

पक्ष के तर्क –

1)शब्द और अनुमान समान ग्राही है।

2) शब्द और अनुमान की सामग्री एक ही है।

3) शब्द असंबद्ध अर्थ को कहता है ऐसा कहना अस्वीकार होता क्योंकी शब्द संबद्ध अर्थ को ही कहता है।

4) संबद्ध अर्थ का ज्ञान कराने के कारण शब्द और लिंग/हेतु एक ही होते हैं, क्योंकि शब्द और अनुमान एक ही सामग्री से उत्पन्न होते हैं।

5) अनुमान में साधन से साध्य का ज्ञान होता है वैसे ही शब्द में वाच्य और वाचक के संबंध का ज्ञान होता है।

6) शब्द और अनुमान में अन्वय व्यतिरेक रहता है।

7) शब्द में भी पक्ष धर्मता रहती है।

जैसे प्रत्यक्ष से धूम देखकर अग्नि का ज्ञान होता है वैसे ही शब्द सुनकर अर्थ का ज्ञान होता है।

8) शब्द केवल वक्ता की इच्छा में प्रमाण होता है। बाध्य अर्थ में प्रमाण नहीं है क्योंकि इसमें व्यभिचारी दोष आता है।

निष्कर्ष - उपरोक्त तर्कों के आधार पर शब्द अप्रमाणवाद के पक्ष में यह निष्कर्ष निकलता है कि अनुमान के अन्तर्गत शब्द का समावेश होजाता है। अतः पृथक् से शब्द प्रमाण मानने की आवश्यकता नहीं है।

आगम को अप्रमाण माननेवालेवाद के विपक्ष में जैन आचार्य अपनेअमोघ तर्कोके माध्यम से आगम को प्रमाण रूप सिद्ध करते है। वेतर्क निम्र है –

1) शब्द और अनुमान प्रमाण एक नहीं होता है, क्योंकि दोनों का विषय एक नहीं हैं। शब्द का विषय मात्र अर्थ है किन्तु अनुमान का विषय साध्य धर्म से युक्त धर्मी है।

2) यदि शब्द और अनुमान का विषय अभेद माना जायेगा तो प्रत्यक्ष और अनुमान में भी अभेद का प्रसंग आ जायेगा क्योंकि प्रत्यक्ष और अनुमान का विषय सामान्य विशेषात्मक वस्तु है।

3) सम्बद्ध अर्थ का ज्ञान कराने के कारण शब्द अनुमान नहीं हो सकता है। कारण, प्रत्यक्ष भी सम्बद्ध अर्थ का ही ज्ञान कराता है, अतः वह प्रत्यक्ष भी अनुमान हो जायेगा। जिस तरीके से प्रत्यक्ष प्रमाण सम्बद्ध अर्थ का ज्ञान कराने के बाद भी अनुमान से भिन्न रहता है उसी तरह शब्द भी अनुमान प्रमाण से भिन्न रहेगा।

4) तो फिर शब्द अनुमान से भिन्न क्यों नहीं है, क्योंकि शब्द प्रमाण की सामग्री अनुमान प्रमाण से भिन्न है। अतः अभिन्न विषय होने से शब्द को अनुमान मानना उचित नहीं है।

5) शब्द अर्थ में अन्वय-व्यतिरेक भी नहीं होता है, क्योंकि शब्द तो मुख में रहता है और अर्थ भूमि पर रहता है। जिस काल में शब्द हो उस काल में अर्थ अवश्य हो ऐसी भी बात नहीं है, जैसे रावण।

6) शब्द और अर्थ में अन्वय-व्यतिरेक तो हम भी मानते हैं किन्तु इस अन्वय-व्यतिरेक तो प्रत्यक्ष में भी पाया जाता है। अतः प्रत्यक्ष भी अनुमान हो जायेगा।

7) बाह्य अर्थ ही शब्द का विषय होता है। शब्द उच्चारण की इच्छा का नाम विविक्षा है। क्योंकि उसका विषय तथा उसकी उत्पादक सामग्री अनुमान से भिन्न है।

अतः वक्ता की इच्छा से और बाह्य अर्थ में प्रमाण होते हुये शब्द अनुमान नहीं हो सकता है।

कविता

पार्श्व स्तवन

चमत्कार चित् नित्य स्वरूपी कर्म शत्रु जित् गुणधामी
शिवपथ दाता भाग्य विधाता पार्श्वनाथ अर्न्तयामी
तब अनंतगुण सुमरण करके वीतराग की पा शरणा
अष्ट द्रव्यमय अर्घ हाथ ले पूजूँ प्रभु तेरा चरणा ॥
पार्श्वनाथ के गुण गाने से जिन आतम का बोध मिले
अशरण अशुभ अनित्य अनातम जग दुख से प्रभु मुक्ति मिले
दुख के सागर ज्ञान दिवाकर संकट मोचक है स्वामी
अष्ट द्रव्य की थाल सजाकर अर्घ चढ़ाऊँ जनणामी ॥
चार घातिया कर्म नशाये केवलज्ञानी देव बने
शुक्ल ध्यान की परिणति से प्रभु सर्व नशाये कर्म धने
मन मंदिर में जिन मंदिर के देव वसाऊँ अघहारी
अर्घ चढ़ाऊँ प्रभु गुण गाऊँ देव जिनेश्वर मनहारी ॥
ध्यान अग्नि से कर्म जलाकर अर्हत् पद पाया स्व में
आत्म दोष सब किये नाश प्रभु गुण अनंत पाये निज में
कमलासन पर विराजमान हो संबोधा सारे जग को
उपकारी पद ध्यान लगाऊँ पूजूँ विश्व जिनेश्वर को ॥

भारतवर्षीय विद्वत संगोष्ठी (आत्म चिंतन कार्यशाला) सम्पन्न

सागर-एलक श्री सिद्धांतसागर जी महाराज के सान्निध्य में श्री दिगम्बर जैन वर्णी भवन मोरा जी सागर में दिनांक 06-07 फरवरी 2021 को शुद्ध उपयोग और गुणस्थान व्यवस्था, वीतराग सम्यग्दर्शन की सम्भावना वीतराग मुनि में ही क्यों, सराग चरित्र हेय कब और क्यों, सराग चरित्र और गुणस्थान व्यवस्था, द्रव्य और पर्याय की व्यवस्था, क्या पर्याय के बिना द्रव्य रह सकती है, द्रव्य लिंगी मुनि का स्वरूप और प्रकार, क्या द्रव्य लिंगी मुनि मिथ्यादृष्टि ही होते हैं या सम्यग्दृष्टि भी, क्या द्रव्य मात्र ध्रुव है या उत्पात व्यय ध्रुवमय है, क्या आत्मा त्रैकालिक शुद्ध हो सकती है, क्या शुभ उपयोग औदयिक भाव है या औपशमिक भाव, क्या निमित्त सर्वथा अकिंचतकर है , पुण्य हेय कब और क्या, पुण्य हेय या पुण्य का फल हेय हेय आखिर कौन, क्या देव शास्त्र गुरु पर होने से कुगुरु कुदेव कुशास्त्र के समान है, क्या आवश्यकों का पालन उपेक्षा पूर्वक करना चाहिये, यह सम्यक अवधारणीय है, धन अवतार की समीक्षा किस रूप में की जा सकती है, सूर्य कीर्ति तीर्थंकर की अवधारण कितनी काल्पनिक कितनी यतार्थ, निश्चय सम्यकदर्शन क्या चौथे गुणस्थान में है या नहीं, गुणों की समूह को द्रव्य की परिभाषा मानना कितना उचित है, क्या व्यवहारनय सर्वथा मिथ्या है, अथवा सत्यार्थ भी है, पंचसमवाय कार्य व्यवस्था जैन धर्म कितनी मान्य है, स्वरूपाचरण चारित्र एवं गुणस्थान व्यवस्था, सम्यग्दृष्टि के आश्रव बंध के अभाव क्या आगम संवत है, ज्ञानी कौन ? आगम अध्यात्म की दृष्टि में , क्या शुभ का व्यवहार असार है, सप्तम गुणस्थान में प्रवृत्ति की सत्ता अथवा प्रवृत्ति सप्तम गुणस्थान की संभावना, आचार्य कुंदकुंद की दृष्टि में दर्शन शब्द के अर्थ, अष्टपाहुड़ ग्रंथ में दर्शन शब्द की मीमांसा, क्या दर्शन शब्द का अर्थ जिनलिंग है आचार्य कुंदकुंद की दृष्टि में, क्रमबद्ध पर्याय और नियतवाद में पर्यायवाचित्व, क्या सरागचारित्र परंपरा से मोक्ष का कारण है, क्या अकालमृत्यु आगम संवत है, साधु के निमित्त से बना हुआ भोजन क्या उद्देष्ट है उद्देष्ट का अर्थ क्या है, स्निग्ध बाह्य उपचार क्या लेप आहार है लेह्य आहार और लेपहार क्या एक ही है आदि निम्न विषयों पर संगोष्ठी सम्पन्न हुई। जिसमें डॉ.आशीष जैन आचार्य, शाहगढ़, पं. महेश जी जैन सतना, डॉ. जयकुमार जैन मुजफ्फरनगर, डॉ. ब्र.अनिल जैन, जयपुर, पं. अंकित शास्त्री राहतगढ़, पं. ज्ञानचन्द जी सागर, ब्र. अंजना दीदी सागर, ब्र. राकेश भैया सागर, पं. सुनील सुधाकर शास्त्री द्रोणगिरि, ब्र. भरत भैया सागर, पं. विनोद जैन, रजवांस, पं. राजकुमार जैन शास्त्री सागर, पं. नन्हेभाई जैन सागर, पं. विपुल जैन शास्त्री राहतगढ़, ब्र. किरण दीदी सागर, पं. उदयचन्द्र जैन शास्त्री सागर, पं. राजेन्द्र जैन सुमन, सागर, पं. अंकित शास्त्री सागर, पं. अरिहंत शास्त्री सागर, पं. अभिषेक जैन शास्त्री सागर, डॉ. निर्मल जैन शास्त्री टीकमगढ़, ब्र. सुसीमा दीदी सागर, ब्र. अशोक भैया लिधौरा, ब्र. सविता दीदी पिपरई, पं. मनोज जैन शास्त्री सागर, पं. अरूण जैन शास्त्री जबलपुर, पं. संजीव जैन शास्त्री महरौनी, डॉ. पं. पंकज जैन, भोपाल, डॉ. मुकेश जैन शास्त्री, दिल्ली, डॉ. आशीष जैन शास्त्री, दमोह, डॉ. ऋषभ जैन फोजदार दमोह, ब्र. जिनेश मलैया इंदौर, डॉ. शैलेष जैन जयपुर, पं.

विनीत जैन शास्त्री साढूमल, पं. पुलक गोयल, जबलपुर, पं. राजेश जैन शास्त्री, सागर, पं. श्रेयांश जैन शास्त्री सागर, पं. मुकेश जी शास्त्री, ललितपुर, ब्र. वीरेन्द्र जैन शास्त्री हीरापुर, पं. राकेश जैन शास्त्री, योगाचार्य, डॉ. अनिल जैन शास्त्री गुढा सागर, पं. आशीष जैन शास्त्री बंडा सागर, पं. शिखरचंद जी साहित्याचार्य सागर, पं. राजेश जैन शास्त्री सागर, ब्र. रजनी दीदी इंदौर, ब्र. समता दीदी सागर, ब्र. सुशीला दीदी सागर, ब्र. सरोज दीदी, सागर, ब्र. सुमन दीदी इंदौर, ब्र. अंजना दीदी, ब्र. चन्द्रकला दीदी, ब्र.रेखा दीदी, ब्र. नीलम दीदी, ब्र. विवेक भैया, अरिहंत शास्त्री, ब्र. मुन्नालाल जी शास्त्री गंजबासौदा, ब्र. सविता जैन, ब्र. अल्पना दीदी, ब्र. सुधा दीदी, ब्र. सरोज दीदी, ब्र. अनीता दीदी, ब्र. राजुल दीदी, ब्र. उषा दीदी ताजपुर, ब्र. भरत भैया सागर, ब्र. अंकित भैया धनैटा, ब्र. मंजू दीदी, ब्र. शैली दीदी, ब्र. संध्या दीदी आदि विद्वानों भाग लिया। संगोष्ठी में 6 सत्रों में हुई **प्रथम सत्र-** के अध्यक्षता डॉ.ब्र. अनिल जैन प्राचार्य जयपुर ने की तथा सारस्वत अतिथि ब्र. जिनेश मलैया प्रधान संपादक इंदौर, ब्र. समता दीदी इंदौर रहे। द्वीप प्रज्जवल महेश जैन बिलहरा, महेन्द्र सोधिया सागर ने किया। मंगलाचरण श्रीमति रूपाली जैन ने किया, मंच संचालन डॉ मुकेश जैन एवं डॉ. आशीष जैन आचार्य शाहगढ़ ने किया। इसमें चार आलेखों का वाचन किया गया। **द्वितीय सत्र-** में दोप. 1.30 बजे से प्रारंभ हुआ जिसमें मंगलाचरण श्रीमति खुशबु जैन, द्वीप प्रज्जवल एवं चित्र अनावरण श्री संतोष जैन पटना वाले। अध्यक्षता पं. विनोद जैन रजवास, सारस्वत अतिथि ब्र. जिनेश मलैया प्रधान संपादक इंदौर, पं. शिखरचंद्र साहित्याचार्य, मंच संचालन सुनील सुधाकर शास्त्री द्रोणगिरि ने किया। इस सत्र में 10 आलेखों का वाचन किया गया। **तृतीय सत्र-** सांय 7 बजे मंगलाचरण यशिका जैन, अध्यक्षता ब्र. जिनेश मलैया इंदौर, सारस्वत अतिथि पं. राजेन्द्र जैन सुमन सागर, मंच संचालन पं. अभिषेक जैन शास्त्री ने किया। इसमें चार आलेखों का वाचन किया गया। **चतुर्थ सत्र-** 7 फरवरी प्रातः 7 बजे से अध्यक्षता डॉ. ऋषभ जैन फोजदार दमोह, सारस्वत अतिथि ब्र. सुशीला दीदी, ब्र. डॉ. नीलम दीदी, ब्र. डॉ. रेखा दीदी पूर्व इंस्पेक्टर सागर रहे, मंच संचालन पं. अरूण जैन शास्त्री जबलपुर ने किया। इसमें 7 आलेखों का वाचन किया गया। मंगलाचरण श्रीमति कीर्ति टडैया, द्वीप प्रज्जवल चित्रानावरण राजेश जैन पटना वालों ने किया। **पंचम सत्र-** दोप 1.30 बजे से मंगलाचरण श्रीमति छवि जैन, द्वीप प्रज्जवल एवं चित्रानवरण श्री ऋषभ जैन बांधरी वाले, अध्यक्षता ब्र. राकेश भैया सागर, सारस्वत अतिथि ब्र. जिनेश मलैया इंदौर, डॉ. ब्र. अनिल भैया जयपुर रहे इसमें सात आलेखों का वाचन किया गया तथा सभी आमंत्रित विद्वानों का सम्मान किया गया। **छटवां सत्र-** सांय 7 बजे मंगलाचरण श्रीमति दीपा जैन, मंच संचालन डॉ. आशीष जैन शास्त्री शाहगढ़, द्वीप प्रज्जवलन चित्रानावरण श्री रविन्द्र कुमार जैन मस्त ने किया। अध्यक्षता ब्र. जिनेश मलैया इंदौर ने की जिसमें सात आलेखों का वाचन किया गया। सत्र के बाद सभी आलेखों की समीक्षा अध्यक्षों तथा एलक श्री सिद्धांतसागर महाराज जी ने की। उपरोक्त संगोष्ठी की पुस्तक छपवाने का निर्णय लिया गया। श्री महेश जैन बिलहरा वाले सागर ने इस पुस्तक को छपवाने के लिये अपने भाव व्यक्त किये।

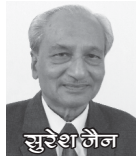

क्रमांक-3 वरिष्ठ नागरिक

दो पहलू

एक पहलू- इस वास्तविकता है कि समय बहुत तेजी के साथ बदल रहा है और इस परिवर्तन ने जिंदगी के अर्थ ही बदल दिये हैं । बदला हुआ नया वक्त, नये लोग, नये आदर्श, नई संस्कृति तथा ऐसे ही दूसरे शब्द जिंदगी की व्याख्या के लिये प्रयुक्त होने लगे हैं तथा इस सबका, सबसे ज्यादा असर उन लोगों पर पड़ा है जिन्हें हम बुजुर्ग कहते हैं। वृद्धावस्था में जिदंगी की व्याख्या हमारे समाज में आज जिन शब्दों में और जिस प्रकार से की जा रही है इससे मन को बहुत कष्ट होता है। तेजी से भागते हुये समय की गति ने जीवन और जीवन शैली को बहुत गहराई से प्रभावित किया है। जहाँ लोंगों की आयु सीमा बढ़ी है वहां आधुनिकता, सामाजिक आर्थिकता और आजादी, प्रतिस्पर्धा आदि अनेक कारणों ने संयुक्त परिवार की परम्परा को बहुत कमजोर किया है। इस सबका सबसे गहरा असर बढ़ती उम्र के उन लोगों पर पड़ा है जिन्हें बुजुर्ग कहा जाता हैं।

वृद्धावस्था निर्बल, निरर्थक, निराश या अपमानित होने वाली अवस्था नहीं है बल्कि समाज में सिर ऊँचा करके बहुत सम्मान एवं शान से जीने वाली अवस्था है। यह आकर्षक उम्र सबको एक बार ही मिलती है, जिसका भरपूर फायदा उठाया जाना चाहिये बुर्जुगावस्था जीवन का अंत नहीं होती। यह जीवन धारा की वो कड़ी है जहाँ से जीवन के नये अहसास शुरु होते हैं। अकसर यह देखने में आता है कि घर की जिम्मेदारी युवकों के हाथ में आते ही बुजुर्गों की अवहेलना शुरु हो जाती है। युवा यह समझते है कि बुजुर्गों के विचार बीते समय के हैं और दकियानूसी भी लेकिन शायद हम यह भूल जाते हैं कि बड़े-बुजुर्ग ज्ञान तथा अनुभव के भंडार होते हैं । हम उनके अनुभव का लाभ उठाकर कई समस्याओं से बच सकते हैं या आसानी से उनका हल निकाल सकते हैं। उनका जीवन तो ऐसी व्यावहारिक पुस्तक है जो ठीक तरह से पढ़ी जाये तो युवाओं को मार्गदर्शन मिल सकता है। युवावस्था में लोग जोश और जुनून के चलते बुजुर्गों की प्रायः उपेक्षा कर जाते हें।

दूसरा पहलू- बालों में झलकती बर्फ सी सफेदी, झुरियों से सिकुड़ा निस्तेज चेहरा, बिना दांतों का पोपला सा मुँह, अपना ही भोज उठाने में असमर्थ झुके हुये कंधे... वृद्धावस्था की परिभाषा में ऐसी न जाने कितनी ही उपमायें शामिल होती हैं, जिनमें से न तो कोई आकर्षित करती है, न उनके करीब जाने को बाध्य करती है.... और उसमें भी बोझिल होता है उनका बात-बात में मीन-मेख निकालना, बिन मागें सलाह, बड़ी-बड़ी नसीहतें देना और बेचारा परिवार या तो बेमन से उनसे जूझने का मजबूर होता है या फिर जान छुड़ाकर बच निकलने की भरपूर कोशिश में जुटा रहता है जब तक कोई बड़ी मजबूरी या लालच न हो, उन्हें झेलने के लिये कोई तैयार नहीं होता सुनने पढ़ने में ये शब्द कुछ कड़वे जरूर है, लेकिन सच्चाई इससे भी कहीं ज्यादा कड़वी, कहीं ज्यादा क्रूर होती है, वरना उम्र के आखिरी मोड़ पर इतनी जिल्लत इतनी यातनायें नहीं भोगनी पड़ती इन बुजुर्गों को बुढ़ापे के शारीरिक लक्षण तो दिखते हैं लेकिन मानसिक बुढ़ापे को किसी सीमा में नहीं बांधा जा सकता।

आइये समझने की कोशिश करें कि बुढ़ापा है क्या।

शारीरिक स्तर पर देखा जाये तो बुढ़ापे में शरीर में कई खामियां व कई रोग पैदा होने लगते हैं। डाक्टर्स के मुताबिक इस उम्र में बुजुर्गों को देखने और सुनने की ताकत में कमी आ जाती है। 60 की उम्र के बाद आमतौर पर लोगों की आंखों में कुछ समस्यायें पैदा होने लगती हैं। किसी हिलते हुये ऑब्जेक्ट पर नजर टिकाना मुश्किल हो जाता है। कुछ बुजुर्गों को सुनने में परेशानी आने लगती है, जिसके निदान के लिये हियरिंग ऐड का इस्तेमाल किया जाता है। सुनने की ताकत मर्दो के मुकाबले औरतों में कम होती है। मानसिक शक्ति की बात की जाये तो इस उम्र में दिमाग की सेहत में भी गिरावट आ जाती है। दिमाग किसी का चेहरा याद रखना, फोन नम्बर याद रखना और लोगों से घुलने-मिलने जैसे बेसिक काम करने में असक्षम होने लगता है।

कुछ उपाये- वृद्धावस्था की यह परेशानियां ऐसी भी नहीं है, जिनसे ग्रस्त होने पर इंसान डिप्रेशन में चला जाये। यह सारी बीमारियां तो आम जिंदगी की आम बीमारियां है। हमेशा याद रखना चाहिये कि यह आकर्षक उम्र सबको एक बार ही मिलती है, जिसका भरपूर फायदा उठाया जाना चाहिये। क्योंकि वृद्धावस्था सबसे अधिक प्रसन्नता भरा समय है। सबसे ज्यादा खुश लोग उम्रदराज हैं और वृद्ध लोग सामाजिक रूप से भी सक्रिय होते हैं। उम्र के साथ प्रसन्नता बढ़ती है क्योंकि वृद्ध लोग अपनी महत्वकांक्षाओं को कम करना सीख जाते हैं। जबकि आम आदमी हमेशा सोचता है कि ढलती उम्र जीवन के सर्वश्रेष्ठ पड़ाव से दूर होती है। अनेक कारणों जैसे बीमारियों अपने प्रिय और मित्रों के मरने आदि से अवसाद पैदा होता है लेकिन वृद्ध लोग अपनी युवावस्था के बाद सामान्यता सन्तोष करना और खुश रहना सीख लेते हैं।

सुझाव- बुजुर्गों तथा युवाओं के लिये यह सुझाव है यदि घर में सुख शांती चाहत हो तो हर हाल में मस्त रहो, मगन रहो, खुश रहो, चिंतन करो और सब कुछ परमात्मा पर छोंड़ दो सौ बातों की एक बात- जितना अधिक से अधिक हो सके चुप रहो। **मान में बड़ी शक्ति है।**

कविता

कर्ता

❊ ब्र. सुदेश जैन ❊

बाहर तोर धन अंधकार है,
भीतर उजियारा
कर्म, पटल में छिपा आत्म का ज्ञान सूर्य का
दमक नहीं पर कम सूरज की
प्रगट नहीं भाई !
कर्म-पटल कुछ छिना हुये तब
हम **नर गति** पाई।
जनम-मरण, संसार-यात्रा के कर्ता हम की।
सुख-दुख जो भी हमको मिलता,
अपनी ही करनी।
आँख खोल नहिं देखे हमने,
मद माया फंदे ।
फँसे खोल नहिं देखे हमने,
मद-माया फंदे।
फँसे स्वयं ही होकर भैया।
इन्द्रिय-सुख अंधे
हमें पता है क्या है अच्छा,और बुरा क्या है।
पर हमने खुद से नहिं पूछा,
हित-अनहित क्या है।
आत्म प्रभू हित, अनहित जाने सजग रहे पूछें।
भला करें जो मन खुद बोले,
नहिं अनहित रीझें

प्रवचन-आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

समझो भावना गाय की

अभी तक हमने कहीं से नहीं सुना कि पिता की कोई भाषा होती है। मां की भाषा होती है। ये अवश्य है कि अक्षरी व निरक्षरी भाषा होती है। यदि गाय को आपने पाला है तो वह अपनी भाषा में समझदारों को भी समझा देती है। उससे लोग प्रफुल्लित हो जाते हैं। गाय का भाव संप्रेषित हो जाता हैं । भाषा भाव, भंगिसा से भी समझ में आती है। मन के भाव को भी वह समझा देती है। इससे आनंद का अनुभव होता है। उक्त उद्गार आचार्य श्री विद्यासागर ने दयोदय तीर्थ में बुधवार को मंगल प्रवचन में व्यक्त किये। आचार्य श्री ने कहा कि जो भाषा नहीं समझता, उसे भी भावों से समझ में आ जाता है। इस तरह साफ है कि भाषा और भाव संगम अभिव्यक्ति का आधार हैं।

संक्रांत सानु सम्मानित :- आचार्य श्री सान्निध्य में लेखक संक्रांत सानु को सम्मानित किया गया। उनकी पुस्तक **अंग्रेजी माध्यम का भ्रमजाल** का मराठी संस्करण विमोचित हुआ। इसके जरिये उन्होंने भारतीय शिक्षा पद्धति का महत्व बताया है। श्री दिगम्बर जैन संरक्षिणी सभा जबलपुर, दयोदय तीर्थ, तिलवाराघाट, जबलपुर और पुर्णायु आयुर्वेद चिकित्सालय व अनुसंधान विद्यापीठ से जुड़े सदस्यों ने स्वागत किया।

युवाओं को मार्गदर्शन:- आचार्य श्री ने स्कूल, कॉलेज के युवाओं को मार्गदर्शन दिया। दिशा बोध के इस कार्यक्रम में आचार्य श्री ने युवाओं की जिज्ञासाओं का सटीक समाधान किया।

उन्हें भारतीयता का महत्व समझाया। संस्कृति शिक्षा के ज्ञान से युवा उत्साहित दिखे।

कहानी

रावी की निशानी

एलक सिद्धांतसागर जी महाराज

संघर्षी हरिशचन्द्र पथ संचलन से लौटा था विजय दशमी का दिन अन्याय पर न्याय की विजय का दिन सदैव उत्साह के साथ मनाया जाता है सारे सागर में सड़कों पर धूम धाम का वातावरण ही दिखाई दे रहा था चारों तरफ देवी के पंडालो से भक्ती गीतों की धुने वायु मंडल में धुल मिल रही थी शरद ऋतु होने के कारण आसमान का सूरज उग्रता के साथ सब चीजों को तपा रहा था सागर के मुख्य मार्गों में भरी दोपहरी 30 सितम्बर को पथ संचलन राष्ट्रीय स्वयं संघ का धूम मचा रहा था प्रशासन व्यवस्था बनाने में व्यस्त था सैकड़ो स्वयं सेवक पंक्तिबद्ध चल रहे थे दिव्य घोष की मधुर धुने देश भक्ति के गीतों की तर्जों का अनुकरण कर रही थी शंखनाद बिगुलनाद इस तरह से हो रहा था मानो युद्ध का अभ्यास ही हो रहा हो अथवा रावण पर आक्रमण करने के लिये लंका की ओर राम की सेना बढ़ रही हो विजयदशमी का पर्व आज साकार हो रहा हो।

पथ संचलन का समापन एक बड़े मैदान में हुआ एवं एक अच्छे बौद्धिक के साथ हर स्वयं सेवक में देश भक्ति की उमंग उनके दिल और दिमाग में मचल उठी थी समरसता की भावना सच मुच में साकार हो गई थी। भारत के साथ हुए छल-बल और विभाजन का दुखान्त दर्द हर स्वयं सेवक ने समझा था बौद्धिक भाषण देने वाले नेताजी हरिशचन्द जैन ने अपने बौद्धिक को वन्दे मातरम् के घोष से प्रारंभ किया था भारत पाकिस्तान के विभाजन की कटु स्मृतियाँ उन्होंने उडेलना प्रारंभ कर दी थी।

हरिशचंद्र जैन नेता जी ने अपनी बात कहना प्रारंभ किया देश भक्ति के रंग हुये स्वयं सेवको जिस पथ पर तुमने चलना प्रारंभ किया है वह पथ आपने स्वयं स्वीकार किया है आप अच्छी तरह से जानते होंगे कि यह भारत माता के प्रति भक्ति की अभिव्यक्ति है इस रास्ते पर कठनाइयों के कंटक आपको पग-पग पर मिलेंगे और आपके पगों में निश्चित तौर पर चुभेगे और आगे बढ़ते रहना सिर्फ आपकी भक्ति का जुनून माना जायेगा।

प्रिय स्वयं सेवको आज हमारा

भारत आजाद जरूर हो गया है किन्तु हमने अधूरी आजादी पाई है आज का दिन अगर हम याद करें तो पाकिस्तान ने अभी अभी हमारे भारत देश पर युद्ध थोप दिया लेकिन हमारे वीर सैनिकों ने इस युद्ध का जबाब पाकिस्तान को बखूवी दिया और याहिया खान और जुल्फकार अली भुट्टों के ख्वावों पर पानी फेर दिया वे सोचते थे हम भारत को परास्त करके उसके सीने पर पाकिस्तानी घुटना रखकर कश्मीर को अपने कब्जे में कर लेगे लेकिन उन्हें ऐसा ज्ञात नहीं था कि पांसे पलट जायेंगे और भारत के वीर सैनिक और सम्पूर्ण भारत की जनता हमारे दांत खट्टे कर देगी और हमें लाहौर के किले में जाकर जान बचाकर दुबकना पड़ेगा।

पाकिस्तान ने सोचा था कि कश्मीरी मुसलमानों को भड़काकर उन्हें पी ओ के में मिला लेंगे लेकिन श्रीमति इंदिरा गांधी की कूटनीति और भुजीबर रहमान के विद्रोह ने पाकिस्तान को ही खण्डित कर दिया और बांग्लादेश के रूप में नये देश का उदय हो गया यही पाकिस्तान को सबसे बड़ी चोट लगी लेकिन पाकिस्तान वह देश है वह कई बार पिटने के बाद भी लड़ने को तैयार रहता है पाकिस्तान में आम आदमी की इतनी दुर्दशा है कि वहां सामान्य सी सुविधायें भी उपलब्ध नहीं हैं। सिर्फ पाकिस्तान की सत्ता पर वही बैठता है जो भारत के प्रति नफरत फैलाने में सफल होता है। पाकिस्तान का ज्यादातर शासन सेना ही सम्भालती है वहां लोकतंत्र का सम्मान नहीं है वहां न्याय की आवाज को कुचला जाता है आवाम को आवज को बन्दूक की नोंक पर खामोश कर दिया जाता है विश्व के जितने भी देश हैं उनमें मुस्लिम देशों में हिंसा आतंक का जहर सबसे ज्यादा फैला हुआ है परन्तु भारत का हर मुसलमान शान सौकत के साथ जी रहा है लेकिन पाकिस्तान का मुसलमान गरीबी भुखमरी शोषण से निरन्तर जूझ रहा है मुसलमान के साथ भेद भाव कर रहा है। मुसलमान-मुसलमान को ही गुलाम बनाकर रखना चाहता हैं भारत का मुसलमान हिन्दुओं के साथ सम्मान के साथ रहता है।

समस्या यह है कि पाकिस्तान हमेशा भारतीय मुसलमानों को भारत के प्रति ही भड़काता रहता है भारत के मुसलमानों को पाकिस्तान गृह युद्ध के लिये उकसाता रहता है परन्तु हमने सन् 1971 के युद्ध में देखा कि भारत के मुसलमान ने कंधे से कंधा लगाकर पाकिस्तान को शिकस्त दी। लेकिन कुछ मुसलमान युवा आज भी ऐसी कुछ हरकतें करते हैं जो विभाजनकारी होती हैं। मैं आज उन मुसलमान अपनी मां है इसे डायन नहीं कहा जा सकता है सिक्खों को भड़काकर पाकिस्तान खालीस्तान बनबाने का षड्यंत्र रच रहा है वह बदला लेना चाहता है पाकिस्तान के विभाजन का बांग्लादेश बनने का साथ ही वह सच से मुंह मोड़कर भारत की आत्मा को दुखी करना चाहता है लेकिन मेरा यह कहना है कि पाकिस्तान के हर षड्यंत्र को हम विफल कर सकते हैं ।

एक मात्र अपनी देश भक्ति शस्त्र से।

प्रिय स्वयं सेवको किसी राष्ट्र में ताकत नहीं होती है जो दुश्मन का हरा दे किन्तु देशभक्ति में वह ताकत होती हैं जो हर शक्तिशाली दुश्मन को धूल चटा सकती है मुझे वो दिन याद है जब मैं लाहोर की जमी पर संघ शाखा का ध्वज फहराया करता था आज मैं बता देना चाहता हूँ कि भारत पाक के विभाजन के समय हिन्दु माता-बहनों के साथ जो दुर्व्यवहार हुआ है उसकी गवाही मेरी आंखे नहीं दे सकती हैं परन्तु इन आंखो जो अत्याचार देखा उसका बयान मेरी जिह्वा ही कर सकती हैं तो मित्रों आज के पथ संचलन में मेरा मन कह रहा है कि आप सबके सामने यह बता दूँ कि आज मैं 61 साल का हो चुका हूँ। वे दिन मेरी आंखों के सामने तैर रहे है किसी फिल्मों की तरह पलकों पर फिरने लगते हैं वे ऊँची इमारते सूनी सड़के जनशून्य भवन उन पर पुते हुये ओम मैंने देखे हैं अपनी जायदाद छोड़कर हिन्दु भारत की ओर भगे थे मुझे यह पता नहीं था कि लाहौर भी पाकिस्तान में आ रहा है हम तो यही समझते कि लाहौर हम लोगों का कुछ भी बिगाड़ने वाला नहीं हैं। परन्तु स्थिति कुछ विपरीत तो देखने को मिली हमारी माता बहनों को पकड़ पकड़ कर बाड़े में बन्द किया गया उन्हें निर्वस्त्र करने की कोशिश की गई हमें तो ऐसा लगता था की रावण कोई सेना आकर आक्रमण कर रही हो रावण ने भी इस निम्न स्तर पर गिरकर कोई कार्य नही किया हिन्दु माता बहनों को जबरन मुसलमान बनाने का प्रयास किया गया मुझे एक बात याद आ रही है। उसे आप लोग ध्यान से सुने प्रियं स्वयं सेवको में 12 अगस्त को अपनी स्वयं-सेवकों की टोली लेकर उन स्थलों पर गया जहाँ हिन्दु लड़कियों को जहां एक मुलता कलमा पड़कर मुसलमान बना रहा था। हम लोगों ने वहां अपनी शक्ति का प्रदर्शन करके उन लड़कियों को उन मुसलमानों के कस्बे से छुडाया हम लोगों को भी समता के लिये मुसलमान वेशभूषा अपनानी पड़ी पहले तो हम लोगों ने उन्हें समझाया की कुरान शरीफ में कहीं नही लिखा है। किसी बालिक या नावालिक लड़कियों को जबरन मुसलमान बनाया जाये। और मौलवी से यह भी पूछा की बताओं कुरान में कहा जायेज बताया गया है कि दूसरों के धर्म को जबरन बदलकर स्लाम में लाया जाये। तब वह मौलवी हम लोगों के सामने यह कहने लगा की हमारी गलती हो गई। और हम इन सब लड़कियों को खुलता करते हैं। और वह उस मकान से भाग गया। हम लोगों ने यह सोचा कि रात में हम जहां जायेंगे इन लड़कियों को लेकर लेकिन हमारे साथियों ने कहा विश्वास मत करना ये आदमी कब धोखा दे जायें।

इसीलिये इस स्थान पर रूकना हमेशा जोखिम भरा ही है। हम लोगों ने दूसरा स्थान खोजा और एक स्वयं सेवक के सुरक्षित स्थान पर रात बिताना निश्चित किया परन्तु सबह होते होते हमने उन सब लड़कियों को रावी नदी के उस पार कर दिया। अब बारी हम लोगों की थी पर मन ये कह रहा था। कि अभी और कुछ बहनों को सुरक्षित स्थान पर भेज देना चाहिये। इसी

तारतम्ब में हम लोगों ने एक स्थान पर और पहुंचने की कोशिश की वहां पर भी कुछ माता बहनों को केंद कर लिया गया था। और नीलामी चल रही थी। हमने वहाँ पर भी बुद्धि से काम किया और एक बहुत अच्छी तरकीव सुना दी। हम लोगों को कलमा तो याद हो गये थे पर नवाज की पूरी अदायें याद नहीं थी नवाज पड़ने का वक्त हो गया था। सुबह के 5 बजने वाले थे। बारिश तेज गिरने लगी थी। सारी औरते खरीदने वाले लोग एक-एक करके खिसकने लगे थे। हम लोगों को लगा एक बार फिर हमें विजय प्राप्त हुई है। भारत माता की आवरू बचाने का एक पुण्य लाभ हमें फिर मिल गया है। उन बहनों का भी हमने पुल पार करा दिया तब मेरे मित्र महावीर भाई ने कहाँ अब हम भारत की सीमा पर पहुँच जायें। क्योंकि बहुत दूर से आवाज आ रही है। अल्ला हूँ अल्ला की नवाज के बाद ये सब इकट्ठे होकर हमारे ऊपर ही हमला बोलेगें। हमसे जितना बन सकता उतना राष्ट्र धर्म हिन्दुव्यः धर्म निभाया अब हमारा विचार यह कहता है कि आज 15 अगस्त हो चुका है। भारत में भले ही आजादी का जश्न मनाया जा रहा हो परन्तु नवनिर्मित पाकिस्तान में तो हिन्दुओं का कत्ले आम हो रहा था। चारो तरफ हिंसा का तांडव मचा हुआ था हिन्दुओं के जान मात पर आ पड़ी थी मुलतान के जैनों ने मंदिर के सभी भगवानों को हवाई जहाज में रखकर जयपुर भिजवा दी थी। लक्ष्मी नारायण का मंदिर खाली हो गया था हिंगलाज के मंदिर पर ताले डल गये थे बुद्धों के मंदिर तोड़ दिये गये थे। चारों तरफ लाहौर किरचीं सहित संपूर्ण सिन्हा प्राप्त में अफरा तफरी मच गई थी। सरकारी भवनों पर चांद सितारे के झण्डे फहरा चुके थे। रक्षक ही भक्षक बन गये थे। तीन दिन के भीतर कई संघ के स्वयं सेवकों की हत्यायें हो चुकी थी मुसलमानों के झुण्ड के झुण्ड आकर आगजनी कर रहे थे। सेना और पुलिस दोनों ही बेवफा हो चुकी थी। हम लोग जब लाहौर की रावी नदी को पार करने की तैयारी कर ही रहे थे। कि तभी एक जुलूस रावी नदी तट पर बड़कर चला आ रहा था हम लोगों ने भी यह तय कर लिया कि अब बिना समय गवाय रावी पार कर लेना चाहिये। सभी स्वयं सेवक बाद में मचलती हुई। रावी में कूदने लगे मैंने सोचा अगर में पहले कूद जाऊँगा तो शेष स्वयं सेवक विपत्ति में फस सकते हैं। जब स्वयं सेवक रावी में कूद चुके थे तब मैं ने भी छंलाग लगा दी और हाथ घुमा घुमा कर रावी में बहने लगे और किनारे की तरफ बहे जा रहे थे कि इसी बीच जुलूस पास आ गया और किसी ने इसी बीच भाला फेका। वह भाला आकर मेरी गर्दन के पीछे आकर लगा फिर भी मैंने हिम्मत नहीं हारी। और रावी की निशानी लेकर आज भी खड़ा हूँ। मुझे उम्मीद है। देश भक्त स्वयं सेवक राष्ट्र सेवा में समर्पित होकर भारत माता की आन वान शान बचायेंगे। हसूयवाद भारत माता की जय अब मैं अपनी वाणी को विराम देता हूँ।

हमारे गौरव

कदम्बवंशी सम्राट सोबीदेव

सोविदेव कदम्ब: बनवासी मण्डल के स्तन्यरव्य सुन्दर एवं सुसुयृद्ध नागरखण्ड के एक भाग पर प्राचीन कदम्ब कुल का परंपरागत राज्य चला आता था। इस कुल में ब्रह्म भूपाल और चट्टलदेवी का पुत्र वोप्पभूप हुआ जिसकी पत्नी का नाम श्री देवी था। इन दम्पत्ति का पुत्र यह सोविदेव या सोमनृप था। यह राजा बड़ा शूरवीर प्रतापी उदार और सत्यवादी था, और इसलिये कदम्ब रूद्र, गण्डर दावणि, मण्डलिक- गौरव निगलंक मल्ल सत्यपताक आदि विरूद प्राप्त हुये थे। वह कलचूर्य-चक्रवर्ती बिज्जल के पौडा मलिगुदेव रायमुरारि भुजबल मल का अधीनस्थ राजा था। उसने चंगाव्य नरेश को पराजित करके उसे जंजीरो से बांध दिया था। इसी उपलक्ष्य में उसे नण्डर दावणि विरूद्र मिला था। बाल्यावस्था में ही उसके सत्यनिष्ठ मधुर वचनों के कारण सत्यपताक कहलाने लगा। किशोरावस्था को प्राप्त होते न होते वह निकलंक मल्ल और अपनी शक्ति एवं पराक्रम का परिचय देते ही कदम्ब रूद्र कहलाने लगा था। वह बड़ा उदार और दानी था उसके समय में नागखण्ड की भांती ही तेनरतेप्प भी बनवासी देश का भूषण था और नाग वल्लरी एवं पुंगीफल सुपारी के उद्योगों के लिये प्रसिद्ध था। राजा स्वामी देव के चरण कमलों का भ्रमर उसका सामन्त तेवरतप्प का नालप्रभु (अधिपती) वोप्पगावुण्ड था। उसकी पत्नी चाविकब्बे गावुण्डी थी, जिसके भाई बम्मिसेट्टि और कल्लिसेट्टि थे। बोप्पणावुण्ड और चाविक गावुण्डि का युदा लोक गावुण्ड तेवरतेप्प का नालप्रभु था। उसके दोनों मातुल बम्मिसेट्टि और कल्लिसेट्टि भव्य शिखा-मणि परम जैन थे। उसकी माता भी बड़ी धर्मात्मा थी तथा उसकी पत्नी जो तोत्तूर के गेयुदणावुण्ड और धर्मात्मा कालिकगावुण्ड की पुत्री थी, स्वयं सकल शील गुणोत्तम तथा परम जिन भक्त एवं दानशीला थी। इसी कारण उसने महासती अतिबब्बे जैसी ख्याति प्राप्त की थी। अपने उक्त स्वजनों परिजनों की प्रेरणा एवं सहयोग से लोकगावुण्ड ने तेवरतेप्प नगर में एक अत्यन्त भव्य रत्नदायदेव जिनालय नाम का जिन मंदिर बनवाया एक सरोवर, कूप और प्रपा बनवायी और सदा स्थापित किया था। इन सबकी व्यवस्था, देवार्चन, मुनि आहारदान आदि के निमित्त प्रभूत भूमि धर्मात्मा लोक गावुण्ड ने स्वगुरु महामण्डलाचार्य भानुकीर्ति सिद्धान्त देव का पाद प्रक्षालन पूर्वक समर्पित कर दिया था। भानुकीर्ति परम शास्त्रज्ञ मुनिचन्द्र देव के प्रिय शिष्य थे और भारी मन्दावादी थे। तेवरतेप्प के 1171 ई के शिलालेख में उक्त महाराज सेविदेव और उससे धर्मात्मा सामन्तलोक गावुण्ड का वर्णन है। महाराज की स्वयं की अनुमति एवं सहयोग अपने प्रिय सामन्त के उक्त धर्मकार्यों में थे।

चंदेल शासन काल में जैनधर्म का विकास

शोधछात्रा : श्रीमति अर्पिता रंजन, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग
ग्रेटर नोयडा (उ.प्र.)

जैनदर्शन के मूल सिद्धांत अहिंसा, सत्य, अस्तेय एवं अपरिग्रह हैं।

इनका प्रभाव जन-जीवन के साथ समाज, व्यवसाय, संस्कृति एवं राजनीति पर भी स्पष्ट परिलक्षित हुआ है। भारतीय संस्कृति समन्वय एवं सद्भावना की संस्कृति है, जिसमें सभी धर्मों एवं जातियों को समानाधिकार प्राप्त है। प्राचीन काल से ही जैन सिद्धांतों का प्रभाव सभी प्रदेशों में देखा गया है। जिनमें बुन्देलखण्ड का इतिहास अतिप्राचीन है, समय-समय पर शासकों, निवासियों, प्राकृतिक परिस्थितियों, राजनैतिक सीमाओं तथा राजवंशों के आधार पर इसका नामकरण होता रहा है[1]। इसकी सीमा मुख्यतः यमुना एवं वेतवा के मध्य मानी गयी हैं।[2]

पौराणिक सन्दर्भानुसार रामायण एवं महाभारत काल से बुन्देलखण्ड में जैनधर्म का प्रभाव देखा गया है। वर्तमान में भी जैन दर्शन का प्रभाव दृष्टव्य है।

जैनियों के तर्कशास्त्र, व्याकरण रचना, ज्योतिष एवं औषधि शास्त्र आदि विधाओं से प्रभावित होकर कितने ही प्रभावशाली ब्राह्मणों ने भी जैनमत ग्रहण कर लिया था। जैनधर्म को जो उर्वर क्षेत्र तथा शासकीय आश्रय दक्षिण में प्राप्त हुआ, वह उस हद तक उत्तर भारत में प्राप्त नहीं हो सका। फिर भी जैन पण्डितों उत्तर भारत के राजपूत राजाओं के यहाँ भी प्रभाव प्रतिष्ठित करने का अधिकाधिक प्रयत्न किया।[3]

मौर्यवंश के प्रसिद्ध शासक चन्द्रगुप्त मौर्य (317 से 298 ईसा पूर्व) ने जैनधर्म स्वीकार कर जैनाचार्य अन्तिम श्रुतकेवली भद्रबाहु से श्रवणबेलगोला में दिगम्बरी (मुनि) दीक्षा ग्रहण की थी।[4]

चन्द्रगुप्त के पुत्र बिम्बसार (298 से 272 ईसा पूर्व) ने भी जैनधर्म को स्वीकार किया था। इसी परम्परा में सम्प्रति (272 से 190 ईसा पूर्व) ने जैनधर्म का भारत में ही नहीं अफ्रीका, मिश्र, अरब, यूनान आदि देशों में प्रचार प्रसार किया था।

गुप्तवंश के प्रथम शासक चन्द्रगुप्त (प्रथम) 315 से 328 ई. महाराजाधिराज उपाधि का धारी था। आपका विवाह भगवान महावीर के लिच्छिवी वंश की राजकन्या कुमारदेवी के साथ हुआ था।

आपने आठवें तीर्थंकर चन्द्रप्रभ स्वामी का मन्दिर बनवाया था। विदिशा की खुदाई में चन्द्रप्रभ की ऐसी कला पूर्ण मूर्ति मिली है जिस पर गुप्तवंशी ब्राह्मीभाषा में चन्द्रप्रभ नामांकित है।[5]

समुद्रगुप्त सन् 328 से 378 ई. ने अपने राज्य में कई जैन मन्दिर बनवाये एवं मन्दिर की पूजा तथा संरक्षण के लिये विपुल द्रव्य प्रदान किया। चन्द्रगुप्त (द्वितीय) सन् 379 से 414 ई. जैन आचार्य सिद्धसेन के शिष्य थे। आपकी अहिंसक जीवन शैली ने सभी शासकों को प्रभावित किया आपके सेनापति अमरदेव भी जैन थे।

स्कंधगुप्त का राज्य भी समुद्रगुप्त के समान था तथा बुन्देलखण्ड भी उसी राज्य में था।[6]

चीनी यात्री फाह्यान ने आपके शासन में अहिंसक जीवन शैली का उल्लेख करते हुये लिखा, आपके राज्य में मांस, मदिरा तो क्या लहसुन, प्याज एवं कन्दमूल का भी प्रयोग नहीं होता था।

कुमारगुप्त सन् 414 से 455 ई. के शासनकाल में जैनधर्म का विशेष प्रचार था।

प्रतिहार शासक मिहिर भोज (836 ई.) के शासन का उल्लेख देवगढ़ के अभिलेख में मिला हैं।[7] देवगढ़ जैन मूर्तिकला का विशिष्ट क्षेत्र हैं, जहाँ आज भी सैकड़ों जैन मूर्तियाँ संरक्षित हैं। भोज का साम्राज्य पूरे बुन्देलखण्ड में फैला था । इसके पश्चात् उसका पुत्र महेन्द्रपाल उत्तराधिकारी बना। वत्सराज के शासन में महावीर मन्दिर का निर्माण हुआ तथा नागभट्ट ने जैन धर्म को स्वीकार किया था।[8]

जैन धर्म व्यापारियों एवं व्यावसायिओं के मध्य लोकप्रिय था। इन वैश्यों को जैन समाज में पूर्ण प्रतिष्ठा प्राप्त थी। दण्डनायक विमल, वास्तुपाल, तेजपाल, पाहिल एवं जगदु के शासन में शैवधर्मावलम्बी होने के बाद भी भोज सन् 1010 से 1062 ई. ने जैन धर्म एवं साहित्य को संरक्षण दिया था। भोज ने आचार्य प्रभाचन्द्र के चरणों की वंदना की थी।[9]

बुन्देलखण्ड में प्रतिहार शासकों की शक्ति क्षीण होते ही चंदेल सामंत स्वतंत्र हो गये।[10]

चंदेशवंश का आदिपुरुष प्रथम शासक नन्नुक चन्द्रप्रभ भगवान का इतना भक्त था कि वह चन्द्रवर्मन के नाम से प्रसिद्ध हुआ, उसकी संतान चंदेल वंशी कहलाई।[11] अनुश्रुतियों के अनुसार चंद्रवर्मा ने 16 वर्ष की आयु में विशेष महोत्सव आयोजित करके महोत्सव नगर की स्थापना की जो महोवा के नाम से जाना जाता है। यह सदियों तक चंदेलों की राजधानी रहा। वहाँ की खुदाई में मिली जैन प्रतिमाओं से चंदेल शासकों की जैनधर्म के प्रति श्रद्धा का संकेत मिलता है।

चंदेल शासकों की परम्परा में बाकपति (850 ई) जेजा एवं बेजा 870 ई., राहिल 890 ई., हर्ष 910 ई. यशोवर्मन 925 ई., धंग 954 ई. ने शासन किया। शासक धंग ने प्रथम वर्ष 954 ई. में खजुराहो के प्रसिद्ध पार्श्वनाथ मंदिर का निर्माण कराया। राजा धंग जैनमुनि वासवचंद का बड़ा भक्त था। आपकी धार्मिक सहिष्णुता, समदर्शिता तथा प्रजा वत्सलता के कारण ही विभिन्न स्थानों विशेषतः सीरोन, खजुराहो, देवगढ़, दुधही, महोबा, कालंजर, चांदपुर एवं नवागढ़ में अन्य धर्मों के सुविशाल और भव्य मंदिरों की भाँति जैनों के भी अतिभव्य कलात्मक एवं उत्कृष्ट मंदिरों का निर्माण कराया जा सका।[12]

महाराजा धंग के राज्यमान **कुलामात्यवृन्द** उपाधि से विभूषित श्रेष्ठी पाहिल एवं जीजू न भगवान शांतिनाथ एवं पार्श्वनाथ जिनालय का निर्माण जैनाचार्य वासवचन्द्र के शिष्यत्व में कराया तथा उसके संरक्षण हेतु 7 वाटिकाओं का दान किया।[13]

खजुराहो के अभिलेखों में धंगदेव एवं मदनवर्मन के नामोल्लेख के साथ जैनधर्म और कला को वृद्धिगत करने वाले श्रेष्ठियों, जैन मुनियों , आचार्यों तथा शिल्पियों के नामों का विशेष उल्लेख है। यह लेख 10वीं शदी से 12वी शदी ई. के मध्य खजुराहो में जैनधर्म और संघ के प्रभावशाली होने की पुष्टि करते हैं ।[14]

इन लेखों में धंग के महाराज गुरु वासवचन्द्र, देवचन्द, कुमुदचंद, चारुकीर्ति, कुमारनंदि, योगचन्द्र, योगनन्दि, यक्षदेव, विशालकीर्ति आदि निर्ग्रन्थ दिगम्बर आचार्यों एवं साधुओं द्वारा धर्म प्रभावना का उल्लेख हैं।[15]

उपरोक्त श्रमणों का श्री बिहार बुन्देलखण्ड के खजुराहो से महोवा नवागढ़, दुधही से देवगढ़ तक होने के संकेत मिलते हैं । नवागढ़ प्राचीन नंदपुर में ब्र. जयकुमार जी द्वारा अन्वेषित

प्राकृतिक शैलाश्रयों में संत शयन स्थल, शैलाश्रय में उत्कीर्ण गुप्तकालीन कायोत्सर्ग मुद्रा एवं चरण वहाँ तीसरी सदी के पहले से जैन संतों के आवागमन के साक्ष्य हैं ।

मूर्ति निर्माता श्रेष्ठियों में पाहिल के पुत्र साल्हे एवं पौत्र महागण, महिचंद , श्रीचंद जिनचंद और उदयचंद के नाम बुन्देलखण्ड में मूर्ति एवं मंदिर निर्माण में विशेष रूप से अंकित हैं।[16] इस परिवार ने लगभग 200 वर्षों (सन् 954 से 1158 ई.) तक जैनमूर्ति एवं जैन मंदिर निर्माण में सतत सहयोग किया है।

नवागढ़ के अभिलेखीय अन्वेषण में मूर्ति प्रतिष्ठा एवं मंदिर निर्माता श्रेष्ठियों में पाहल के नाम की प्रशस्ति तथा मूर्ति, पाहल के पौत्र महिचंद का नाम स्तंभ अभिलेख तथा महावीर संवत् 1195 पर अंकित है तथा उनकी मूर्ति भी संगृहीत है, उससे सिद्ध होता है उन्होंने खजुराहो के साथ नवागढ़ में भी मंदिरों का निर्माण कराया था।[17]

अन्य मूर्ति प्रतिष्ठापकों में देल्हण संवत् 1195, सलदेसल संवत् 1202, रामचन्द्र, सान्ति जाल्हण, रासल संवत् 1203, सन्न संवत् 1490ए वसराज संवत् 1511, वीघानन्द संवत् 1548, नल्ह संवत् 1781, अर्जुन संवत् 1971 तथा वर्तमान में कई श्रेष्ठियों के नाम उल्लेखनीय हैं।[18]

एक महत्वपूर्ण तथ्य यह भी है महाराजा हर्ष सन् 910 ई. के पुत्र यशोवर्मन (सन् 950 ई.) चंदेल वंश के प्रथम स्वतंत्र शासक थे आपने जैनधर्म का विस्तार ही नहीं किया, वह स्वयं इतने प्रभावित थे कि संसार के भय से राज्य त्यागकर नंदि संघ के आचार्य वीरनन्दि से श्रवणबेलगोला में दीक्षा लेकर गोल्लाचार्य के रूप में अतिशय प्रभावना की।[19]

इस तथ्य की पुष्टी श्रवणबेलगोला के शिलाशासन में रामनवमी मंडप, आदिनाथ मंदिर एवं महादेवी शान्तला मंडप के अभिलेख से तो होती ही है, डॉ भागचन्द्र भागेन्दु, डॉ यशवंत मलैया, डॉ. भागचन्द्र भास्कर, ब्र. डी. राकेश सागर, ब्र. जयकुमार निशांत, डॉ. शीतलचन्द्र जी, एवं पं. विनोद कुमार ने भी बहुमत से स्वीकार किया है।[20]

गोल्लाचार्य की शिष्य परम्परा में त्रैकाल्ययोगी, अभयनन्दि, माणिक्यनन्दि, प्रभाचन्द्र, नेमिचन्द्र सैद्धान्तिक (भगवान गोमटेश बाहुबली की मूर्ति के प्रतिष्ठाता आचार्य) आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धांत चक्रवर्ती , नयनन्दि, वसुनन्दि (जयसेन) जैसे महान आचार्य हुये हैं।[21]

इसके पश्चात् चंदेल शासक मदनवर्मन की धार्मिक सहिष्णुता के कारण खजुराहो अहार (मदनेशपुर), बानपुर, दुधही, चांदपुर, नवागढ़, कुण्डलपुर एवं सौरों जैन तीर्थ के रूप में सुस्थापित हुये।[22] आपके राज्यकाल में जैन धर्म का विशेष रूप से प्रचार-प्रसार हुआ। आपके जैन धर्मावलम्बी होने एवं जैन साधुओं से प्रभावित होने के कई साक्ष्य मिलते हैं । आपकी परिषद् में बहुत से जैन मंत्री एवं कोषाधिपति थे। आपको मदन ब्रह्म नाम से ख्याति मिली है।[23]

मदनवर्मन स्वयं जैन धर्मावलम्बी तो हुये परन्तु अन्य मतों से कोई वैमनस्य नहीं था।[24]

यह उल्लेखनीय तथ्य है कि चन्देल राजाओं में यशोवर्मन वैष्णव (अंत में जैन मुनि गोल्लाचार्य हुये) धंग शैव एवं मदनवर्मन जैन था।[25]

परमर्द्धि देव के राज्य में धनधान्य की कमी नहीं थी। अनेक मन्दिरों एवं तड़ागों के निर्माण से

उस काल की समृद्धि का अनुमान लगाया जा सकता है, वर्तमान में टीकमगढ़ (म.प्र.) जिले में 962 चंदेल तालाब आज भी अन्वेषित किये गये हैं।[26]

परमर्द्धि देव स्वयं ब्राह्मण धर्म के समर्थक थे किन्तु सभी को अपने धर्म पालन की स्वतंत्रता थी। ब्राह्मण धर्म के साथ ही साथ जैन धर्म का भी प्रचार था। अनेक जैन मंदिरों का निर्माण तथा जैन मूर्तियों की प्रतिष्ठा भी उस काल में हुई। शासकीय पदों की नियुक्ति में धर्म का प्रतिबन्ध न था। माहिल जो मन्त्रीपद पर प्रतिष्ठित था वह जैन था[27], माहिल की बहिन परमर्द्धि देव की महारानी महलना भी जैन परिवार की थी। जिससे परमर्द्धिदेव ने उनके पिता वासुदेव को पराजित कर पाणि ग्रहण किया था।

परमर्द्धि देव ने अजयगढ़ में तालाब और मन्दिर बनवाये महोबा में सन् 1167 ई. में जैन मूर्ति की प्रतिष्ठा कराई। सन् 1180 (संवत् 1237) में अहार जी (मदनेशपुर) में मूलनायक शान्तिनाथ की 21 फुट ऊँची मूर्ति की प्रतिष्ठा कराई। जिसमें नंदपुर (वर्तमान नवागढ़) में जिनालय बनाने का उल्लेख हैं।[28]

नवागढ़ के अभिलेखीय अन्वेषण एवं सर्वेक्षण में प्राप्त सम्बंधित साहित्य, इतिहास ग्रंथों, अभिलेखों में नवागढ़ (नंदपुर) का नाम विशेष रूप से दृष्टव्य हुआ है।[29]

नवागढ़ के आसपास ऊमरी, बड़ागांव, द्रोणगिरि,अहार आदि क्षेत्रों के सर्वेक्षण में एक तथ्य और प्राप्त हुआ है कि बुन्देलखण्ड में धसान नदी से संलग्न ग्रामों एवं नगरों में जैन समाज की गोलापूर्वन्वय का बाहुल्य रहा है। उस अन्वय के श्रेष्ठियों ने समय-समय पर मन्दिरों का निर्माण कराकर मूर्ति प्रतिष्ठा कराई हैं।[30]

प्राचीन काल से वर्तमान तक निर्मित जिनालयों की एक लम्बी श्रृंखला है। शायद ही ऐसा गांव होगा जहाँ जैन धर्मावलम्बी न रहते हों और उनके द्वारा बनाये जैन मन्दिर न हों।[31]

पटेरिया क्षेत्र (गढ़ाकोटा म.प्र.) में श्रावक शिरोमणि श्रेष्ठी शाह रामकिशुन मोहनदास जैन ने एक दिन के रूई के व्यापार की मुनाफा से एक मन्दिर का निर्माण कराकर प्रतिष्ठा कराई।[32] इससे सिद्ध होता है बुन्देलखण्ड के तत्कालीन प्रमुख नगरों में जैन समाज के गोला पूर्वान्वय के श्रेष्ठियों का बाहुल्य एवं वर्चस्व रहा है। वह अत्यंत वैभवशाली, प्रभावशाली एवं समृद्ध रहे हैं।

यहाँ तक कि चंदेल शासक मदनवर्मन द्वारा स्थापित महत्वपूर्ण जैन तीर्थ क्षेत्र मदनपुर एवं मदनेशपुर (अहार) में अधिकांश मंदिर गोलापूर्वन्वय के श्रेष्ठियों द्वारा निर्मित कराये गये हैं।[33] यही नहीं प्राचीनतम क्षेत्र सोनागिरि, द्रोणागिरि नवागढ़, नैनागिरि, चन्देरी, कुण्डलपुर, महोबा, पपौरा, पटेरिया, क्षेत्रपाल (ललितपुर), फलहोड़ी बड़ागाँव, दरगुवां, कारीटोरन, गिरार आदि के कई मन्दिरों में उनके द्वारा विराजित मूर्तियाँ प्राप्त हैं।[34] नवागढ़ की बगाज टोरिया पर मदन वर्मन की नखशिख अलंकृत एक मूर्ति विराजमान है, जो उनकी यशोगाथा का साक्ष्य हैं।

मुझे नवागढ़ के अभिलेखीय सर्वेक्षण में गुप्तकालीन उत्कीर्ण मुद्रा, प्रतिहार कालीन मूर्ति शिल्प के साथ कई मूर्तियों के पादपीठ पर संवत् अभिलेख मिले हैं।

संग्रहालय में संगृहीत प्रतिमाओं में- ऋषभदेव संवत 1123, उपाध्याय संवत् 1188,

महावीर संवत् 1195, शांतिनाथ एवं अन्य संवत् 1202, चार मानस्तंभ संवत् 1203, आसन संवत् 1781 वेदियों में विराजित प्रतिमाओं में चौबीसी संवत् 1490, संभवनाथ संवत् 1511, ताम्र पार्श्वनाथ संवत् 1548, पार्श्वनाथ संवत् 1586, विमलनाथ संवत् 1885, महावीर संवत् 1971 से लेकर वर्तमान संवत् 2076 तक की प्रतिमा प्रतिष्ठा की श्रृंखला प्राप्त हुई है।

इस श्रृंखला में एक तथ्य और उद्घाटित हुआ है, तीर्थंकर महावीर, शांतिनाथ चारों मानस्तंभ प्रशस्ति, घुटना तथा अन्य खंडित अवयव में जैन परम्परा के गोलापूर्व अन्वय के श्रेष्ठियों के नाम अंकित हैं।

इस तथ्य का डॉ. मारूतिनंदन प्रसाद तिवारी, डॉ. शान्ति स्वरूप सिन्हा वाराणसी, डॉ कस्तूरचन्द्र सुमन, डॉ. के.पी. त्रिपाठी, हरिविष्णु अवस्थी टीकमगढ़ ने अपने सर्वेक्षण में उल्लेखित किया है।[35]

नवागढ़ के क्षेत्र निर्देशक ब्रह्मचारी जयकुमार जैन निशान्त प्रतिष्ठाचार्य द्वारा अन्वेषित जैन पहाड़ी के प्राकृतिक साधना शैलाश्रय में नवागढ़ के श्री रामनारायण यादव एवं श्री रामनाथ गूजर द्वारा अन्वेषित गुप्तकालीन (तीसरी सदी) जैन मुनि की कायोत्सर्ग मुद्रा तथा चरण चिन्हों[36] से सिद्ध होता है, यहाँ तीसरी सदी के पहले से जैन आचार्य एवं मुनि संघों का श्री विहार बुन्देलखंड मेंहोता रहा हैं। उनकी चर्या में वहाँ के नगरों के समर्पित गोलापूर्वन्वय परिवारों ने वैयावृत्ति (सेवा) करने का सौभाग्य प्राप्त किया। वह उनसे प्रभावित ही नहीं थे अपितु उस अन्वय के श्रेष्ठियों ने दीक्षा लेकर श्रमण परम्परा का उन्नयन भी किया है।

मुनि गुणचन्द्र संवत् 353 (सन् 296 ई.) वज्रनन्दि संवत् 364 (सन् 307 ई.)[37] चन्देल शासक यशोवर्मन संवत् 1007 (सन् 950 ई.) गोल्लाचार्य के नाम से जिननें श्रवणबेलगोला में दीक्षा ली थी।[38] तथा गुणचन्द्र संवत् 1048 (सन् 991 ई.) ने दीक्षा लेकर इस अन्वय का बहुमान बढ़ाया है।

उपरोक्त अन्वेषणानुसार नवागढ़ प्राचीन नंदपुर की स्थापना गुप्तकाल के पूर्व हुई थी, जिसका विकास गुप्तकाल एवं प्रतीहार काल में हुआ तथा चंदेल शासन काल में यह व्यावसायिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, शैक्षणिक, राजनैतिक एवं धार्मिक सद्भाव के विशेष समृद्धशाली नगर के रूप में प्रतिष्ठित हुआ था।

खनन के समय प्राप्त मंदिरों के अवशेष, मिट्टी एवं पाषाण के मन के, विभिन्न मुकुटों वाले शीर्ष, कुमार अकलंक एवं निकलंक बिम्ब उपाध्याय के विशिष्ट बिम्ब, शताधिक विशाल एवं मनोज्ञ मूर्ति शिल्प, चंदेल बावड़ी तथा कूप, पहाड़ियों पर नगरीय संयोजना के साक्ष्य प्राप्त हुये हैं।[39]

मदनपुर के अभिलेखानुसार संवत् 1239 में[40] चंदेलों के असीम वैभव एवं समृद्धि के आकर्षण तथा राजनैतिक वैमनस्यता से बुन्देलखंड (जेजाक मुक्ति) का पराभव परमर्द्धिदेव (परमाल) तथा दिल्ली के शासक पृथ्वीराज चौहान के युद्ध से हुआ। जिसमें महोबा, लासपुर (बिलासपुर) सल्लक्षणपुर, मदनपुर, चांदपुर, दुधही, नवागढ़ सहित कई नगरों को पूर्णतः ध्वस्त कर दिया गया।[41]

इस प्रकार बुन्देलखंड के विशिष्ट नगरों की ऐतिहासिकता, सांस्कृतिक वैभव, विशाल भवनों धार्मिक स्थापत्यों, मूर्ति शिल्पों का नामों निशान मिटकर मात्र इतिहास में शेष रह गया है। आवश्यकता है इन महत्वपूर्ण पुरातात्त्विक स्मारकों में छिपे रहस्यों को उदघाटित करने की। मुझे

विश्वास है जैसे नवागढ़ में छिपे आयाम उजागर हुये हैं, इसी प्रकार महोबा, संलक्षणपुर, दुधही, चांदपुर आदि प्राचीन नगरों की भूमि में न जाने कितने रहस्य छिपे हैं। मेरा शासन प्रशासन एवं पदाधिकारियों से निवेदन है सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करने के पुनीत कार्य को सम्पादित कर विरासत को गौरवान्वित करें।

सन्दर्भ सूची

1. चित्रकूट (रामायण), चेदि (महाभारत), दशार्ण (मेघदूत), चि.चि.टों. (सी.यू.की) चीनी यात्री हवेनसांग, गोल्लदश (कुवलयमाला कहा) जेजाकभुक्ति, युद्धदेश, मध्यदेश, विन्ध्येलखण्ड, वज्रदेश, बुन्देलखंड आदि।
2. (क) कुवलयमालाकहा, उद्यातनसूरि, भाग-2 पृष्ठ 252, (ख) बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास, पं. गोरेलाल तिवारी पृष्ठ 3
3. चंदेल और उनका राजत्व काल, केशवचन्द्र मिश्र, पृष्ठ 202-203
4. जैन शिलालेख संग्रह, भाग-4, ज्ञानपीठ दिल्ली
5. विदिशा का वैभव
6. बुन्देलखण्ड का पुरातत्व - डॉ. एस.डी त्रिवेदी पृष्ठ 15
7. (क) बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास, पं. गोरेलाल तिवारी पृष्ठ 19-20
   (ख) आर्कियोलॉजीकल सर्वे ऑफ इंडिया रिर्पोट, भाग-10, पृष्ठ 101
8. दा हिस्ट्री ऑफ दा गुर्जर प्रतीहार्स, डॉ. बैजनाथ पुरी, पृष्ठ 145
9. जैन प्रतिमा विज्ञान, डॉ मारुतिनंदन प्रसाद तिवारी, प्रकाशकीय दशरथ जैन पृ. 27
10. बुन्देलखण्ड का पुरातत्व, डॉ. एस.डी. त्रिवेदी पृष्ठ 15
11. बुन्देलखण्ड का इतिहास और जैन पुरातत्व, प्रो. दिगम्बर दास जैन पृ. 155
12. बुन्देलखण्ड का पुरातत्व, एस.डी त्रिवेदी, पृष्ठ 35 एवं 53
13. एपिग्राफिका इण्डिका, भाग-1 पृष्ठ 135-136
14. खजुराहो का जैन पुरातत्व, डॉ. मारुतिनंदन प्रसाद तिवारी पृ. 27
15. खजुराहो का जैन पुरातत्व, डॉ. मारुतिनंदन प्रसाद तिवारी पृ. 27
16. दा अर्ली रूलर्स ऑफ खजुराहो, शिशिर कुमार मित्र पृष्ठ 205-206
17. नवागढ़ (नंदपुर) का इतिहास, हरिविष्णु अवस्थी पृ. 14
18. बुन्देलखण्ड का नवोदित तीर्थ नवागढ़, डॉ. कस्तूरचन्द्र सुमन, गोलापूर्व मई 2013
19. जैन शिलालेख संग्रह भाग-4 भारतीय ज्ञान पीठ, दिल्ली
20. पटेरिया बैठक रिपोर्ट, डॉ. यशवंत मलैया, कोलोराडो स्टेटयुनिवर्सिटी
21. जैनेन्द्र सिद्धांत कोश, भाग-1 पृष्ट 325
22. कालंजर प्रबोध, डॉ. हरिओम तत्सत् ब्रह्म शुक्ल पृष्ठ 48
23. चंदेल कालीन महोबा एवं जनपद हमीरपुर और महोबा के पुरावशेष, वासुदेव चौरसिया, पृष्ठ 31
24. खजुराहो प्रतिमायें, डॉ. उर्मिला अग्रवाल, पृष्ठ 9
25. बुन्देलखण्ड का पुरातत्त्व, डॉ. एस.डी. त्रिवेदी, पृष्ठ 90-91
26. जल प्रबन्धन बुन्देलखण्ड की पारम्परिक जल संरचनायें ,हरिविष्णु अवस्थी, पृ. 32
27. (क) ऑर्कियो लॉजीकल सर्वे रिपोर्ट भाग-7 पृष्ठ 14

   (ख) चंदेल कालीन बुन्देलखण्ड का इतिहास, डॉ. अयोध्या प्रसाद पांडेय पृष्ठ 104
28. (क) अहार के अभिलेख डॉ कस्तूरचंद्र सुमन
   (ख) गोलापूर्व डायरेक्ट्री पं. मोहनलाल काव्यतीर्थ
   (ग) प्राचीनाभिलेखाः डॉ. भागचन्द्र भागेन्दु
29. (क)बुन्देलखण्ड का वृहद इतिहास, डॉ. काशीप्रसाद त्रिपाठी त्रिपाठी, पृष्ठ 19
   (ख) कालंजर प्रबोध डॉ. हरिओम तत्सत् ब्रह्म शुक्ल पृष्ठ 48
   (ग) विंध्यक्षेत्र का ऐतिहासिक भूगोल डॉ. कन्हैयालाल अग्रवाल पृष्ठ 144
   (घ) पुरातात्त्विक सर्वे रिर्पोट (महरौनी) डॉ. अम्बिका प्रसाद सिंह
30. नवागढ़ एन्टीक्वीटीज फ्राम दा चन्देला पीरियड़, डॉ. यशवंत मलैया, पृष्ठ 1
31. फलहोड़ी बड़ागाँव वैभव स्मारिका, प्राचीनतम जैन तीर्थ फलहोड़ी बड़ागांव की पड़ताल, हरिविष्णु अवस्थी पृष्ठ 55
32. गोलापूर्व जैन जनवरी-जून 2020 राजेन्द्र महावीर
33. अतिशय क्षेत्र अहार के प्राचीन शिलालेख, पं. गोविन्ददास कोठिया
34. बुन्देलखण्ड का नवोदित तीर्थ नवागढ़, डॉ. कस्तूर चन्द्र सुमन गोलापूर्व मई 2013
35. (क)विलक्षण तीर्थ एवं कला क्षेत्र नवागढ़, डॉ मारुतिनदंन प्रसाद तिवारी, अर्हत वचन 2018
   (ख) बुन्देलखण्ड का नवोदित तीर्थ नवागढ़, डॉ. कस्तूरचन्द्र सुमन गोलापूर्व मई 2013
   (ग) श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र नावई नवागढ़ नंदपुर, डॉ के.पी. त्रिपाठी
   (घ) नवागढ़ (नंदपुर) का इतिहास, हरिविष्णु अवस्थी
36. (क) नवागढ़ (नंदपुर) पाषाण युग का एक सांस्कृतिक क्षेत्र, डॉ. गिरिराज कुमार आगरा पृष्ठ 3
   (ख) विलक्षण तीर्थ एवं कला क्षेत्र नवागढ़, डॉ. मारूतिनंदन प्रसाद तिवारी
   (ग) भारतीय इतिहास में प्रागैतिहासिक क्षेत्र नवागढ़ का योगदान, ब्र. जयकुमार निशांत पृष्ठ 4
37. (क) दा इंडियन ऐन्टीक्वेरी भाग 20, अक्टूबर 1891 पृ. 351-352
   (ख) खंडेलवाल समाज का इतिहास, डॉ. कस्तूरचन्द्र कासलीवाल पृ.
   (ग) चारित्रधर्म प्रकाश (चारित्रसार) आचार्य चामुण्डराय पृ. 309
38. (क) शिलालेख संग्रह भाग 1 भारतीय ज्ञानपीठ दिल्ली
   (ख) तीर्थंकर महावीर और उनकी आचार्य परम्परा भाग 4, डॉ. नेमीचन्द्र जैन ज्योतिषाचार्य पृ. 441-443
39. नवागढ़ (नंदपुर) का इतिहास, हरिविष्णु अवस्थी पृष्ठ 54
40. (क) बुन्देलखण्ड का पुरातत्त्व, डॉ एस.डी. त्रिवेदी चित्र क्रमांक 13
   (ख) रिपोर्ट्स ऑफ टूर्स इन बुन्देलखण्ड एण्ड मालवा इन 1874-75, 1876-79 ए कनिंघम भाग 10 प्लेट 32
41. (क) बुन्देलखण्ड का वृहद इतिहास, डॉ. के.पी त्रिपाठी पृष्ठ 19
   (ख) हमारे प्रेरक, डॉ. पं. विश्वनाथ शर्मा, पृष्ठ 4
   (ग) ओरछा का इतिहास, ठाकुर लक्ष्मण सिंह गौर पृष्ठ 33
   (घ) ऑर्कियोलॉजीकल सर्वे रिर्पोट भाग 10 पृष्ठ 98-99
   (ड) ऑर्कियोलॉजीकल सर्वे रिर्पोट भाग 21 पृष्ठ 173-174

सवाईकल स्पोन्डालोसिस दर्द का अंत, संभव है तुरन्त

❊ जिनेन्द्र कुमार जैन (इन्दौर) मो. 9977051810 ❊

इन दिनों सर्वाइकल स्पोन्डालोसिसस की समस्या दिनों दिन बढ़ रही है जो 40-45 वर्ष की उम्र से प्रायः सभी को शुरु होती है। एक अध्ययन के अनुसार 65 वर्ष से अधिक उम्र के 90 प्रतिशत लोगों को यह बीमारी हो सकती है। यह गठिया का ही रूप है जो मेरूदंड की हड्डी में सूजन आ जाने से होती है व अन्य जोड़ों को प्रभावित करती है। इसका असहनीय दर्द पूरी जीवन चर्या मन मस्तिष्क का प्रभावित करता है।

मेरूदंड या स्पाइनल कालम एक लचकदार ढांचा है जो अनेकों हड्डियों के समूह से बनता है, जिन्हें कशेरूका या वरटिब्रा कहते हैं। जो संख्या में 33 होती है व एक कशेरूका दूसरी कशेरूका के बीच फाइब्रोकार्टिलेज की गद्दी होती है जिससे वे अपने स्थान से हटती नही हैं और एक दूसरे से रगड़ती नहीं हैं। इनके लचीलापन से वह शरीर के भार उठाने, दौड़ने, कूदने व शारीरिक गतिविधियों से उत्पन्न होने वाले धक्कों को सहलेती हैं इस प्रकार शॉक आब्सारबर की तरह कार्य करती हुई मस्तिष्क व मेरूदंड को झटकों व धक्कों को सुरक्षित रखती हैं। सात कशेरूका गर्दन का भाग बनाती हैं जिन्हें गर्दन कशेरूका या सरवाइकल व इसके दर्द या विकारों को सरवाईकल स्पोन्डालोसिस कहते हैं। इन कशेरूका के बीच से एक प्रकार की नसों का समूह निकलता है जिसे स्पाइनल कार्ड कहते हैं जो करीब 18 इंच लम्बा होता है जिसके द्वारा शरीर के संपूर्ण भाग और मस्तिष्क के बीस सम्बन्ध बनायें रखता है। जिसके द्वारा शरीर मस्तिष्क का संदेश पूरे शरीर के अंगों को पहुँचाया जाता है व इसी से शरीर की गतिविधियाँ संचालित होती हैं। शरीर की सभी गतिविधियां सही ढंग से संचालित हो इसके लिये स्पाइनल कार्ड का सही रहना आवश्यक है यह कार्ड आंखों की नसों से भी अधिक संवेदनशील होती है।

स्पाइनल कार्ड में 31 जोड़ा नसें होती है जिनमें 1. गति करने वाली नसें जो प्रेरणा मस्तिष्क से प्राप्त करके शरीर के प्रत्येक अंगों को पहुँचाती हैं। 2. संवेदनावहक (सेनोसरी) नसें- जो त्वचा व शरीर से प्रेरणा लेकर मस्तिष्क तक पहुँचाती है। इन नसों में योग्य शक्ति से किसी बाहर की उत्तेजना मिलने पर, उसे ग्रहण करने और उसका जबाब देने का विशिष्ट गुण होता है इन नसों के रेशे चिकने पदार्थ से ढंके रहते हैं जो इनकी रक्षा करता है व इनका पोषण करने के साथ-साथ एक दूसरे से चिपकने से बचाते हैं। इस प्रकार पूरे शरीर में किसी प्रकार की चोट, उत्तेजना, दबाव, अकस्मात कोई घटना होने पर शरीर में उत्पन्न जैवीय शक्ति (Vital Force) सुरक्षा तंत्र उपलब्ध कराकर शरीर को खतरों से बचाती है। स्पाइनल कार्ड, स्पाइनल नसों पर दबाव पड़ने से इनमें विकृति उत्पन्न होने से सुरक्षातंत्र प्रभावित होकर इस रोग का ही कारण बनता हैं।

उम्र बढ़ने के साथ-साथ शरीर की शेष अंगों की तरह इन कशेरूकी गद्दी का घिसना, गद्दी की चिकनाई का सूखना आदि से दबाब, झटके पड़ने से स्पाइनल कार्ड में सूजन आने के कारण उसकी कार्य प्रणाली बाधित होती हैं जो सरवाइकल स्पोन्डालोसिस होने का कारण बनती है जिससे कई

प्रकार की परेशानियाँ पैदा हो सकती है। जिनमें प्रमुख- 1. गर्दन में दर्द व तनाव रहना 2. कंधे अथवा हाथ और ऊंगलियों में सून्नपन या झुनझुनाहट होना 3. पैरों में भारीपन, चलने तकलीफ होना, 4. हाथ पैरों में कमजोरी आना, 5. पेशाब करने में परेशानी, 5. सिरदर्द, चक्कर, आँखों के सामने अंधेरा छाना, नींद सामान्य न होना, कमर कूल्हें में दर्द, पीठ के जोड़ों का ढीक काम न करना, 6. भूख में कमी, हल्का बुखार 7. बजन बढ़ना, 8. दोनों हाथों में कमी एक हाथ में कमी दूसरे हाथ में दर्द जैसे किसी ने चाकू मार दिया हो आदि।

सरवाइकल स्पोन्डोलासिस होने का प्रमुख कारण उम्र बढ़ना, चोट लगना, झटके से अचानक वजन उठाना, कम्प्यूटर व मोबाइल का सतत् उपयोग करना, बड़ा तकिया व मुलायम गद्दे का उपयोग करना, वजन बढ़ना, दुपाहिया वाहनों का अधिक उपयोग करना, गर्दन झुकाकर मोबाइल पर बात करना, सोने बैठन, खड़े हाने का गलत तरीका, असंतुलित व असमय भोजन करना, शरीर में कैल्शियम व विटामिन डी की कमी होना, गठिया रोग का होना आदि

अचनाक वजन नहीं उठाना, कम्प्यूटर, मोबाइल स्क्रीन पर आँख लेबल सही रखना, सही मुद्रा में बैठना, खड़े होना रीड़ की हड्डी एक दम सीधी रखना, मांसपेशियों का अधिक उपयोग से बचना, पतले हल्के तकिय का उपयोग, सही तरीके से सोना मुलायम गद्दे की जगह तखत का उपयोग, वजन नियंत्रण रखना, कैल्शियम व विटामिन डी से भरपूर चीजों का उपयोग, स्मोकिंग, कैफीन युक्त चीजों से दूरी बनायें रखना, नियमित घूमना कसरत व योग, संतुलित भोजन व समय पर करना पत्तेदार सब्जियाँ पालक, गाजर, चुकन्दर, नींबू, अखरोट, दूध दही छाछ का उपयोग।

रोग की शुरुआत में ध्यान रखने नियमित योग, सामान्य उपचार व चिकित्सक द्वारा दी गई सावधानियों का पालन से आराम मिल जाता है। देरी करने व उम्र अधिक होने पर भी सर्जरी की जरूरत पड़ती है। सभी चिकित्सा पद्धति में इलाज संभव है, योग्य अनुभवी चिकित्सक से नियमित रूप से दिखायें व स्वस्थ्य जीवन व्यतीर कर सकते हैं।

होम्योपैथी पद्धति से समय पर इलाज द्वार पूर्णतः आराम प्राप्त हो जाता है जिसमें लक्षणोनुसार औषधियों का उपयोग किया जाता है, जिनमें प्रमुख औषधियाँ साइलीशिया 6×, कैल्कोरियाफास 3×, एसिडफास 30, हाइपेरिकम 30, कोलोस्न्थि 30, कॉलमिया लैटिफोलिया 30, काकुलस 30, अर्निका, रस्टॉक्स, जेल्सियम आदि।

सुन्दरलाल जी बीड़ी वालों का निधन

इंदौर- श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र नेमावर तथा दयोदय ट्रस्ट इंदौर के अध्यक्ष श्री सुंदरलाल जी बीड़ी वालों का निधन 11 फरवरी 2021 को आक स्मिक निधन हो गया। आप विभिन्न सामाजिक गतिविधियों में हमेशा अग्रिणीय रहते थें। आप विभिन्न संस्थाओं से जुड़े हुये थे। संस्कार सागर परिवार एवं पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक ट्रस्ट आपके निधन पर श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

हास्य तरंग

1. नई नवेली बहु का घर में सबसे परिचय कराते हुये सासू ने कहाँ मैं घर की गृहमंत्री , ससुर वित्तमंत्री, बड़ा बेटा अपूर्ति मंत्री, तुम्हारा पति योजना मंत्री। बहू तुम कौन सा पद लेना चाहोगी ? बहु- सासू जी मैं विपक्ष में बैठूगी।

2. गैर हिन्दी भाषी एक नेताजी ने अपने चुनावी भाषण के दौरान कहा मैं ग्यारंटी के साथ कह सकता हूँ भिन्न-भिन्न जातियों और भिन्न-भिन्न भाषाओं के होते हुये भारत देश एक हैं। पत्रकार ने जानना चाहा कैसे ? नेताजी ने बताया जब में धार में भाषण दे रहा था वहाँ भी लोग हंस रहे थे इन्दौर में भी लोग हंस रहे थे और आज छत्तीसगढ़ में भाषण दे रहा था तो भी लोग हंस रहे थे।

3. भावित-पापा से आप अंधेरे से डरते हैं ? नहीं बेटा, आंधी वर्षा बादल बिजली से ? नहीं बेटा शेर से, सर्प से, बिल्ली से ? बिल्कुल नहीं। इनका मतलब ये हुआ कि आप मम्मी को छोड़कर किसी से नहीं डरते।

4. साली- जीजाजी से- आपने कहा था कि मेरी अनेकों नेताओं से पहिचान है, चुनाव बाद तुम्हारी कही भी नौकरी लगवा दूंगा पर इतने के बाद भी नौकरी नहीं लग सकी। जीजाजी- बात यह है कि मैं तो अनेकों नेताओं को पहिचानता हूँ पर वे मुझे नहीं पहिचानते हैं।

5. बड़ी उम्र की मोटी लड़की ने स्कूल में एड़मीशन लिया तो क्लास के लड़के लड़कियों ने उसे बुआ कहना शुरू कर दिया। कुछ दिनों तक उस लड़की ने सहन किया अंत में प्राचार्य से शिकायत की। प्राचार्य को बड़ा क्रो ध आया तो क्लास रूम में पहुँचकर बोले जो भी इसे बुआ कहता है वह तुरन्त खड़ा हो जाये। एक-एक करके पूरी क्लास खड़ी हो गई केवल एक लड़का बैठा रहा। प्राचार्य ने बड़ी हैरानी के साथ उस लड़के से पूंछा क्यों बेटे तुम इसे बुआ नहीं कहते हो लड़के ने शरमाते हुये कहा सर में सारी क्लास का फूफा हूँ।

संकलनः जिनेन्द्र कुमार जैन, गौरीनगर

संस्कार खेल

शरीर विकास के कुछ खेल

✲ भस्मासुर

खिलाड़ियों की संख्या- 10-15

खेल वर्ग- बैठे का खेल

खेल विधि- सब स्वयंसेवक मैदान में फैला कर स्वयं को बचाते हुये दूसरे के सिर पर हाथ रखकर भस्म करने का प्रयास करेंगे। सबसे अन्त तक बचने वाला खिलाड़ी विजयी होगा। बचने के लिये अपने सिर पर हाथ रखने वाला स्वयं सवेक भी भस्म होकर खेल से बाहर हो जायेगा।

✲ द्रव्य, गुण, पर्याय

खिलाड़ियों की संख्या- 15-20

खेल वर्ग- बैठे का खेल

खेल विधि- स्वयं सेवक अंश भान की आज्ञा के बाद शिक्षाक क्रमांक 1,2,3 को क्रमशः द्रव्य, गुण, पर्याय, नाम देगा। मंडल के बीच में एक रूमाल रहेगा। दक्षिण व्रत के बाद कोई नाम बोलने पर उस नाम वाले सब खिलाड़ी दौड़ेंगे तथा परिक्रमा पूरी कर अपने स्थान से बीच में आकर रूमाल उठायेंगे। इस प्रकार विजयी तीन स्वयंसेवक की फिर से प्रतियोगिता होगी।

✲ भरा पेट

खिलाड़ियों की संख्या- 15-20

खेल वर्ग- बैठे का खेल

खेल विधि- सब मंडल रचना में रहेंगे। सीटी बजने पर अब अपने दाहिने हाथ को पेट पर घुमायेंगे तथा बायें हाथ से सिर पर मारते रहेंगे। बदल का संकेत होने पर सब विपरित काम करेंगे। ऐसे बार-बार बदल होगी। गलत करने वाला मंडल केन्द्र पर आकर मुर्गा बनेगा तथा तीन बार कुकडूँ कूँ बोलेगा।

बाल कहानी

देश को लौट रहा हूँ

उ.प्र. के मेरठ शहर में सेना के निवृत्तमान अधिकारी मोहिंदर सिंह रहते थे। उन्हों ने अपनी पेंशन को और कमाई की राशी बैंक मे जमा कर रखी थी जब भारत में कोरोना वायरस के कारण 21 दिन का लॉकडाउन हुआ तब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी देशवासियों से राष्ट्र की माली हालात खराब न हो इसलिये दान की याचना की क्योंकि गरीब मजदूर बेचारे अपने अपने घरों की और पलायन कर रहे थे। उनके काम धंधे बन्द हो चुके थे। शहरों से गांव की और हजारों की संख्या में जा रहे थे। उनके पास पैदल जाने के सिवाय कोई दूसरा चारा नहीं बचा था। सब उद्योग बन्द हो चुके। कोरोना से बचने का एक ही उपाय था वो था लॉकडाउन जिन देशो ने अर्थ व्यवस्था न बिगड़े इसलिये लॉकडाउन नहीं किया उनमें अमेरिका जैसे देश के लिये बहुत बुरे दिन देखना पड़े वहाँ के हालत बदतर हो गये भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने देशवासियों के एक ही सूत्र दिया कि जान है तो जहान है इस इसी से भारत बहुत बड़ी हानि से बच गया

अर्थ समस्या का समाधान करने के लिये बहुत से दानी सामने आये उनमें मोहिन्दर सिंह ने भी अपनी त्याग की भावना को आगे बढ़ाया अपनी पत्नी सुमन चौधरी कहा मैंने 1971 में पाकिस्तान भारत युद्ध अपनी आँख खोई तब भी मुझे बहुत खुशी हुई थी कि अपनी मातृभूमि के काम ही तो आया। अब तुम मेरा साथ और मेरे साथ चले। हम कोई दान नहीं दे रहे हैं देश ने हमें सब कुछ दिया हम देश को लौटा दें क्योंकि अब हम 80 पार कर चुके है सब कुद यहीं छोड़कर जायेंगे चलो चेक पर दस्खत करें और बैंक के मैनेजर को सौंप दें। सुमन भी खुशी खुशी तैयार हो गई दोनों ने 15 लाख का चैक बैंक के मैनेजर को सौंपा।

संस्कार गीत

मेरे वतन की भाषा

कितनी सुन्दर किस्मत अपनी
मिला जो भारत देश
सत्य अहिंसा का देता जो
दुनिया को संदेश

1.
उत्तर में है तुंग हिमालय
दक्षिण में सागर गहरा
सीमाओं पर हर दम रहता
वीर सैनिकों को पहरा
युद्ध नहीं जिसकी भाषा है
शांति का उपदेश

2.
अनेक भाषायें भारत की
पर एक महान
विश्व गुरु भारत अपना है
मानें सकल जहान
कर्म प्रधान तपो भूमि यह
मुक्ति का परिवेश

बाल कविता

कमण्डल

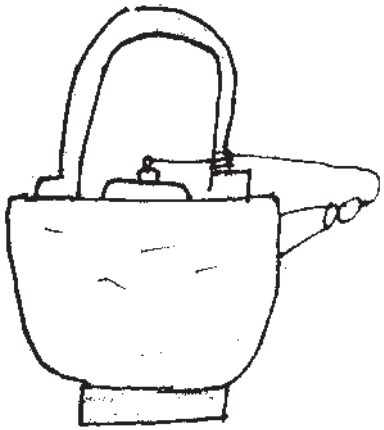

गोल मटोल कमंडल सुन्दर
प्रासुक जल है इसके अंदर
शौच का साधन यह है प्यारा
साधुजन का यह है चारा
एक बार जल पान मुनि
खड़े करें आहार करें मुनि
इनकी चर्या सबसे न्यारी
पिच्छी कमंडल है हितकारी
गुरु कमंडल साफ करें
श्रावक प्रासुक नीर भरें
गुरु कमंडल है मनहारी
धारें इसको समताधारी
शोभे जैन मुनि के कर
गोल मटोल कमंडल सुंदर

समाचार

दीक्षायें सम्पन्न

गुना-आचार्य वर्धमान सागर जी महाराज दक्षिण के करकमलों से 12 फरवरी 2021 को बजरंगगढ़ रोड़ नसियां गुना में चार मुनि दीक्षायें दी गई एलक श्री नेमीसागर जी, ब्र. संतोष भैया सागर, ब्र. प्रेमचंद भैया बंडा, ब्र. सागर भैया अक्किवाट को मुनि दीक्षा दी गई जिनके नाम क्रमशः मुनि श्री नेमिसागर जी महाराज, मुनिश्री नमिसागर जी महाराज, मुनिश्री निर्दोषसागर जी महाराज, मुनि श्री निर्लोकसागर जी महाराज रखा गया।

परतापुर-आचार्य श्री विभवसागर महाराज जी के करकमलों से दिनांक 14 फरवरी 2021 को 53 साधुओं के सान्निध्य में ब्र. अभिनंदन भैया टीकमगढ़ को मुनि दीक्षा दी गई जिनका नाम मुनिश्री शुद्धोपयोगसागर जी महाराज रखा गया।

दमोह-आचार्य श्री निर्भयसागर महाराज जी के करकमलों दिनांक 14 फरवरी 2021 को दमोह में चल रहे पंचकल्याणक महोत्सव के अवसर पर ब्र दर्पण भैया को मुनि दीक्षा दी गई जिनका नाम मुनि श्री ब्रह्मदत्त सागर जी महाराज रखा गया।

इंदौर- आचार्य श्री प्रसन्नऋषि जी महाराज के करकमलों से दिनांक 16 फरवरी 2021 को क्षुल्लक विचक्षण सागर महाराज को मुनि दीक्षा दी गई जिनका नाम मुनि श्री प्रभातचंद जी महाराज रखा गया। तथा ब्र. प्रेमाबाई उज्जैन, प्रभा जैन औरंगाबाद को क्षुल्लिका दीक्षा एम.एस.जे फार्महाउस इंदौर में दी गई जिनका नाम क्रमशः क्षुल्लिका प्रभुमति माताजी, क्षुल्लिका प्रसादमति माताजी नाम रखा गया।

लोहारिया- आचार्य श्री अनुभवसागर महाराज जी के करकमलों से दिनांक 16 फरवरी 2021 को अम्बालाल जैन को क्षुल्लक दीक्षा दी गई जिनका नाम क्षुल्लक अनुश्रमण सागर महाराज नाम रखा गया।

मुरार ग्वालियर- आचार्य श्री आदर्शसागर महाराज जी ने अपने करकमलों से मुनि श्री आदित्य सागर जी महाराज को आचार्य पद श्री दिगम्बर जैन मंदिर मुरार ग्वालियर में 9 फरवरी 2021 को दिया।

समाधिमरण

सम्मनेवाडी कर्नाटक- आचार्य श्री पद्मनंदि महाराज के शिष्य मुनि श्री उत्साहनंदि महाराज का समाधिमरण सम्मनेवाड़ी कर्नाटक में 9 फरवरी 2021 को प्रातः 8.30 बजे हुआ।

शीतलधाम रतलाम- आचार्य श्री योगेन्द्र सागर महाराज जी के शिष्य मुनिश्री युक्तिनाथ सागर जी महाराज का समाधिमरण 9 फरवरी दोप 1.30 बजे शीतल तीर्थ रतलाम में हुआ।

कुंथलगिरि महाराष्ट्र- आचार्य श्री समुद्रसेन सागर महाराज के शिष्य मुनि श्री मुक्तिसागर जी महाराज का समाधिमरण कुंथलगिरि महाराष्ट्र में 27 जनवरी 2021 को हुआ।

दमोह- आर्यिका श्री पूर्णमति माता जी के ससंघ सान्निध्य में ब्रह्मचारी बहन साधना दीदी का समाधिमरण नन्हे मंदिर धर्मशाला दमोह में 17 फरवरी 2021 को हुआ।

सिद्धचक्र विधान सम्पन्न

बामोरकलां- आर्यिका श्री 105 विज्ञानमति माता जी के ससंघ सान्निध्य में श्री दिगम्बर जैन मंदिर बामोरकलां में दिनांक 16 से 24 फरवरी 2021 को श्री 1008 सिद्धचक्र महामंडल विधान ब्र. विजय भैया लखनादौन के विधानाचार्यत्व में सम्पन्न हुआ।

सागर- श्री दिगम्बर जैन मंदिर अंकुर कॉलोनी सागर में दिनांक 14 फरवरी से 21 फरवरी तक श्री 1008 सिद्धचक्र महामंडल विधान संस्कृत वाला पण्डित श्री उदयचंद्र जी शास्त्री सागर के विधानाचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। यह विधान वैशाखिया परिवार गढ़कोटा द्वारा कराया गया था।

बड़ागांव धसान- आचार्य श्री उदार सागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में उदारगिरि तीर्थ

बड़ागांव में श्री 1008 समवशरण महामंडल विधान 12 फरवरी से 20 फरवरी 2021 को ब्र. नितिन भैया खुरई के विधानाचार्यत्व में सम्पन्न हुआ तथा 16 फरवरी को वेदी का शिलान्यास किया गया।

ढ़ाना (सागर)- आर्यिका श्री 105 पूर्णमति माताजी के ससंघ सान्निध्य में दिनांक 25 फरवरी से 4 मार्च तक श्री 1008 सिद्धचक्र महामंडल विधान होने जा रहा है।ब्र. संजीव भैया कटंगी, ब्र. अरूण भैया कटंगी, ब्र. अंकित भैया धनैटा के विधनचार्यत्व में सम्पन्न होगा।

पंचकल्याणक सम्पन्न

बिजोलिया राजस्थान- निर्यापक मुनि श्री सुधासागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र बिजोलिया जी राजस्थान में दिनांक 12 से 18 फरवरी 2021 को पंचकल्याणक महोत्सव ब्र. प्रदीप भैया सुयश अशोक नगर के प्रतिष्ठाचार्यत्व में संपन्न हुआ।

सुरखी- निर्यापक मुनि श्री समयसागर महाराज के ससंघ 13 पिच्छी के सान्निध्य में दिनांक 11 से 17 फरवरी 2021 को पंचकल्याणक महोत्सव सुरखी में प्रतिष्ठाचार्य ब्र. विनय भैया बंडा के प्रतिष्ठाचार्यत्व में सम्पन्न हुआ।

चांदामेटा- मुनिश्री कुंथुसागर महाराज जी के सान्निध्य में दिनांक 12 फरवरी से 18 फरवरी 2021 को पंचकल्याणक महोत्सव ब्र. धीरज भैया राहतगढ़ तथा ब्र. राजेश भैया के प्रतिष्ठाचार्यत्व में सम्पन्न हुआ।

चंदेरा-मुनि श्री सुप्रभसागर जी, मुनिश्री प्रणतसागर महाराज के सान्निध्य में 17 फरवरी 22 फरवरी 2021 को पंचकल्याणक महोत्सव पण्डित श्री मुकेश जी के प्रतिष्ठाचार्यत्व में चंदेरा में सम्पन्न हुआ।

अभाना-मुनिश्री प्रशांतसागर जी महाराज, मुनिश्री निर्वेगसागर जी महाराज के ससंघ सान्निध्य में 19 फरवरी से 25 फरवरी तक प्रतिष्ठाचार्य ब्र. विनय भैया बंडा के प्रतिष्ठाचार्यत्व में पंचकल्याणक महोत्सव सम्पन्न हुआ । इस पंचकल्याणक में माता पिता सौधर्म इन्द्र एवं विधिनायक प्रतिमा का सौभाग्य राजकुमार, सुकमाल, रवि, महेश, संतोष सिंघई पटना वाला परिवार अभाना को प्राप्त हुआ।

आगामी पंचकल्याणक

चांदला छतरपुर- मुनि श्री विनिश्चय सागर जी महाराज एवं मुनि श्री विरंजन सागर जी महाराज के ससंघ सान्निध्य में दिनांक 05 मार्च से 11 मार्च 2021 तक पण्डित राजेश राज भोपाल के प्रतिष्ठाचार्यत्व में पंचकल्याणक महोत्सव सम्पन्न होगा।

पपौरा टीकमगढ़ म.प्र.- मुनि श्री आदित्य सागर, मुनि श्री अप्रमितसागर महाराज के सान्निध्य में श्री दिगम्बर जैन मंदिर पपौरा जी 05 से 10 मार्च 2021 को पंचकल्याणक महोत्सव सम्पन्न होगा।

सम्मेदशिखर-आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज के ससंघ सान्निध्य में 28 अप्रैल से 03 मई 2021 को श्री दिगम्बर सिद्धक्षेत्र मधुवन सम्मेदशिखर झारखंड में पंचकल्याणक महोत्सव सम्पन्न होगा।

श्री देव शास्त्र गुरु रथयात्रा

बिजोलिया राजस्थान- निर्यापक मुनिश्री सुधासागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में दिनांक 25 फरवरी से 1 मार्च 2021 तक श्री देव शास्त्र गुरु रथयात्रा तपोदय तीर्थ बिजोलिया राजस्थान से प्रारंभ होकर श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर चवलेश्वर तक जायेंगी। जिसमें हजारों की संख्या में इंद्र इंद्राणी तथा श्रावकगण सम्मिलित होकर धर्म लाभ लेंगे।

पार्श्वनाथ रथयात्रा

बनारस-मुनि श्री प्रमाणसागर जी महाराज तथा मुनिश्री अरहसागर जी महाराज के सान्निध्य में श्री पार्श्वनाथ भगवान की जन्मस्थली बनारस से भगवान पार्श्वनाथ मोक्षस्थली श्री सम्मेदशिखर जी मधुवन झारखंड तक दिनांक 04 मार्च से 31 मार्च तक श्री देव शास्त्र गुरु रथयात्रा निकाली जायेंगी। जिसमें हजारों भक्त सम्मिलित होकर देव शास्त्र गुरु के साथ सम्मेदशिखर जी की पैदल यात्रा करेंगे।

जैन विद्या संस्कृति प्रश्न मंच-2021

छहढाला दर्पण- ब्र. जिनेश मलैया पंचबालयति मंदिर इंदौर से

01. छहढाला किसे कहते हैं ?
02. छहढ़ाला ग्रंथ में किसे नमस्कार किया है ?
03. छहढ़ाला में कितनी बातों का वर्णन किया गया है ?
04. पण्डित दौलतराम जी रचित छहढ़ाला में कितने छंदो का प्रयोग किया गया है ?
05. छहढ़ाला की प्रथम ढाल में कितनी बातों का वर्णन किया गया है ?
06. छहढ़ाला की द्वितीय ढाल में कितनी बातों का वर्णन किया गया है ?
07. छहढ़ाला की तीसरी ढाल में कितनी बातों का वर्णन किया गया है ?
08. छहढ़ाला की चौथी ढाल में कितनी बातों का वर्णन किया गया है ?
09. छहढ़ाला की पांचवी ढाल में कितनी बातों का वर्णन किया गया है ?
10. छहढ़ाला की छठी ढाल में कितनी बातों का वर्णन किया गया है ?
11. सौरठा छंद किसे कहते है ?
12. चौपाई छंद किसे कहते है ?
13. पद्धरी छंद किसे कहते है ?
14. नरेन्द्र (जोगीरासा) छंद किसे कहते है ?
15. रोला छंद किसे कहते है ?
16. चाल छंद किसे कहते है ?
17. हरिगीतिका का छंद किसे कहते है ?
18. छहढ़ाला की पहली ढाल में तिर्यंच गति के कितने प्रकार के दुःखों का वर्णन किया गया है ?
19. छहढ़ाला की पहली ढाल में नरक गति के कितने प्रकार के दुःखों का वर्णन किया गया है ?
20. छहढ़ाला की पहली ढाल में मनुष्य गति के कितने प्रकार के दुःखों का वर्णन किया गया है?
21. छहढ़ाला की पहली ढाल में देव गति के कितने प्रकार के दुःखों का वर्णन किया गया है ?
22. छहढ़ाला ग्रंथ की रचना कब हुई थी ?
23. छहढ़ाला नाम से अभी तक वर्तमान में कितने ग्रंथ उपलब्ध है ?
24. उत्पादन दोष कितने हैं ?
25. एषणा दोष कितने है ?
26. उद्गम दोष कितने है ?
27. बाह्य परिग्रह कितने प्रकार का है ?
28. अंतरंग परिग्रह कितने प्रकार का है ?
29. शील के कुल कितने भेद है ?
30. पांच महाव्रत कौन-कौन से है लिखिये ?
31. छह आवश्यक कौन-कौन से हैं लिखिये ?
32. मुनिराजों के सात विशेष गुण कौन-कौन से हैं लिखिये ?

33. समिति कितनी होती हैं कौन-कौन सी हैं लिखिये ?
34. अनुप्रेक्षा कितनी होती है कौन-कौन सी हैं लिखिये ?
35. कर्म की कितनी अवस्थायें होती है कौन-कौन सी है लिखिये ?
36. अणुव्रत कितने होते हैं कौन-कौन से हैं लिखिये ?
37. गुण्व्रत कितने होते हैं कौन-कौन से हैं लिखिये ?
38. शिक्षाव्रत कितने होते हैं कौन-कौन से हैं लिखिये ?
39. निदान किसका अतिचार हैं ?
40. नेष्टिक श्रावक के कितने पद होते हैं कौन कौन से लिखिये ?
41. परव्यदेश किसका अतिचार है ?
42. अनादर कौन से व्रत का अतिचार है ?
43. चार प्रकार के आहार कौन कौन से होते है लिखिये ?
44. प्रमादचर्या कौन से व्रत का अतिचार है ?
45. परविवाह करना कौन से व्रत का अतिचार है ?
46. दासी दास प्रमाणातिक्रम कौन से व्रत का अतिचार है ?
47. हिंसा के कितने भेद है कौन-कौन से हैं लिखिये ?
48. विषय चाह को किसकी उपमा दी है ? दावानल
49. भव्यजीव अधिक से अधिक कितनी बार मुनि बन सकता है ?
50. भावलिंगी मुनि के कितने भेद है कौन-कौन से है लिखिये ?
51. देश प्रत्यक्ष ज्ञान कौन कौन से है ?
52. मूढ़ता कितनी होती है कौन-कौन सी है लिखिये ?
53. अनायतन कितने होते हैं कौन-कौन से है लिखिये ?
54. मद कितने होते हैं कौन-कौन से है लिखिये ?
55. शंकादिक दोष कितने होते हैं कौन-कौन से है लिखिये ?
56. सम्यग्दृष्टि जीव कितने अंगों सहित होता है ?
57. सम्यग्दृष्टि जीव कितने दोषों से रहित होता है ?
58. आत्मा कितनी प्रकार की होती है ?
59. अन्तर आत्मा के कितने भेद है ?
60. तत्व कितने होते है कौन-कौन से है लिखिये ?
61. द्रव्य कितने होते है कौन-कौन से है लिखिये ?
62. गुप्ति कितनी होती है कौन-कौन सी है लिखिये ?
63. परिषह कितने होते है कौन-कौन से है लिखिये ?
64. मिथ्यात्व कितन होते हैं कौन-कौन से है लिखिये ?
65. अविरति के कितने भेद है ?
66. कषाय कितनी होती है ?
67. योग कितने होते है ?

68. प्रमाद के कितने भेद हैं ?
69. आश्रव कितना प्रकार का होता है ?
70. अजीव तत्व के कितने भेद है ?
71. स्पर्श कितने प्रकार का होता है कौन-कौन सा लिखिये ?
72. रस इन्द्रिय के विषय कितने हैं ?
73. गंध इन्द्रिय के विषय कितने हैं ?
74. वर्ण इन्द्रिय के विषय कितने हैं ?
75. कर्ण इन्द्रिय के विषय कितने हैं ?
76. अचेतन द्रव्य कितने है ?
77. एक से तीसरे गुणस्थान तक कौन सी आत्मा होती है ?
78. पांच से छठे गुणस्थान में कौन सी आत्मा होती है ?
79. सांतवे से बारहवें गुणस्थान तक कौन सी आत्मा होती है ?
80. मोक्षमार्ग कितने प्रकार का है ?
81. संसार शरीर और भोगों से विरक्ति को क्या कहते हैं ?
82. इन्द्रिय और मन से उत्पन्न संसार वर्धक इच्छाओं को क्या कहते है ?
83. जिसमें स्पर्श रसगंध वर्ण पाया जाता है उसे क्या कहते है ?
84. वस्तु के यथार्थ स्वरूप को क्या कहते है ?
85. दर्शनापयोग के कितने भेद है कौन-कौन से हैं लिखिये ?
86. ज्ञानउपयोग के कितने भेद है कौन-कौन से हैं लिखिये ?
87. गुण और पर्याय के समूह को क्या कहते है ?
88. कौन सा जीव एक श्वांस में अठारह बार जन्ममरण करता है ?
89. परिवर्तन कितने प्रकार के होते है कौन-कौन से हैं लिखिये ?
90. वैमानिक देवों के कितने भेद है ?
91. देवों की कौन सी माला मुरझाने लगती है ?
92. कौन से नरक तक जीव आपस में भिड़ाने जा सकता है ?
93. चौथे नरक में नारिकियों की ऊँचाई कितनी है ?
94. पहले नरक में कितने पटल है ?
95. बिल कितने प्रकार के होते है ?
96. पहले नरक में कितने बिल है ?
97. नरक कितने होते है कौन कौन से नाम लिखिये ?
98. जलचर थलचर नभचर किसके भेद है ?
99. एक इन्द्रिय से चार इन्द्रिय तक नियम से कौन से गति के होते है ?
100. मनुष्य के कितने शरीर होते है ?

इन प्रश्नों के उत्तर आप प्लेन कागज पर लिखकर दिनांकहर माह 29 तारीख तक डाक द्वारा अथवा व्हाट्सअप नम्बर 6232967108 पर भेज सकते है। यह प्रश्न प्रत्येक माह 100-100 रहेंगें जिसका समापन दिसम्बर माह में किया जायेंगा।

वर्ग पहेली 259

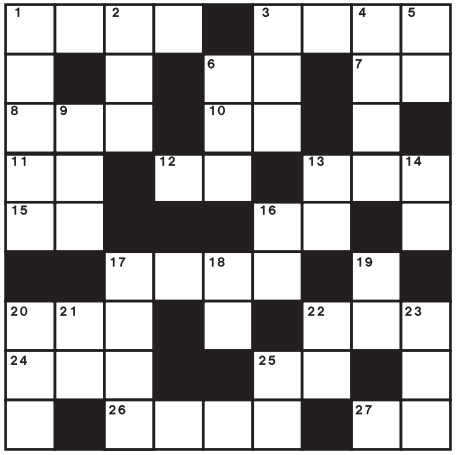

ऊपर से नीचे

1. 1999 के नेमावर में दीक्षित मुनि महाराज -5
2. सिंह, शेर -2
3. जिन मंदिर का एक सर्वोच्च अंग -3
4. एक रत्न का नाम -4
5. नस, रक्तवाहनी -2
6. शहर, वस्ती -3
9. विहार, आना जाना -3
14. नाज, घमंड, मद -2
17. मणि, एक रत्न का नाम -4
18. राहगीर, यात्री -2
19. एक पहलवान का नाम -2
20. सौं की संख्या की पूर्णता -3
21. मैं का बहुवचन -2
22. नौंकर, चाकर, गुलाम -2
23. चमक के साथ का शब्द -3
25. फलों तरल पदार्थ -2

बाये से दाये

1. 17वें तीर्थंकर का नाम -4
3. अंतरीक्ष पार्श्वनाथ तीर्थ के गाँव का नाम -4
6. नाखून -2
7. पक्षी -2
8. समुद्र, जैन साधुओं के पीछे लगने वाला एक उपनाम -3
10. यदि, अगर -2
11. दुख, दद्र पीड़ा -2
12. उपयोगी अंश प्रयोजनीय अंश -2
13. भीड़, लोगों का जमावड़ा -3
15. किक्रेट की दौड़ -2
16. लीनता का भाव -2
17. महान राजा, महान पुरुष -4
20. महानगर, नगर -3
22. जमाई -3
24. क्रोधावेग -3
25. रागात्मक, आनंद दायीभावी -2
26. तीर रखने का पात्र -4
27. तोता सुआ -2

वर्ग पहेली 258 का हल

1 स	म	ता	■	2 नि	3 य	म	4 सा	5 र
न्म	■	■	6 आ	ग	म	■	7 ग	ह
8 नि	9 जा	10 ग	■	प	■	11 च	र	म
■	12 मु	ख	■	13 द	14 म	क	■	■
15 म	न	■	■	■	16 त	म	■	17 च
ह	■	18 क	19 म	20 ल	■	21 क	न	क
22 ल	23 व	ण	सा	ग	र	■	■	रा
■	ज	■	24 न	भ	■	■	25 म	घा
26 न	न	द	■	27 ग	ग	न	■	ट

.....सदस्यता क्र. .....

पता : .....

.....

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता

ता-था-थेइया

नियम

१. आपको चार से छः पंक्तियों की एक छंदबद्ध या छंदमुक्त तुकांत कविता लिखनी है, जिसके अंत में उपरोक्त शब्द आने चाहिये।
२. समस्या पूर्ति पोस्टकार्ड पर ही लिखकर भेजें।
३. पुरस्कार राशि : प्रथम पुरस्कार १५१ रु., द्वितीय ५१ रु., तृतीय २५ रु.
४. पोस्टकार्ड भेजने की अंतिम तिथि माह की १५ तारीख है।

पंचकल्याणक विधिविधान एवं अन्य धार्मिक कार्यक्रमों हेतु सम्पर्क करें

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर, विद्यासागर नगर इन्दौर
सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008

पंचकल्याण विधि-विधान सामग्री एवं हाथी स्वर्ण रथ आदि एक ही स्थान पर उपलब्ध

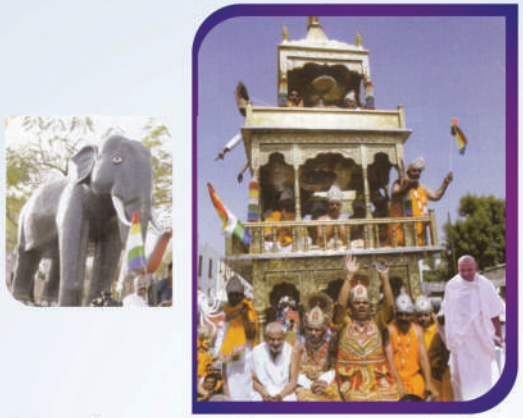

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर में गिफ्ट आयटम उपलब्ध हैं जिनमें घड़ी, शील्ड, पेन, बैग, बेंच, आदि सामग्री तथा पंचकल्याणक, पूजन, विधान, शिलान्यास, गृह प्रवेश, गृह शुद्धि, शिविर आदि की सम्पूर्ण सामग्री एक साथ उपलब्ध रहती है। जैसे स्वर्ण शिला, रजत, ताम्रशिला, कील, कलश, पंचरत्न, स्वस्तिक, हार, मुकुट, कंठी, स्वागत पट्टे, पचरंगी झंडे, अष्ट मंगल द्रव्य, अष्ट प्रातिहार्य, पंचमेरू, पांडुक शिला, कलश, मंगल कलश, शिखर कलश, ध्वज दंड, दीपक बाक्स, दीपक चंदोवा, पलासना, छत्र, चमर, भामंडल, सिंहासन, वंदनवार, धोती-दुपट्टा, सभी विधानों के मांडने धातु में एवं फ्लेक्स में उपलब्ध है।

विभिन्न आकर्षक डिजाइनों में स्वर्ण कलश, रजत कलश (ओरिजनल चाँदी), रत्न कलश आदि जो एक्रेलिक बॉक्स स्टैण्ड के साथ उपलब्ध हैं। जो काले वहीं पड़ेंगे एवं तीन का सेट होने के बावजूद बिखरेंगे नहीं। चातुर्मास कलश का समय पर आर्डर करने पर बॉक्स के नीचे साधु के नाम, कौन सा चातुर्मास, स्थान, आयोजक आदि का नाम भी लिखवाया जा सकता है। तथा इन्दौर से सभी जगह के लिए बस सुविधा उपलब्ध है। जिसके द्वारा आप अपना आर्डर मंगवा सकते हैं।

संस्कार सागर पढ़िए सिर्फ एक Click पर www.sanskarsagar.org

सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008

प्रिंटिंग दिनांक 27/02/2021, पोस्टिंग दिनांक : 03/03/2021